AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

LT Grade Exam 2022

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित

TGT

प्रशिक्षित स्नातक श्रेणी/शिक्षक भर्ती परीक्षा – 2022

BEST PRACTICE SETS

यह प्रैक्टिस सेट विगत वर्ष के पेपर पैटर्न पर आधारित हैं और हर सेट में परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश है।

वाणिज्य

15 सॉल्व्ड प्रैक्टिस सैट्स

एवं 04 सॉल्व्ड पेपर्स

(2021, 2019, 2016, 2015)

Code	Price	Pages
CB553	₹ 199	260

विषय-सूची

Student's Corner

पृष्ठ संख्या

⊙ **Agrawal Examcart Help Centre** iv

⊙ **Best Strategy परीक्षा की तैयारी करने का सही तरीका!** v

⊙ **Current Affairs! की 100% सटीक तैयारी कैसे करें ?** vi

⊙ **प्रशिक्षित स्नातक चयन परीक्षा पाठ्यक्रम** vii

सॉल्व्ड पेपर्स

➢ **प्रशिक्षित स्नातक चयन परीक्षा, 2021 वाणिज्य हल प्रश्न-पत्र** 1-14

➢ **प्रशिक्षित स्नातक चयन परीक्षा, 2016 वाणिज्य हल प्रश्न-पत्र परीक्षा तिथि : 1 मार्च 2019** 1-20

➢ **प्रशिक्षित स्नातक चयन परीक्षा, 2013 वाणिज्य हल प्रश्न-पत्र परीक्षा तिथि : 22 फरवरी 2015** 21-37

➢ **प्रशिक्षित स्नातक चयन परीक्षा, 2011 वाणिज्य हल प्रश्न-पत्र परीक्षा तिथि : 15 जून 2016** 38-53

प्रैक्टिस सेट्स

➢ **प्रैक्टिस सेट–1** 54-67

➢ **प्रैक्टिस सेट–2** 68-81

➢ **प्रैक्टिस सेट–3** 82-95

➢ **प्रैक्टिस सेट–4** 96-110

➢ **प्रैक्टिस सेट–5** 111-124

➢ **प्रैक्टिस सेट–6** 125-138

➢ **प्रैक्टिस सेट–7** 139-152

➢ **प्रैक्टिस सेट–8** 153-166

➢ **प्रैक्टिस सेट–9** 167-179

➢ **प्रैक्टिस सेट–10** 180-192

➢ **प्रैक्टिस सेट–11** 193-206

➢ **प्रैक्टिस सेट–12** 207-220

➢ **प्रैक्टिस सेट–13** 221-232

➢ **प्रैक्टिस सेट–14** 233-245

➢ **प्रैक्टिस सेट–15** 246-260

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक चयन परीक्षा, 2013
(वाणिज्य)
हल प्रश्न-पत्र

परीक्षा तिथि : 22 फरवरी, 2015

1. भारत में एक रुपये का नोट छापने का दायित्व होता है–
(A) रिजर्व बैंक के निर्गमन विभाग का
(B) भारत सरकार का
(C) स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया का
(D) रिजर्व बैंक के बैंकिंग विभाग का

1. (B) देश में नोट निर्गमन का एकाधिकार केंद्रीय बैंक के पास रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया के है, परन्तु एक रुपये के नोट छापने का अधिकार भारत सरकार के वित्त मंत्रालय का होता है, जिस पर वित्त सचिव के हस्ताक्षर होते हैं।

2. एक साझेदारी फर्म के द्वारा वसूली खाता तैयार किया जाता है–
(A) एक साझेदार के अवकाश प्राप्ति पर
(B) एक साझेदार की मृत्यु पर
(C) एक साझेदार के प्रवेश के समय
(D) फर्म के विघटन के समय

2. (D) फर्म के विघटन पर लाभ-हानि निकालने के लिए Realisation A/c (वसूली खाता) खोला जाता है। यह एक नाममात्र का खाता है। फर्म का विघटन होने पर उसकी सम्पत्तियों को बेचकर दायित्व का भुगतान किया जाता है।

3. किसी स्पष्ट समझौते के अभाव में, साझेदार को प्राप्त होता है–
(A) लाभ हानि में बराबर हिस्सा
(B) पूँजी का 12% ब्याज
(C) ऋण पर 18% ब्याज
(D) उपर्युक्त सभी

3. (A) साझेदारी संलेख की अनुपस्थिति में विवाद हो सकता है अत: सभी विवादों का निपटारा साझेदारी अधिनियम 1932 की धाराओं 12 से 17 तक में की गयी व्यवस्था के अनुरूप किया जाता है जो निम्नलिखित हैं–
- प्रत्येक साझेदार को लाभ-हानि समान अनुपात में प्राप्त करने का अधिकार होगा।
- साझेदारों की पूँजी पर इन्हें किसी प्रकार का ब्याज प्राप्त करने का अधिकार नहीं होगा।
- साझेदारों द्वारा फर्म को दिए गए ऋण पर 6% वार्षिक दर से ब्याज प्राप्त करने का अधिकार होगा।

4. 04 और 09 का गुणोत्तर माध्य होगा–
(A) 8 (B) 5
(C) 0.6 (D) 6.5

4. (C) दो संख्या 'a' तथा 'b' का गुणोत्तर माध्य

$$G = \sqrt{a \times b}$$

अत: 09 और 04 का गुणोत्तर माध्य

$$G = \sqrt{.09 \times .04} = \sqrt{\frac{9}{100} \times \frac{4}{100}}$$

$$= \sqrt{\frac{36}{100} \times 100} = \frac{6}{100} = 0.6$$

5. निम्नलिखित में से कौन सा लक्षण उद्यमी में होना चाहिए ?
(A) नवाचार (B) जोखिम वहन
(C) पहल करना (D) उपर्युक्त सभी

5. (D) किसी उद्यमी के अन्तर्गत निम्नलिखित लक्षण होना चाहिए–
- नवाचार
- जोखिम वहन
- पहल करना।

6. एक प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी में सदस्यों की न्यूनतम संख्या होती है–
(A) 1 (B) 2
(C) 3 (D) 7

6. (B) कम्पनी अधिनियम, 1956 के अनुसार प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी में सदस्यों की न्यूनतम संख्या 2 तथा अधिकतम संख्या 50 होती है। पब्लिक कम्पनी में सदस्यों की न्यूनतम संख्या 7 तथा अधिकतम संख्या की कोई सीमा नहीं है।

7. सूची-I का मिलान सूची-II से कीजिए और दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए–

सूची-I		**सूची-II**
(P) साझेदार का ऋण	(i)	लाभ-हानि खाते का डेबिट शेष
(Q) साझेदार की मृत्यु	(ii)	6% ब्याज
(R) व्यवसाय में हानि	(iii)	संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी
(S) पुनर्मूल्यन खाता	(iv)	लाभ-हानि समायोजन खाता

कूट :

	P	Q	R	S
(A)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(B)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(C)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(D)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)

7. (A) सही मिलान है–

सूची-I		**सूची-II**
(P) साझेदार का ऋण	(ii)	6% ब्याज
(Q) साझेदार की मृत्यु	(iii)	संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी
(R) व्यवसाय में हानि	(i)	लाभ-हानि खाते का डेबिट शेष
(S) पुनर्मूल्यन खाता	(iv)	लाभ-हानि समायोजन खाता

8. सार्वजनिक व्यय के द्वारा आय का वितरण करना है–
(A) औद्योगिक विकास
(B) कृषि का विकास
(C) सामाजिक सेवाएँ
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

8. (C) सार्वजनिक व्यय के द्वारा सरकार आय का वितरण सामाजिक सेवाओं हेतु करती है। जैसे–स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा सेवा, परिवहन सेवा आदि।

9. प्रबन्धकीय नियंत्रण किया जाता है–
(A) निम्न स्तरीय प्रबन्धकों द्वारा
(B) मध्यम स्तरीय प्रबन्धकों द्वारा
(C) उच्च स्तरीय प्रबन्धकों द्वारा
(D) सभी स्तरीय प्रबन्धकों द्वारा

9. (D) किसी भी व्यापारिक संगठन या अन्य संगठन को प्रबंध के स्तर पर निम्न तीन वर्गों में बाँटकर किया जाता है–
- उच्च स्तरीय प्रबंध तंत्र
- मध्यम स्तरीय प्रबन्ध तंत्र तथा
- निम्न स्तरीय प्रबंध तंत्र

संगठन के प्रमुख विषयों पर नियन्त्रण उच्च स्तरीय प्रबन्ध तंत्र का होता है, परन्तु हर स्तर पर निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु उपर्युक्त तीनों स्तरों पर प्रबन्धकीय नियन्त्रण की आवश्यकता होती है।

10. सकल लाभ या हानि की राशि क्या होगी, जब विक्रय की लागत ` 79,000, विक्रय ` 1,10,000, क्रय मूल्य ` 30,000 हो–
(A) ` 80,000 (लाभ)
(B) ` 31,000 (लाभ)
(C) ` 49,000 (लाभ)
(D) ` 1,000 (हानि)

10. (B) विक्रय = विक्रय की लागत ± लाभ/हानि
1,10,000 = 79,000 + लाभ
31,000 = लाभ

11. यदि समता अंशों को जब्त किया जाता है, तो पूँजी खाते को डेबिट किया जाता है–
(A) अंशों के अंकित मूल्य से
(B) अंशों की प्रदत्त राशि से
(C) अंशों की याचित राशि से
(D) अंशों की अयाचित राशि से

11. (C) अंशों की याचित राशि का कुछ भाग अगर जिस अंशधारियों द्वारा नहीं दिया जाता है तो कम्पनी उनके अंशों को जब्त कर लेती है तथा उनके पूँजी खाते को अंशों को याचित राशि से डेबिट कर देती है। इसकी प्रविष्टि निम्न है–
Share capital A/c Dr.
To unpaid Call A/c
To forfeiture A/c

12. लाभों के पुनर्निवेश का आशय है–
(A) व्यवसाय में आय का पुनर्निवेश
(B) संचय में हस्तांतरण
(C) लाभांश का भुगतान न करना
(D) अवैधानिक आय का अर्जन

12. (A) कभी-कभी कम्पनी को एक औसत लाभ से ज्यादा लाभ होता है या कम्पनी में निवेश की आवश्यकता होती है तो कम्पनी के लाभ को लाभांश में न देकर उसे व्यवसाय में पुनर्निवेश कर देते हैं।

13. FIFO और LIFO मूल्यांकन विधियाँ हैं–
(A) स्थाई सम्पत्ति
(B) विनियोगों की
(C) निर्गमित कच्चे सामग्री की
(D) इनमें से सभी की

13. (C) FIFO (First in first out) तथा LIFO (Last in first out) यह दोनों विधियाँ निर्गमित कच्चे सामग्री की मूल्यांकन विधियाँ है। FIFO विधि के अन्तर्गत जो सामग्री पहले आती है उसे पहले उत्पादन में निर्गमित किया जाता है तथा LIFO में जो सामग्री बाद में आती है उसे पहले उत्पादन के लिए निर्गमित किया जाता है।

14. खातों का सम्बन्ध आय, व्यय, लाभ और हानि से है, तो उसे कहते हैं–
(A) वास्तविक खाता
(B) नाममात्र खाता
(C) व्यक्तिगत खाता
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

14. (B) किसी भी व्यवसाय या संस्था के निम्न तीन खाते होते हैं–
- व्यक्तिगत खाता (Personal A/c)
- वास्तविक खाता (Real A/c) तथा

नाममात्र का अवास्तविक खाता (Nominal A/c) नाममात्र खाते का सम्बन्ध आय-व्यय तथा लाभ और हानि से होता है।

15. प्रमाणन के अंतर्गत जाँच की जाती है–
(A) प्रारंभिक लेखा पुस्तकों की
(B) अंतिम लेखा पुस्तकों की
(C) आर्थिक चिट्ठा की
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

15. (A) अंकेक्षण हेतु हिसाब-किताब की पुस्तकों के लोगों को प्रमाणित करना विशेष महत्वपूर्ण कार्य होता है। एक व्यापारिक संस्था का लेखपाल प्रारम्भिक लेखों की पुस्तकों में प्रविष्टियाँ करता है। प्रश्न है कि प्रविष्टियाँ किस आधार पर की गयी हैं और उनके लेखपाल के पास संस्था से सम्बन्धित क्या प्रमाण पत्र हैं।

16. 13, 8, 11, 6, 4, 15, 2, 18 समंकों की माध्यिका होगी –
(A) 5 (B) 8
(C) 11 (D) 9.5

16. (D) समंकों को आरोही क्रम में रखने पर
2, 4, 6, 8, 11, 13, 15, 18
चूँकि समंकों की संख्या सम है अत: माध्यिका

$$= \frac{8+1}{2} = 4.5^{th}$$

$$= \frac{4^{th} \text{ पद} + 5^{th} \text{ पद}}{2}$$

$$= \frac{8+11}{2} = \frac{19}{2} = 9.5$$

17. A और B साझेदार हैं। A की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गयी है, तो–
(A) फर्म खत्म हो जाएगी
(B) साझेदारी समाप्त हो जाएगी
(C) फर्म और साझेदारी दोनों समाप्त हो जाएंगी
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

17. (C) साझेदार की मृत्यु हो जाने पर वही स्थिति हो जाती है जो साझेदार के अवकाश ग्रहण पर होती है अर्थात् साझेदारों के मध्य साझेदारी समाप्त हो जाती है, परन्तु जब साझेदारों में किसी प्रकार का समझौता न हुआ हो तो किसी साझेदार की मृत्यु होने पर या दिवालिया होने पर फर्म और साझेदारी दोनों समाप्त हो जाती है।

18. उत्पादन के कारकों में सबसे अधिक नाशवान कौन होता है ?
(A) भूमि (B) श्रम
(C) पूँजी (D) उद्यम

18. (B) उत्पादन के कारक निम्न हैं–
- भूमि
- श्रम
- पूँजी
- उद्यम

श्रम सर्वाधिक नाशवान है तथा भूमि न्यूनतम नाशवान है।

19. सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों का स्वामित्व किसका होता है ?
(A) निजी (B) सरकारी
(C) सहकारी (D) संयुक्त

19. (B) सरकार भी एक साहसी की भाँति उद्योग तथा व्यवसायों की स्थापना करती है। अत: सार्वजनिक उपक्रम के अन्तर्गत वे व्यवसाय आते हैं, जिनका स्वामित्व तथा प्रबन्ध दोनों सरकार के अधीन होता है।

20. निम्नलिखित में से कौन-सा बैंक भारत का केन्द्रीय बैंक है ?
(A) सेंट्रल बैंक ऑफ इण्डिया
(B) रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया
(C) स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
(D) इण्डियन बैंक

20. (B) भारत का केन्द्रीय बैंक रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया है। 1 अप्रैल, 1935 को ` 5 करोड़ की अधिकृत पूँजी के साथ रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया (R.B.I.) का गठन किया गया, जिसका 1 जनवरी, 1949 को राष्ट्रीयकरण कर दिया गया।

रिजर्व के प्रमुख कार्य

1. मौद्रिक प्राधिकारी (Monetary Authority)

- मौद्रिक नीति तैयार कर उसका कार्यान्वयन और निगरानी करता है।
- **उद्देश्य**—विकास के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए मूल्य स्थिरता बनाए रखना।

  रिजर्व बैंक यह कार्य वित्तीय पर्यवेक्षण बोर्ड (Board for Financial Supervision-BFS) के दिशा-निर्देशों के अनुसार करता है। इस बोर्ड की स्थापना भारतीय रिजर्व बैंक के केंद्रीय निदेशक बोर्ड की एक समिति के रूप में नवंबर 1994 में की गई थी।

2. वित्तीय प्रणाली का विनियामक और पर्यवेक्षक (Regulator and Supervisor of the Financial System)

- बैंकिंग परिचालन के लिये विस्तृत मानदंड निर्धारित करता है जिसके अंतर्गत देश की बैंकिंग और वित्तीय प्रणाली काम करती है।
- **उद्देश्य**—प्रणाली में लोगों का विश्वास बनाए रखना, जमाकर्ताओं के हितों की रक्षा करना और आम जनता को किफायती बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध कराना।

3. विदेशी मुद्रा प्रबंधक (Manager of Foreign Exchange)

- विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम, 1999 का प्रबंध करता है।
- **उद्देश्य**—विदेश व्यापार और भुगतान को सुविधाजनक बनाना एवं भारत में विदेशी मुद्रा बाजार का क्रमिक विकास करना तथा उसे बनाए रखना।

4. मुद्रा जारीकर्ता (Issuer of Currency)

- यह करेंसी जारी करता है और उसका विनिमय करता है अथवा परिचालन के योग्य नहीं रहने पर करेंसी और सिक्कों को नष्ट करता है।
- **उद्देश्य**—आम जनता को अच्छी गुणवत्ता वाले करेंसी नोटों और सिक्कों की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध कराना।

विकासात्मक भूमिका

- राष्ट्रीय उद्देश्यों की सहायता के लिये व्यापक स्तर पर प्रोत्साहक कार्य करना।

संबंधित कार्य

- **सरकार का बैंकर**—केंद्र और राज्य सरकारों के लिये यह व्यापारी बैंक की भूमिका अदा करता है। उनके बैंकर का कार्य भी करता है।
- **बैंकों के लिये बैंकर**—सभी अनुसूचित बैंकों के बैंक खाते रखता है।

21. सार्वजनिक पूँजी कम्पनी के अंश किसके द्वारा आवंटित किए जाते हैं ?

(A) अंशधारियों द्वारा

(B) संचालक मण्डल द्वारा

(C) प्रबन्धक संचालक द्वारा

(D) सरकार द्वारा

21. (B) सार्वजनिक पूँजी कम्पनी के अंश संचालक मण्डल द्वारा आवंटित किए जाते हैं। आवंटन करते समय संचालक मण्डल को निम्न परिस्थिति का सामना करना पड़ता है—

- जितनी पूँजी का निर्गमन किया गया, केवल उतनी ही पूँजी हेतु आवेदन आये हो तो संचालक मण्डल द्वारा सभी आवेदकों को अंशों का आवंटन हो जाता है।
- यदि आवेदन पत्र ज्यादा आये हों तो कुछ आवेदन पत्रों को अस्वीकार करना पड़ता है और प्राप्त राशि लौटानी पड़ती है।
- यदि विवरण-पत्रिका जारी करने के 120 दिन के अन्दर न्यूनतम आवेदित पूँजी के बराबर अंशों हेतु आवेदन पत्र न प्राप्त हुए हों तो संचालक अंशों का आवंटन नहीं कर सकते और विवरण-पत्रिका जारी करने की तिथि से 130 दिन के अन्दर सभी आवेदकों को रकम लौटा देनी पड़ती है। यदि वह रकम इस तिथि के अन्दर नहीं लौटा दी जाती तो 130वें दिन के उपरांत अदत्त राशि पर 6% वार्षिक ब्याज देना पड़ता है।

22. स्कन्ध विपणि एक स्थान है जहाँ—

(A) अनाज खरीदा बेचा जाता है

(B) सूचित अंश एवं प्रतिभूति खरीदी या बेची जाती है

(C) सोने चाँदी का क्रय-विक्रय किया जाता है

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

22. (B) स्कन्ध विपणि एक स्थान है जहाँ द्वितीयक सूची अंश एवं प्रतिभूति क्रय या विक्रय की जाती है।

23. 'बुरी मुद्रा अच्छी मुद्रा को चलन से बाहर कर देती है' यह कथन किसका है ?

(A) रॉबिन्स (B) ग्रेशम

(C) जे.के. मेहता (D) माल्थस

23. (B) ''बुरी मुद्रा अच्छी मुद्रा को चलन से बाहर कर देती है'' यह कथन ग्रेशम का है। ग्रेशम, जिनका पूरा नाम थॉमस ग्रेशम (1519-1579 ई.) था, विशिष्ट आर्थिक सिद्धांत (सन् 1560 ई.) के उद्भावक माने जाते हैं। वे सुप्रसिद्ध आर्थिक सलाहकार, महारानी एलिजाबेथ के प्रथम मुद्रानियंता तथा ब्रिटिश रॉयल एक्सचेंज के आदि संस्थापक थे। अच्छी मुद्रा संग्रह के लिये उपयुक्त होने, धातु के रूप में विक्रय द्वारा विशेष लाभार्जन के निमित्त देश-विदेश में चोरबाजारी के लिये अधिक उपयुक्त होने तथा बुरी मुद्रा की बुराइयों के कारण अपने पास न रखने की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति के कारण अपने मूल कार्य क्रय-विक्रय के साधन में प्रयुक्त होने की अपेक्षा उपर्युक्त कार्यों के लिये प्रचलन से बाहर कर दी जाती है। सामान्यत: एक धातुमान में कम घिसे सिक्के, द्विधातु एवं बहु धातुमान में धात्विक दृष्टि से अपेक्षाकृत मूल्यवान, कागजी मान से परिवर्त्य मुद्रा और धात्विक एवं कागजी सहमान में बाजार की दृष्टि से आंतरिक या धात्विक दृष्टि से मूल्यवान तथा सममूल्य की होते हुए भी नवीन तथा कलात्मक मुद्रा अच्छी समझी जाती है। इस सिद्धांत के प्रयोग की सीमा का निर्धारण मुद्रा की माँग, मुद्रा के प्रति विश्वास, मौद्रिक विधान तथा साख व्यवस्था द्वारा होती है। इन दृष्टियों से यदि मुद्रा की पूर्ति माँग से अधिक न हो, बुरी मुद्रा इतनी बुरी न हो गई हो कि उससे जनता का विश्वास ही उठ गया हो तथा उसका प्रचलन विधान सम्मत होते हुए भी अग्राह्य हो गया हो, और जब प्रचलन में कोई भी मुद्रा प्रामाणिक नहीं रहती या एक असीमित और अन्य मुद्राएँ सीमित विधिग्राह्य होती हैं तथा साख व्यवस्था यदि ऐसी रहती है कि किसी मुद्रा के प्रचलन से बाहर जाने पर मूल्य स्तर प्रभावित नहीं होता तथा मुद्रा बाजार का सुव्यवस्थित नियंत्रण रहता है तो यह सिद्धांत लागू नहीं हो पाता।

24. निम्नलिखित में से कौन केन्द्रीय प्रवृत्ति की माप नहीं है ?

(A) बहुलक (B) सह-सम्बन्ध

(C) माध्य (D) माध्यिका

24. (B) केन्द्रीय प्रवृत्ति की माप निम्न है–
- माध्य जैसे समान्तर माध्य, गुणोत्तर माध्य तथा हरात्मक माध्य
- माध्यिका तथा
- बहुलक, भूयिष्टक

25. एक सार्वजनिक कम्पनी अपना व्यवसाय प्रारम्भ कर सकती है–
(A) समामेलन प्रमाण-पत्र प्राप्त किए बिना
(B) समामेलन प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के पश्चात्
(C) व्यवसाय प्रारम्भ करने का प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के पश्चात्
(D) अपनी इच्छानुसार

25. (C) एक सार्वजनिक कम्पनी अपना व्यवसाय तभी प्राप्त कर सकती है जब उसे व्यवसाय आरम्भ करने का प्रमाण-पत्र प्राप्त हो जाता है, परन्तु प्राइवेट कम्पनी समामेलन प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के पश्चात् अपना व्यवसाय प्रारम्भ कर सकती है।

26. निम्नलिखित में से कौन-सा कार्य केन्द्रीय बैंक का नहीं है–
(A) विदेशी विनिमय कोषों का संरक्षक
(B) नोट निर्गमन का एकाधिकार
(C) साख निर्माण
(D) अंतिम ऋणदाता

26. (C) केन्द्रीय बैंक (R.B.I.) के निम्न कार्य हैं–
- नोट निर्गमन का एकाधिकार
- सरकार का बैंकर, एजेंट एवं सलाहकार
- बैंकों का बैंक
- विदेशी विनिमय कोषों का संरक्षक
- व्यापारिक बैंक हेतु अंतिम ऋणदाता
- समाशोधन एवं स्थानान्तरण सुविधा
- साख नियन्त्रण

27. इनमें से कौन-सा चालू दायित्व नहीं है ?
(A) बैंक ओवरड्राफ्ट (B) ऋण-पत्र
(C) अदत्त वेतन (D) देयबिल

27. (B) चालू दायित्व वे दायित्व होते हैं जिनकी भुगतान की अवधि सामान्यतया कम होती है। ये दायित्व निम्न हैं–
- बैंक ओवरड्रॉफ्ट (बैंक अधिविकर्ष)
- अदत्त वेतन
- देयबिल
- लेनदार (creditor) इत्यादि, ऋणपत्र तथा दीर्घकालीन ऋण दीर्घ अवधि के दायित्व होते हैं।

28. सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम स्थापित करते समय क्या उद्देश्य होता है ?
(A) सामाजिक कल्याण
(B) राष्ट्रीय हित
(C) श्रम कल्याण
(D) उपर्युक्त सभी

28. (D) सार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत स्थापित उपक्रमों का नियन्त्रण एवं प्रबन्धन सरकार के हाथ में होता है। तथा सरकार का प्रमुख उद्देश्य होता है कल्याणकारी राज्य की स्थापना करना अत: इन उपक्रमों का निम्न उद्देश्य होता है–
(1) सामाजिक कल्याण
(2) राष्ट्रीयहित तथा
(3) श्रमिक कल्याण

29. सार्वजनिक कम्पनी के संचालकों को संयुक्त रूप से कहते हैं–
(A) प्रबन्धन समिति (B) वैधानिक समिति
(C) संचालक मण्डल (D) इनमें से कोई नहीं

29. (C) सार्वजनिक कम्पनी के संचालकों को संयुक्त रूप से संचालक मंडल कहते हैं।

30. एक सामान्य व्यवसाय हेतु एक साझेदारी फर्म में साझेदारों की न्यूनतम और अधिकतम संख्या होती है–
(A) 2 एवं 7 (B) 2 एवं 10
(C) 7 एवं 50 (D) 2 एवं 20

30. (D) एक सामान्य व्यवसाय हेतु साझेदारी फर्म में साझेदारों की न्यूनतम संख्या 2 होनी चाहिए। सामान्य व्यापार हेतु साझेदारों की अधिकतम संख्या 20 तथा बैंकिंग क्षेत्र में कार्य करने वाली फर्मों में साझेदारों की अधिकतम संख्या 10 होनी चाहिए।

31. रिकार्डो प्रसिद्ध हैं–
(A) जनसंख्या सिद्धांत हेतु
(B) लागत सिद्धांत हेतु
(C) लगान सिद्धांत हेतु
(D) लाभ सिद्धांत हेतु

31. (C) रिकार्डो लगान सिद्धांत हेतु प्रसिद्ध है। डेविड रिकार्डो के अनुसार, ''लगान भूमि की उपज का वह भाग है जो भू-स्वामी को भूमि की मौलिक तथा अविनाशी शक्तियों के प्रयोग हेतु दिया जाता है।''

रिकार्डो का लगान सिद्धान्त या लगान का परम्परावादी सिद्धान्त

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डेविड रिकार्डो ने अपनी पुस्तक "Principles of Political Economy and Taxation" (1817) में सबसे पहले लगान के सम्बन्ध में एक व्यवस्थित (Systematic) सिद्धान्त दिया था। रिकार्डो से पहले फिज्योक्रेटस तथा एडम स्मिथ लगान को प्रकृति की उदारता (Bounty) का परिणाम मानते थे। उनके अनुसार भूमि पर खेती करने हेतु जितना श्रम लगाया जाता है, प्रकृति के सहयोग के फलस्वरूप उत्पादन उससे कई गुणा अधिक होता है। यह अधिक उत्पादन शुद्ध उत्पादन अथवा लगान कहलाता है। परन्तु रिकार्डो के अनुसार लगान प्रकृति की कन्जूसी (Niggardliness) का परिणाम है। परम्परावादी अर्थशास्त्री जेम्स एण्डरसन ने रिकार्डो से पहले यह विचार प्रकट किया था कि लगान इसलिए उत्पन्न होता है क्योंकि भूमि की उपजाऊ शक्ति (Fertility) में अन्तर होता है। कृषि उपज या उत्पादन बढ़ाने हेतु जब विस्तृत खेती की जाती है तो घटिया किस्म की भूमि पर भी खेती करनी पड़ती है। इसके फलस्वरूप अपेक्षाकृत बढ़िया भूमि पर खेती करने से जो अधिक उपज उत्पन्न होती है, वह लगान कहलाएगी। माल्थस के अनुसार, भूमि के एक निश्चित क्षेत्र पर गहन खेती करके उपज बढ़ाई जा सकती है, परन्तु घटते प्रतिफल के नियम (Law of Diminishing Returns) के अनुसार जैसे-जैसे श्रम तथा पूँजी की अधिक मात्रा का प्रयोग किया जाएगा, सीमान्त उत्पादकता कम होती जाएगी तथा पहले वाली इकाइयों से सीमान्त इकाई की अपेक्षा जो अधिक उपज होगी वह लगान कहलाएगी। रिकार्डो ने अपने लगान के सिद्धान्त में एण्डरसन तथा माल्थस दोनों के विचारों का समन्वय किया है।

रिकार्डो का लगान सिद्धान्त इन मान्यताओं पर आधारित है-

1. भूमि की उर्वरता (Fertility) में अन्तर है। कुछ भूमि बढ़िया अर्थात् उपजाऊ होती है, परन्तु कुछ भूमि घटिया अथवा कम उपजाऊ होती है।
2. समस्त अर्थव्यवस्था हेतु भूमि की पूर्ति स्थिर (Fixed) होती है, उसे बढ़ाया या घटाया नहीं जा सकता।
3. भूमि का केवल एक ही उपयोग होता है अर्थात् उस पर खेती करना। भूमि के वैकल्पिक उपयोग (Alternative Uses) नहीं होते।
4. वस्तु बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता पाई जाती है, इसलिए सारे बाजार में एक प्रकार का कृषि उत्पादन एक ही कीमत पर बिकता है।
5. कृषि के क्षेत्र में घटते प्रतिफल का नियम लागू होता है।

6. अर्थव्यवस्था में सीमान्त भूमि (Marginal Land) अर्थात् लगान रहित भूमि (No Rent Land) भी पाई जाती है।
7. भमि पर खेती का कार्य, भूमि की उपजाऊ शक्ति के क्रम के अनुसार किया जाता है। किसान अधिक उपजाऊ भूमि पर, कम उपजाऊ भूमि की अपेक्षा पहले खेती करते हैं।
8. भूमि की उपजाऊ शक्ति मौलिक (Original) तथा अविनाशी (Indestructible) है।
9. जनसंख्या में वृद्धि होने से कृषि पदार्थों की माँग बढ़ती है।
10. कृषि उपज की लागत श्रम की मात्रा पर निर्भर करती है। सब प्रकार की भूमि के निश्चित क्षेत्रफल पर किसी वस्तु का उत्पादन करने हेतु श्रम की एक जैसी संख्या लगानी पड़ती है। अत: उत्पादन लागत एक जैसी होती है, परन्तु उत्पादन की मात्रा विभिन्न होती है।

32. जब सिक्के की धातु का मूल्य उसके अंकित मूल्य से कम होता है, तो उसे कहा जाता है–
(A) मानक मुद्रा (B) सांकेतिक मुद्रा
(C) प्रादिष्ट मुद्रा (D) पत्र मुद्रा

32. (B) जब सिक्के की धातु का मूल्य उसके अंकित मूल्य से कम होता है तो उसे सांकेतिक मुद्रा कहते हैं।

33. ख्याति है–
(A) अदृश्य सम्पत्ति (B) चालू सम्पत्ति
(C) स्थायी सम्पत्ति (D) व्यक्तिगत सम्पत्ति

33. (A) ख्याति एक अदृश्य सम्पत्ति है। अदृश्य सम्पत्ति वह सम्पत्ति होती है जिसका एक मौद्रिक मूल्य होता है, परन्तु उसे न देखा जा सकता है और न ही स्पर्श किया जा सकता है। अदृश्य सम्पत्ति के उदाहरण निम्न हैं–
- ख्याति
- कॉपीराइट
- ट्रेड मार्क
- अधिकार शुल्क आदि।

जिस प्रकार व्यवसाय में भूमि, भवन, मशीन, प्लाण्ट आदि सम्पत्तियाँ होती हैं, उसी प्रकार ख्याति भी एक सम्पत्ति है। जिस प्रकार अन्य सम्पत्तियाँ बेची जा सकती हैं, उसी प्रकार व्यवसाय को बेचते समय इसकी ख्याति का भी मूल्य वसूल किया जाता है। इतना अवश्य है कि अन्य सम्पत्तियाँ दिखाई देती हैं, परन्तु ख्याति अदृश्य सम्पत्ति है, जिसका कोई स्पष्ट रूप प्रकट नहीं होता, इसलिए इसे अमूर्त सम्पत्ति भी कहा जाता है। व्यवसाय की सभी स्थायी सम्पत्तियों को अलग से बेचा जा सकता है, परन्तु ख्याति को अलग से बेचना सम्भव नहीं। ऐसा नहीं हो सकता कि केवल ख्याति बेच दी जाए और बाकी सभी सम्पत्तियों या व्यवसाय को न बेचा जाए। यही कारण है कि ख्याति का कोई पृथक अस्तित्व नहीं है, यद्यपि व्यवसाय के साथ इसका महत्वपूर्ण अस्तित्व है। कभी-कभी यह आवश्यक हो जाता है कि व्यापार में ख्याति खाता खोला जाए, लेकिन इस खाते को व्यापार के लाभ से शीघ्र बन्द कर देना चाहिए, क्योंकि चिट्ठे में ख्याति दिखाने का कोई औचित्य नहीं होता है, क्योंकि इसके कारण सम्पत्ति पक्ष का योग अनावश्यक रूप से बढ़ जाता है, जिसके कारण बैंक व अन्य संस्थाएँ भी ऋण देते समय ख्याति के मूल्य को सम्पत्तियों में नहीं जोड़ते हैं। इसलिए इसे यथाशीघ्र अपलिखित कर देना चाहिए।

34. निम्नलिखित में से कौन एक कम्पनी का सबसे महत्वपूर्ण प्रलेख होता है ?
(A) पार्षद् सीमानियम (B) पार्षद् अन्तर्नियम
(C) प्रविवरण (D) अंकेक्षक रिपोर्ट

34. (A) किसी कम्पनी के दो महत्वपूर्ण निम्न प्रलेख होते हैं–
(1) पार्षद् सीमानियम तथा (2) पार्षद् अन्तर्नियम परन्तु पार्षदसीमानियम कम्पनी का सबसे महत्वपूर्ण प्रलेख होता है। इसे कंपनी का संविधान भी कहा जाता है। यह छ: खण्डों में विभाजित होता है। कोई भी कम्पनी पार्षद् सीमानियम के परे किसी भी प्रकार का कोई अनुबन्ध नहीं कर सकती।

35. इनमें से कौन-सा समीकरण सही नहीं है ?
(A) क्रय + प्रारंभिक स्टॉक - विक्रय की लागत = अंतिम स्टॉक
(B) प्रारंभिक स्टॉक + क्रय - अंतिम स्टॉक = विक्रय की लागत
(C) अंतिम स्टॉक + विक्रय की लागत - क्रय = प्रारंभिक स्टॉक
(D) विक्रय की लागत - अंतिम स्टॉक - क्रय = प्रारंभिक स्टॉक

35. (D) विक्रय की लागत = प्रारम्भिक स्टॉक + क्रय – अंतिम स्टॉक। अत: इस आधार पर निम्न समीकरण असत्य है। बिक्री की लागत – अंतिम स्टॉक – क्रय = प्रारम्भिक स्टॉक

36. सामान्यतया देश का आम बजट संसद में प्रस्तुत किया जाता है इनके द्वारा–
(A) प्रधानमंत्री (B) अध्यक्ष द्वारा
(C) वित्त मंत्री द्वारा (D) राष्ट्रपति द्वारा

36. (C) देश में हर साल सामान्यतया फरवरी के माह में आने वाले वित्तीय वर्ष 1 अप्रैल से अगले साल 31 मार्च हेतु सरकार द्वारा बजट संसद में प्रस्तुत किया जाता है। यह बजट सरकार के वित्त मंत्री द्वारा संसद में प्रस्तुत किया जाता है।

बजट के प्रकारों का वर्णन निम्नलिखित है–

1. **सन्तुलित बजट**–यदि बजट में आगम (आय) और व्ययों की राशि समान होती है तो उसे सन्तुलित बजट कहा जाता है। यह एक आदर्श व्यवस्था होती है। वर्तमान समय में सरकार चाहते हुए भी सन्तुलित बजटों को नहीं बना सकती हैं, क्योंकि सार्वजनिक व्ययों में वृद्धि आय की अपेक्षा अधिक होती है। इस प्रकार सरकार द्वारा बढ़ते हुए व्ययों पर रोक लगाते हुए केवल उतना ही धन व्यय करने की नीति को अपनाया जाय जितनी उसकी कुल आय होती है।
2. **असन्तुलित बजट**–असन्तुलित बजट से आशय ऐसे बजट से है, जिसमें सरकार की आगम एवं व्ययों में समानता नहीं होती। असन्तुलित बजट दो प्रकार के हो सकते हैं–
   - **घाटे का बजट**–जैसा कि नाम से स्पष्ट है, जब सरकार आय की तुलना में व्यय अधिक करने लगती है तो उसे घाटे का बजट कहेंगे। वर्तमान समय में घाटे के ही बजटों का अधिक प्रचलन है। इस बजट में कुल माँग में वृद्धि करके देश में आर्थिक क्रियाओं को ऊँचा रखने के उद्देश्य से सरकारी करों से प्राप्त आय की तुलना में अधिक व्यय किया जाता है।
   - **आधिक्य का बजट**–आधिक्य का बजट घाटे के बजट के ठीक विपरीत है। जब कभी सरकार के बजटों में आय की अपेक्षा व्यय कम किया जाता है तो इस प्रकार के बजटों को आधिक्य के बजट कहा जाता है। वर्तमान समय में इस प्रकार के बजटों को नहीं बनाया जा रहा है।
3. **सामान्य बजट**–जिन बजटों का निर्माण सामान्य परिस्थितियों में वार्षिक आधार पर किया जाता है, उन्हें सामान्य बजट कहा जाता है, परन्तु इन बजटों में सरकार की समस्त क्रियाओं का सही-सही विवरण नहीं होता है।

4. पूँजीगत बजट—पूँजीगत बजटों के अन्तर्गत केवल पूँजीगत मदों को ही सम्मिलित किया जाता है। इस बजट को सामान्य बजटों से अलग रखा जाता है तथा इस बजट के व्यय की मदों को सार्वजनिक ऋणों द्वारा पूरा किया जाता है।

5. अन्तरिम बजट—जब सरकार किसी विशेष परिस्थितिवश पूर्ण वर्ष हेतु आय-व्यय के अनुमान तैयार करने में असमर्थ रहती है तो वर्ष के कुछ महीनों हेतु आवश्यक आर्थिक व्यवस्था बनाए रखने के लिये आय-व्यय के प्रावधान किए जाते हैं।

37. बैंक दर निर्धारित की जाती है—
(A) रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया
(B) भारत सरकार
(C) राज्य सरकार
(D) उपर्युक्त सभी

37. (A) बैंक दर, रेपो दर के आधार पर निर्धारित होती है। रेपो दर वह दर है जिस पर वाणिज्यिक बैंक रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया से ऋण लेती है। अब बैंक दर, रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया द्वारा निर्धारित की जाता है।

38. एक सार्वजनिक कम्पनी में अंशधारियों का दायित्व सीमित होता है—
(A) अंशों के चुकता मूल्य तक
(B) अंशों के अंकित मूल्य तक
(C) अंशों के बाजार मूल्य तक
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

38. (B) एक सार्वजनिक कम्पनी में अंशधारियों का दायित्व अंशों के अंकित मूल्य तक सीमित होता है। अगर अंशधारी ने पूरा मूल्य चुका दिया हो तो उसका दायित्व शून्य हो जाता है। जैसे किसी अंशधारी ने 100 अंश लिए और एक अंश का अंकित मूल्य ` 10 है, तो उस अंशधारी का उस कम्पनी में दायित्व 100 × 10 = ` 1000 तक सीमित है। यदि उसने ` 800 चुकता कर दिया है तो उसका दायित्व अब केवल ` 200 तक सीमित होगा।

39. सांख्यिकी पत्रिका से प्राप्त आँकड़े हैं—
(A) प्राथमिक आँकड़े
(B) द्वितीयक आँकड़े
(C) दोनों (A) तथा (B)
(D) उपरोक्त में से कोई नहीं

39. (B) द्वितीयक आँकड़ों से आशय ऐसे समंकों से है, जिनका पहले ही अन्य व्यक्तियों एवं संस्थाओं द्वारा संकलन एवं प्रकाशन हो चुका है और अनुसंधानकर्त्ता केवल इनका उपयोग करता है। द्वितीयक आँकड़ों को प्राप्त करने का प्रमुख स्रोत निम्न है—
- समाचार पत्र एवं पत्रिकायें
- सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी संस्थाओं के प्रकाशन
- आयोग एवं समितियों की रिपोर्ट
- अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं का प्रकाशन
- व्यापारिक एवं शोध संस्थाओं के प्रकाशन आदि।

40. वाणिज्य में शामिल होता है—
(A) केवल वस्तुओं का क्रय विक्रय
(B) व्यापार एवं उद्योग
(C) केवल व्यापार उद्योग नहीं
(D) व्यापार एवं उसके सहायक

40. (D) व्यवसाय (Business) = उद्योग (Industry) + वाणिज्य (Commerce), वाणिज्य = व्यापार + व्यापार की सहायक क्रियाएँ। वाणिज्य की परिधि के अन्तर्गत वस्तुओं एवं सेवाओं के क्रय-विक्रय के अतिरिक्त परिवहन व्यवस्था, बीमा तथा बैंकिंग व्यवस्था, वित्तीय सुविधायें, माल का परिवहन एवं संग्रहण व्यवस्था आदि सहायक क्रियाओं को भी शामिल किया जाता है।

41. राष्ट्रीय आय की गणना करने की विधि होती है—
(A) उत्पादन गणना विधि
(B) आय गणना विधि
(C) व्यय गणना विधि
(D) उपर्युक्त सभी

41. (D) राष्ट्रीय आय की गणना निम्न विधियों में से किसी एक विधि से की जाती है—
(1) उत्पादन गणना विधि
(2) आय गणना विधि तथा
(3) व्यय गणना विधि

भारत में राष्ट्रीय आय की गणना (C.S.O.) Central Statistical Organisation द्वारा की जाती है।

राष्ट्रीय आय को मापने की विधियाँ

राष्ट्रीय आय को मापने की उत्पादन विधि ''मूल्य वृद्धि विधि''

इस विधि में मूल्य वृद्धि दृष्टिकोण से राष्ट्रीय आय मापी जाती है। इस विधि द्वारा राष्ट्रीय आय मापने के चरण हैं-
- देश के आर्थिक क्षेत्र में स्थित उत्पादन इकाइयों को औद्योगिक वर्गों में बाँटना; जैसे—कृषि खनन, विनिर्माण, बैंकिंग, व्यापार आदि।
- निम्नलिखित चरणों में प्रत्येक औद्योगिक क्षेत्रों की साधन लागत पर शुद्ध मूल्य वृद्धि का अनुमान लगाना-

1. उत्पादन के मूल्य का अनुमान लगाना।
2. मध्यवर्ती उपभोग के मूल्य का अनुमान लगाना और इसे उत्पादन मूल्य में से घटाकर बाजार कीमत पर सकल मूल्य वृद्धि ज्ञात करना।
3. बाजार कीमत पर सकल मूल्य वृद्धि में से स्थिर पूँजी का उपभोग व अप्रत्यक्ष कर घटाकर और आर्थिक सहायता जोड़कर साधन लागत पर शुद्ध मूल्य वृद्धि ज्ञात करना। संक्षेप में-उत्पादन का मूल्य-मध्यवर्ती उत्पाद का मूल्य = बाजार कीमत पर सकल मूल्य वृद्धि स्थिर पूँजी का उपभोग – शुद्ध अप्रत्यक्ष कर = साधन लागत पर शुद्ध मूल्य वृद्धि

- सभी औद्योगिक क्षेत्रों की साधन लागत पर शुद्ध मूल्य वृद्धि को जोड़कर साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद ज्ञात करना
- साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद में विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय जोड़कर राष्ट्रीय आय ज्ञात करना

उत्पादन विधि मापने में सावधानियाँ—उत्पादन विधि द्वारा राष्ट्रीय आय मापने में सावधानियाँ रखना आवश्यक है-

1. **उत्पादन की दोहरी गणना से बचें**—इस हेतु कुल उत्पादन का मूल्य लेने के बजाय प्रत्येक उत्पादन इकाई की केवल शुद्ध मूल्य वृद्धि ही लें। इस प्रकार राष्ट्रीय आय के मापन में दोहरी गणना की समस्या से बचा जा सकता है।
2. **स्वयं उपभोग हेतु किया गया उत्पादन**—जिसकी कीमत लगायी जा सकती हो उत्पादन में अवश्य शामिल किया जाना चाहिए। इससे राष्ट्रीय आय का सही अनुमान लगेगा। उदाहरण हेतु, यदि एक परिवार गेहूँ का उत्पादन करता है और उसका एक भाग परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु रख लेता है तो इस स्वयं उपभोग हेतु रखे गये उत्पादन का मूल्य उत्पादन में अवश्य शामिल किया जाना चाहिए।
3. **पुरानी वस्तुओं का विक्रय**—चालू उत्पादन में शामिल नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि इनका मूल्य पहले ही

उत्पादन में शामिल किया जा चुका है लेकिन इस विक्रय के पीछे जो सेवाएँ हैं, उनका मूल्य इसमें अवश्य शामिल किया जाना चाहिए क्योंकि इनका उत्पादन नया है।

आय वितरण विधि–

इस विधि में राष्ट्रीय आय उस समय मापी जाती है जब उत्पादन या आय के साधन को स्वामियों में बाँटती है। इसके मापने के निम्नलिखित चरण हैं–

- (क) उत्पादन इकाइयों का औद्योगिक क्षेत्रो में वर्गीकरण करें जैसे कृषि, वानिकी, विनिर्माण, बैंकिंग व्यापार आदि। (ख) प्रत्येक औद्योगिक क्षेत्र द्वारा भुगतान की (ग) निम्नलिखित साधन आयों का अनुमान लगाए।

1. कर्मचारियों का पारिश्रमिक,
2. किराया,
3. ब्याज,
4. लाभ एक औद्योगिक वर्ग द्वारा भुगतान की 'ग' साधन आय का योग उस क्षेत्र द्वारा साधन लागत पर शुद्ध मूल्य वृद्धि के समान होता है।

- साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद ज्ञात करने हेतु सभी औद्योगिक क्षेत्रों द्वारा भुगतान की (ग) साधन आयों को जोड़ें।
- साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद ज्ञात करने हेतु साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद में विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय जोड़ें।

आय वितरण विधि मापने में सावधानियाँ–

आय वितरण विधि द्वारा राष्ट्रीय आय मापने में सावधानियाँ रखना आवश्यक है–

1. कर्मचारियों के पारिश्रमिक का अनुमान लगाते समय कर्मचारियों को मिलने वाली नगद मजदूरी के अलावा सुविधाओं के रूप में मिलने वाले सभी लाभ शामिल करने चाहिए। कर्मचारियों को मिलने वाला केवल नगद भुगतान ही शामिल नहीं करना चाहिए।
2. ब्याज का अनुमान लगाते समय केवल उत्पादन हेतु दिये गये ऋण पर मिलने वाले ब्याज ही शामिल किया जाना चाहिए। उपभोग हेतु ऋण पर दिये जाने वाला ब्याज गैर साधन आय है। अत: यह राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं होता।
3. उपहार, दान, कर, जुर्माना, लाटरी आदि से आय साधन आय न होकर हस्तांतरित आय है। अत: इन्हें राष्ट्रीय आय के अनुमान में शामिल नहीं करते।

अंतिम व्यय विधि–

राष्ट्रीय आय व्यय बिंदु पर भी मापी जा सकती है। इस विधि में पहले बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद मापते है जो कि उपभोग और निवेश हेतु अंतिम उत्पादों पर होने वाला व्यय है। इसमें से हम स्थिर पूँजी का उपभोग और शुद्ध अप्रत्यक्ष कर घटाकर और विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय जोड़कर राष्ट्रीय आय प्राप्त करते हैं।

1. उपभोग पर अंतिम व्यय का वर्गीकरण–1. परिवार उपभोग व्यय 2. सामान्य सरकारी उपभोग व्यय में किया जाता है।
2. निवेश व्यय दो वर्गों में बाँटा जाता है–1. आर्थिक क्षेत्र के अंदर निवेश 2. आर्थिक क्षेत्र के बाहर निवेश।
3. इस विधि के निम्नलिखित चरण है– अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों के अंतिम उत्पादों पर होने वाले निम्नलिखित व्ययों का अनुमान लगायें–
   1. निजी अंतिम उपभोग व्यय
   2. सरकारी अंतिम उपभोग व्यय
   3. सकल घरेलू पूँजी निर्माण
   4. शुद्ध निर्यात

उपर्युक्त सभी क्षेत्रों के अंतिम उत्पादों पर होने वाले व्ययों को जोड़ने से हमें बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद ज्ञात होता है।

- बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद में से स्थिर पूँजी का उपभोग और अप्रत्यक्ष कर घटाकर तथा आर्थिक सहायता जोड़कर साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद ज्ञात होता है।
  साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद = बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद – स्थिर पूँजी का उपभोग – अप्रत्यक्ष कर. आर्थिक सहायता
- साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद में विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय जोड़ने पर साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद ज्ञात होता है
  साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद = साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद + विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय

अंतिम व्यय विधि मापने में सावधानियाँ–

व्यय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय मापने में सावधानियाँ रखना आवश्यक है–

1. मध्यवर्ती उत्पादों में होने वाले व्यय को शामिल न करें ताकि व्यय की दोहरी गणना से बचें। केवल अंतिम उत्पादों पर होने वाले व्यय को शामिल करें।
2. उपहार, दान, कर, छात्रवृत्ति आदि के रूप में होने वाला व्यय अंतिम उत्पादों पर होने वाला व्यय नहीं है। ये हस्तांतरणीय व्यय हैं जिन्हें राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं करना चाहिए।
3. पुरानी वस्तुओं के खरीदने पर होने वाला व्यय शामिल नहीं करना चाहिए क्योंकि जब ये वस्तुएँ पहली बार खरीदी गईं। इन पर किया गया व्यय शामिल हो चुका था।

42. एक साझेदारी समझौता हो सकता है–

(A) मौखिक
(B) लिखित
(C) मौखिक अथवा लिखित
(D) इनमें से कोई नहीं

42. (C) भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 के अनुसार साझेदारों के मध्य साझेदारी का समझौता लिखित या मौखिक दोनों में से कोई एक हो सकता है।

43. साझेदारी फर्म का पंजीयन है–

(A) भारतीय साझेदारी अधिनियम के अनुसार अनिवार्य
(B) भारतीय आयकर अधिनियम के अनुसार अनिवार्य
(C) भारतीय कम्पनी अधिनियम के अनुसार अनिवार्य
(D) ऐच्छिक

43. (D) भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 के अनुसार एक साझेदारी फर्म को अपना पंजीयन कराना अनिवार्य नहीं है, साथ ही पंजीयन न कराने पर किसी भी प्रकार के दण्ड की व्यवस्था भी नहीं है। अत: फर्म का पंजीयन ऐच्छिक है।

44. सांख्यिकीय माध्य जो चरम पदों से प्रभावित नहीं होता है–

(A) माध्यिका (B) समान्तर माध्य
(C) हरात्मक माध्य (D) गुणोत्तर माध्य

44. (A) सांख्यिकीय माध्य में समान्तर माध्य, हरात्मक माध्य तथा गुणोत्तर माध्य की गणना में समस्त आँकड़ों को लिया जाता है, परन्तु माध्यिका में केवल वही आँकड़ा आता है जो समस्त आँकड़ों के मध्य में होता है। अत: माध्यिका चरम पदों से प्रभावित नहीं होती।

45. एक व्यवसायी प्रारम्भिक स्टॉक का लागत से 10% अधिक पर मूल्यांकन करता है, यदि प्रारम्भिक स्टॉक का मूल्य ` 27,500 लिखा गया हो, तो उसकी लागत होगी–

(A) `30,000 (B) `24,750
(C) `25,000 (D) `22,500

45. (C) माना प्रारम्भिक स्टॉक की लागत = x है।
अत: स्टॉक का मूल्य

$$= x + \frac{10x}{100} = \frac{11x}{10}$$

$$= \frac{11x}{10} = 27,500$$

$$x = \frac{27,500 \times 10}{11} = `25,000$$

46. निम्नलिखित में से कौन-सा कार्य अंकेक्षक का नहीं है ?
(A) कपट को ढूँढ़ना और रोकना
(B) लेखा पुस्तकों को लिखना
(C) गणितीय शुद्धता की जाँच करना
(D) अशुद्धियों को ढूँढ़ना और रोकना

46. (B) लेखा पुस्तकों के लिखने का कार्य लेखपाल द्वारा किया जाता है।
अंकेक्षक के कार्य निम्न हैं–
(i) कपट को ढूँढ़ना और रोकना
(ii) अशुद्धियों को ढूँढ़ना और रोकना
(iii) गणितीय शुद्धता की जाँच करना।

47. इनमें से कौन-सी सम्पत्ति, स्थायी सम्पत्ति नहीं है ?
(A) भवन (B) फर्नीचर
(C) रोकड़ (D) मशीनरी

47. (C) रोकड़ को छोड़कर समस्त सम्पत्ति, स्थायी सम्पत्ति है, रोकड़ चालू या तरल सम्पत्ति के अन्तर्गत आती है।

48. भारतीय साझेदारी अधिनियम पारित हुआ था–
(A) 1872 में (B) 1932 में
(C) 1956 में (D) 1961 में

48. (B) भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 में पारित हुआ था।

49. कंपनी के प्रवर्तन में शामिल होता है–
(A) विचारों की खोज
(B) प्रस्ताव की विस्तृत जाँच
(C) उत्पादन के कारकों को इकट्ठा करना
(D) उपर्युक्त सभी

49. (D) कम्पनी के प्रवर्तन में निम्न शामिल होता है–
(1) विचारों की खोज
(2) प्रस्ताव की विस्तृत जाँच
(3) उत्पादन कारकों को इकट्ठा करना
(4) कम्पनी के समामेलन के पहले कम्पनी की तरफ से प्रवर्तक का अनुबन्ध करना आदि।

50. एक संयुक्त पूँजी कम्पनी हेतु पंजीयन है–
(A) अनिवार्य
(B) ऐच्छिक
(C) निजी कम्पनी हेतु अनिवार्य
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

50. (A) कम्पनी अधिनियम 1956 के अन्तर्गत संयुक्त पूँजी कम्पनी का पंजीयन अनिवार्य है। क्योंकि कम्पनी एक वैधानिक व्यक्ति के रूप में कार्यरत होती है। कम्पनी के प्रवर्तक को कम्पनी के पंजीयन हेतु निबन्धक (रजिस्ट्रार) के समक्ष निम्नलिखित प्रलेखों तथा विवरणों को प्रस्तुत करना पड़ता है–
- पार्षद् सीमानियम
- पार्षद् अन्तर्नियम
- कम्पनी के प्रत्यक्ष संचालकों की सूची आदि।

51. लेखांकन का मूल सिद्धांत लेने वाला डेबिट तथा देने वाला क्रेडिट लागू होता है–
(A) लाभ-हानि खाते में
(B) वास्तविक खाते में
(C) व्यक्तिगत खाते में
(D) रोकड़ खाते में

51. (C) लेखांकन का मूल सिद्धान्त विभिन्न खातों हेतु निम्न है–

(a)	व्यक्तिगत खाते में	लेने वाला डेबिट तथा देने वाला क्रेडिट
(b)	वास्तविक खाते में	व्यवसाय में आने वाली सम्पत्ति डेबिट तथा जाने वाली सम्पत्ति क्रेडिट
(c)	नाममात्र खाते या अवास्तविक खाते	व्यय डेबिट तथा आय में क्रेडिट होता है।

52. एक व्यय को पूँजीगत व्यय कहा जाता है जबकि–
(A) धनराशि बड़ी होती है
(B) धनराशि का एक मुश्त भुगतान किया जाता है।
(C) वह व्यय भावी लाभों हेतु किया जाता है।
(D) वह व्यय केवल चालू अवधि के लाभों हेतु किया जाता है।

52. (C) पूँजीगत व्यय वह व्यय होते हैं जो स्थायी उद्देश्यों हेतु किये गये हैं और जिनसे एक से अधिक लेखा वर्षों तक आय सृजन में सहायता मिलती है। पूँजी व्यय में निम्न शामिल है–
- फर्नीचर, मशीन का क्रय
- स्थायी सम्पत्तियों की स्थापना व्यय
- पुरानी सम्पत्तियों को कार्य योग्य बनाने हेतु किये गये व्यय

पूँजीगत व्यय निर्धारित करने हेतु निम्न-लिखित नियम हैं–
- भूमि, भवन, मशीनरी, निवेश, Patent या फर्नीचर आदि प्राप्त करने हेतु किए गए व्यय स्थायी सम्पत्ति हैं। लाभ में कमाई हेतु कारोबार में निश्चित सम्पत्ति का उपयोग किया जाता है, न कि पुनर्विक्रय हेतु, जिसे पूँजी व्यय कहा जाता है। मिसाल के तौर पर, जब हम फर्नीचर खरीदते हैं तो यह पूँजीगत व्यय होता है और साथ ही साथ फर्नीचर की दुकान में जो फर्नीचर खरीदने और बेचने में लगा हुआ है, वह पूँजीगत व्यय नहीं है।
- काम करने की स्थिति में पुरानी परिसम्पत्ति डालने या उपयोग करने हेतु एक नई सम्पत्ति लगाने हेतु व्यय पूँजी व्यय है। उदाहरण हेतु, एक पुरानी मशीन 10,000 रुपये हेतु खरीदी जाती है। और 2,000 रुपये की मरम्मत और स्थापना हेतु खर्च किया गया है और कुल व्यय पूँजीगत व्यय हैं।
- जो एक निश्चित परिसम्पत्ति के किसी भी तरीके से कमाई क्षमता को बढ़ाता है उसे पूँजी व्यय कहा जा सकता है। उदाहरण हेतु, एयर कंडीशनिंग हेतु सिनेमा थियेटर पर खर्च की गई राशि।
- लाभ अर्जित करने हेतु आवश्यक पूँजी जुटाने पर खर्च पूँजी व्यय कहा जाता है। उदाहरण हेतु, अंडरराइटिंग कमीशन, ब्रोकरेज इत्यादि।
- मौजूदा परिसम्पत्ति पर जिसके परिणाम-स्वरूप सम्पत्ति की कमाई क्षमता में वृद्धि या उत्पादन लागत को कम करके व्यवसाय के सुधार या विस्तार को पूँजी व्यय भी कहा जाता है। उदाहरण हेतु, भवनों या पौधों आदि हेतु मशीन या परिवर्धन की स्थापना पूँजीगत व्यय है।
- जब व्यय का लाभ पूरी तरह से एक अवधि में नहीं रखा जाता है, लेकिन कई अवधि में फैलाया जाता है, उसे कैपिटल, व्यय कहा जाता है। उदाहरण हेतु, बड़े पैमाने पर विज्ञापनों हेतु व्यय मिले।

53. गहन जाँच के अंतर्गत–
(A) सभी लेखा पुस्तकों की जाँच होती है
(B) विशिष्ट लेखा पुस्तकों की जाँच होती है
(C) केवल रोकड़ पुस्तक की जाँच होती है
(D) इनमें से कोई नहीं

53. (A) गहन जाँच के अन्तर्गत सभी लेखा पुस्तकों की जाँच होती है। सभी लेखा पुस्तकों को दो या दो से अधिक समूहों में बाँटा जाता है और फिर उनकी गहन जाँच होती है।

54. एक साझेदारी फर्म का निर्माण किया जाता है–
(A) रजिस्ट्रेशन द्वारा
(B) अनुबन्ध द्वारा
(C) परिस्थितियों वश
(D) उत्तराधिकार नियम द्वारा

54. (B) साझेदारी फर्म का निर्माण साझेदारों के बीच अनुबन्ध द्वारा होता है।

55. यदि चालू अनुपात 2.4 : 1 का है और चालू दायित्व `20,000 है, तो चालू सम्पत्ति की राशि क्या होगी?
(A) ` 44,000 (B) ` 48,000
(C) ` 50,000 (D) ` 8,333

55. (B) चालू अनुपात = $\frac{\text{चालू सम्पत्ति}}{\text{चालू दायित्व}}$

$$\frac{2.4}{1} = \frac{\text{चालू सम्पत्ति}}{20,000}$$

चालू सम्पत्ति = $20,000 \times 2.4$
= `48,000

56. विकेन्द्रीयकरण किया जाता है–
(A) उच्चतम प्रबन्ध द्वारा
(B) मध्यम प्रबन्ध द्वारा
(C) निम्न प्रबन्ध द्वारा
(D) निम्नतम प्रबन्ध द्वारा

56. (A) विकेन्द्रीयकरण के अन्तर्गत अधिकारों एवं दायित्वों को विभिन्न स्तरों पर स्थायी रूप से विभाजित किया जाता है। यह कार्य उच्चतम प्रबन्ध द्वारा होता है।

57. विपणन के अंतर्गत अध्ययन किया जाता है–
(A) विक्रय प्रबन्ध का
(B) उपभोक्ताओं की सन्तुष्टि का
(C) उपभोक्ताओं के क्रय सम्बन्धी व्यवहार का
(D) उपर्युक्त सभी

57. (D) विपणन के अन्तर्गत प्रश्न में वर्णित समस्त विषयों का अध्ययन किया जाता है।

58. किसी साझेदार की मृत्यु हो जाने पर संयुक्त जीवन बीमा पालिसी से प्राप्त रकम किस रूप में साझेदारों के पूँजी खातों में क्रेडिट होगी?
(A) सभी साझेदारों के लाभ-हानि विभाजन अनुपात में
(B) शेष साझेदारों के लाभ-हानि विभाजन अनुपात में
(C) केवल मृतक साझेदार के खाते में
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

58. (A) संयुक्त जीवन बीमा पालिसी से प्राप्त रकम को सभी साझेदारों के लाभ-हानि विभाजन अनुपात में बाँटा जाता है।

59. एक प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी निर्गमित कर सकती है–
(A) अंश अधिपत्र (B) अंश प्रमाण-पत्र
(C) ऋण-पत्र (D) इनमें से कोई नहीं

59. (B) एक प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी पर अंश आवंटन पर कुछ सीमा तक प्रतिबन्ध होता है, परन्तु जिन्हें अंशों का आवंटन होता है उन्हें कम्पनी अंश प्रमाण-पत्र निर्गमित करती है।

60. लघु कार्य राशि बराबर होती है–
(A) न्यूनतम किराया + अधिकार शुल्क
(B) अधिकार शुल्क + न्यूनतम किराया
(C) न्यूनतम किराया – अधिकार शुल्क
(D) अधिकार शुल्क – भूस्वामी को दी गयी राशि

60. (C) लघु कार्य राशि = न्यूनतम किराया – अधिकार शुल्क

61. निजी कम्पनी के संचालकों की न्यूनतम संख्या होती है–
(A) तीन (B) दो
(C) पाँच (D) सात

61. (B) निजी कम्पनी के संचालकों की न्यूनतम संख्या दो होती है।

62. शब्द 'सांख्यिकी' का प्रयोग इस प्रकार किया जाता है–
(A) एकवचन
(B) बहुवचन
(C) एकवचन एवं बहुवचन
(D) उपर्युक्त में से कोई

62. (C) शब्द सांख्यिकी का प्रयोग एकवचन एवं बहुवचन दोनों अर्थों में किया जाता है।

63. निम्नलिखित में से कौन-सा व्यापारिक सौदा नहीं है?
(A) व्यापार हेतु `1,00,000 का फर्नीचर क्रय किया
(B) अपने पुत्र की फीस `20,000 अपने व्यक्तिगत बैंक खाते से भुगतान की
(C) कर्मचारियों का वेतन `50,000 भुगतान किया
(D) `75,000 का माल क्रय किया

63. (B) क्योंकि इस सौदे का व्यवसाय से कोई सम्बन्ध नहीं है।

64. अधिकार अंशों का आशय उन अंशों से होता है जिन्हें–
(A) कम्पनी के प्रवर्तकों को निर्गमित किया जाता है
(B) कम्पनी के विक्रेताओं को निर्गमित किया जाता है।
(C) कम्पनी के संचालकों को निर्गमित किया जाता है।
(D) कम्पनी के विद्यमान अंशधारियों को निर्गमित किया जाता है।

64. (D) अधिकार अंशों का निर्गमन, कम्पनी के विद्यमान अंशधारियों को किया जाता है। यह सदैव एक अनुपात में निर्गमित होता है।

65. एक कम्पनी के समापन पर निम्नलिखित में से किसे भुगतान सबसे अंत में किया जाता है ?
(A) अरक्षित देनदार
(B) समता अंशधारी
(C) पूर्वाधिकार अंशधारी
(D) ऋणपत्र धारी

65. (B) कम्पनी के समापन पर भुगतान का क्रम निम्न है–
(1) आरक्षित लेनदार
(2) असुरक्षित लेनदार
(3) ऋणपत्र धारी
(4) पूर्वाधिकार अंशधारी तथा
(5) समता अंशधारी

66. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही नहीं है ?
(A) नियंत्रण एक सतत् प्रक्रिया है
(B) नियंत्रण एक प्रबन्धकीय कार्य होता है
(C) नियंत्रण सदैव बीते हुए कार्यों से ही सम्बन्ध रखता है
(D) नियंत्रण सभी स्तरों पर लागू होता है।

66. (C) नियंत्रण की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं–
(i) यह एक सतत् प्रक्रिया है।
(ii) यह एक प्रबन्धकीय कार्य होता है।
(iii) नियंत्रण प्रबन्ध के सभी स्तरों पर लागू होता है।

67. निम्नलिखित में से कौन एक व्यावसायिक क्रिया नहीं है?
(A) एक व्यक्ति अपना पुराना टी.वी. बेचकर `500 लाभ कमाता है
(B) एक बीमा कम्पनी की क्रियाएँ
(C) एक प्रोवीजन स्टोर (किराना भंडार) चलाना
(D) एक होटल में खाना पकाना एवं बेचना

67. (A) व्यावसायिक क्रिया का आशय ऐसे क्रियाकलापों से है जब लाभ कमाने के उद्देश्य से किसी वस्तु या सेवा का क्रय-विक्रय किया जाता है। ऐसी स्थिति में यदि

एक व्यक्ति अपना पुराना टी. वी. बेचकर ` 500 का लाभ कमाता है तो यह व्यावसायिक क्रिया नहीं होगा, क्योंकि व्यक्ति का मुख्य उद्देश्य या कार्य लाभ हेतु क्रय-विक्रय करना नहीं है।

68. डेबिट बराबर होता है, क्रेडिट के–
(A) लेखांकन में कभी-कभी सत्य
(B) लेखांकन में कभी-कभी गलत
(C) लेखांकन में हमेशा सत्य
(D) विशेष परिस्थितियों में सत्य

68. (C) लेखांकन के अन्तर्गत, व्यवसाय के किसी भी सौदे को दोनों रूपों में लिखा जाता है। एक रूप डेबिट तथा दूसरा क्रेडिट होता है। अत: डेबिट हमेशा क्रेडिट के समान होता है अगर लेखांकन में कोई अशुद्धि न हो।

69. किस वर्ष में रिजर्व बैंक की स्थापना हुई थी ?
(A) 1935 (B) 1949
(C) 1955 (D) 1969

69. (A) 1 अप्रैल, 1935 को ` 5 करोड़ की अधिकृत पूँजी के साथ रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया की स्थापना की गई, जिसका 1 जनवरी, 1949 को राष्ट्रीयकरण कर दिया गया।

70. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है–
(A) साझेदारी में साझेदारों की संख्या न्यूनतम तीन होती है।
(B) प्राइवेट कम्पनी में सदस्यों की न्यूनतम संख्या दो होती है
(C) एकाकी व्यापार व्यावसायिक संगठन का प्राचीनतम रूप है।
(D) सार्वजनिक कम्पनी का पंजीयन कराना अनिवार्य होता है।

70. (A) साझेदारी में साझेदारों की संख्या न्यूनतम दो होती है तथा सामान्य व्यवसाय में अधिकतम 20 और बैंकिंग क्षेत्र में 10 होती है।

71. भारत में व्यावसायिक उपक्रमों की संख्या सबसे अधिक है–
(A) सरकारी क्षेत्र में (B) निजी क्षेत्र में
(C) संयुक्त क्षेत्र में (D) सहकारी क्षेत्र में

71. (B) भारत में व्यावसायिक उपक्रमों की सबसे अधिक संख्या निजी क्षेत्र में है।

72. ह्रास लगाया जाता है–
(A) चालू सम्पत्ति पर
(B) स्थायी सम्पत्ति पर
(C) अदृश्य सम्पत्ति पर
(D) दृश्य सम्पत्ति पर

72. (B) भूमि को छोड़कर बाकी सभी स्थायी सम्पत्तियों पर ह्रास लगाया जाता है।
ह्रास (Depreciation) की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–
- ह्रास की व्यवस्था स्थायी सम्पत्तियों हेतु की जाती है।
- ह्रास का आशय किसी स्थायी सम्पत्ति के पुस्तकीय मूल्य में कमी से होता है।
- ह्रास के रूप में सम्पत्ति के मूल्य में निरंतर कमी होती रहती है।
- सम्पत्ति के मूल्य में कमी धीरे-धीरे नियमित व स्थायी रूप से होती है।
- ह्रास अनेक कारणों से हो सकता है, जैसे–घिसावट और क्षय, समय का व्यतीत होना, सम्पत्ति का अप्रचलन, दुर्घटना आदि।
- ह्रास एक आगम हानि है जिसे लाभ-हानि खाते में प्रभावित किया जाता है।
- ह्रास सम्पत्तियों की लागत के वितरण की एक प्रक्रिया है, मूल्यांकन की नहीं।
- ह्रास गैर-नकद संचालन व्यय है।

73. जब दाम बढ़ता है, तो कुछ चीजों की माँग भी बढ़ जाती है इस घटना को कहते हैं–
(A) मार्शल का विरुद्धमत
(B) गिफिन का विरुद्धमत
(C) वेबलन का विरुद्धमत
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

73. (B) जब दाम बढ़ता है तो, कुछ वस्तुओं की माँग बढ़ जाती है। यह माँग नियम का अपवाद है। इसे गिफिन का विरुद्धमत भी कहते हैं।

74. एक छोटे एकाकी व्यापार को सामान्यतया अंकेक्षण की आवश्यकता नहीं रहती है क्योंकि–
(A) इसका क्षेत्र सीमित होता है
(B) इसके स्वामी का इस पर पूर्ण नियंत्रण होता है।
(C) वैधानिक रूप से यह अनिवार्य नहीं है।
(D) उपर्युक्त सभी

74. (C) छोटे एकाकी व्यापार का अंकेक्षण वैधानिक रूप से अनिवार्य नहीं है।

75. भारतीय स्टेट बैंक की स्थापना किस वर्ष में हुई ?
(A) 1935 (B) 1949
(C) 1955 (D) 1956

75. (C) सन् 1921 में तीन प्रेसीडेन्सी बैंकों (बैंक ऑफ बंगाल, बैंक ऑफ बाम्बे तथा बैंक आफ मद्रास) को मिलाकर इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया की स्थापना की गयी। एक जुलाई, 1955 को इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया का राष्ट्रीयकरण करके स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया की स्थापना की गयी।

76. जनसंख्या सिद्धांत का प्रतिपादन किसने किया–
(A) मिल (B) हिक्स
(C) माल्थस (D) एडम स्मिथ

76. (C) जनसंख्या सिद्धान्त का प्रतिपादन माल्थस ने किया था।
ब्रिटिश अर्थशास्त्री माल्थस ने 'प्रिंसीपल ऑफ पॉपुलेशन' में जनसंख्या वृद्धि और इसके प्रभावों की व्याख्या की है। माल्थस के अनुसार, 'जनसंख्या दोगुनी रफ्तार (1,2,4,8,16,32) से बढ़ती है, जबकि संसाधनों में सामान्य गति (1,2,3,4,5) से ही वृद्धि होती है। परिणामत: प्रत्येक 25 वर्ष बाद जनसंख्या दोगुनी हो जाती है। हालाँकि माल्थस के विचारों से शब्दश: सहमत नहीं हुआ जा सकता, किंतु यह सत्य है कि जनसंख्या की वृद्धि दर संसाधनों की वृद्धि दर से अधिक होती है। भूमिकर सिद्धांत के जन्मदाता डेविड रिकार्डो तथा जनसंख्या और संसाधनों के समन्वय पर थामस सैडलर, हरबर्ट स्पेंसर ने भी जनसंख्या वृद्धि पर गंभीर विचार व्यक्त किये हैं।

77. मुद्रा का सहायक कार्य कौन-सा है–
(A) विनिमय का माध्यम
(B) मूल्य का मापक
(C) स्थगित भुगतानों का आधार
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

77. (C) मुद्रा के मुख्य कार्य निम्न हैं–
- विनिमय का माध्यम
- मूल्य का मापक

गौण अथवा सहायक कार्य निम्न हैं–
- स्थगित भुगतानों का आधार
- मूल्य संचय का आधार
- मूल्य हस्तान्तरण का माध्यम

78. रोकड़ बही का शेष दिखाता है–
(A) बैंक में जमा रकम
(B) आय और व्यय का अन्तर
(C) कुल वास्तविक आय
(D) कुल उपलब्ध रोकड़

78. (D) रोकड़ शेष बही का खाता सदैव डेबिट शेष को दिखलाता है। यह शेष वर्ष के अन्त में उपलब्ध रोकड़ को दर्शाता है।
रोकड़ बही की निम्नलिखित मुख्य विशेषताएँ हैं–
- रोकड़ बही लेन-देन के केवल एक पक्ष अर्थात् प्रकृति पर प्रकाश डालती है।
- लेन-देनों का अभिलेखन क्रमबद्ध रूप में किया जाता है।
- रोकड़ प्राप्तियों को रोकड़ बही के डेबिट पक्ष में लिखा जाता है।

- रोकड़ प्राप्तियों को रोकड़ बही के डेबिट पक्ष में लिखा जाता है, जबकि रोकड़ भुगतानों को क्रेडिट पक्ष में।
- रोकड़ बही एक रोजनामचाकृत खाता-बही है। यह सहायक पुस्तक तथा प्रमुख पुस्तक दोनों ही है।

79. निम्नलिखित में से कौन-सा कार्य मुद्रा का कार्य नहीं है ?

(A) वस्तु को वस्तु से बदलना

(B) मूल्य का संचय

(C) विनिमय का माध्यम

(D) स्थगित भुगतानों का आधार

79. (A) **मुद्रा के कार्य**

प्रो. किनले ने मुद्रा के कार्यों को निम्न प्रकार विभाजित किया है-

1. प्राथमिक कार्य
2. गौण कार्य
3. आकस्मिक कार्य
4. अन्य कार्य

प्राथमिक या मुख्य कार्य–

आधुनिक मुद्रा के प्राथमिक कार्य विनिमय का माध्यम एवं मूल्य की मापकता है-

1. **विनिमय का माध्यम**–मुद्रा का सबसे महत्वपूर्ण कार्य विनिमय का माध्यम है। वस्तु और सेवाओं का विनिमय प्रत्यक्ष रूप से वस्तुओं तथा सेवाओं में न होकर मुद्रा के माध्यम से होता है। मुद्रा के कारण मनुष्य को अपना समय और शक्ति ऐसे दूसरे व्यक्ति की खोज करने में नष्ट करने की आवश्यकता नहीं रही है जिसके पास उसकी आवश्यकता की वस्तुएँ हैं। जो अपनी उन वस्तुओं के बदले में उन दूसरी वस्तुओं को स्वीकार करने को तैयार है जो उस पहले मनुष्य के पास है। फलतः मुद्रा के विनिमय के कार्य को बहुत ही सरल एवं सहज बना दिया है।
2. **मूल्य का मापक**–मुद्रा का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य वस्तुओं तथा सेवाओं के मूल्यों को मापने का है। वस्तु विनिमय प्रणाली की एक बड़ी कठिनाई यह निर्णय करना था कि एक वस्तु की दी हुई मात्रा के बदले दूसरी वस्तु की कितनी मात्रा प्राप्त होनी चाहिए। मुद्रा ने सामान्य मूल्य मापक का कार्य करके समाज को इस असुविधा से मुक्त कर दिया है।

गौण या सहायक कार्य–

मुद्रा के प्राथमिक कार्यों के अलावा इसके कछु गौण अथवा सहायक कार्य भी होते है, जो निम्न प्रकार हैं–

1. **भावी भुगतानों का आधार**–मुद्रा का सबसे प्रथम गौण कार्य भावी भुगतान का आधार है। आधुनिक युग में सम्पूर्ण आर्थिर्क ढाँचा साख पर आधारित है और इसमें भिन्न-भिन्न कार्यों हेतु उधार लेन-देन की आवश्यकता पड़ती है। ऋण का लेन-देन मुद्रा के माध्यम से ही होता है। वस्तुओं के रूप में ऋण के लेन -देन के कार्य में कठिनाई होती है। इसलिए इस कार्य के लिए मुद्रा का प्रयोग किया जाता है।
2. **मूल्य संचय का आधार**–मुद्रा का दूसरा गौण कार्य मूल्य संचय का आधार है। वस्तुतः मुद्रा मूल्य संचय का भी साधन है। वस्तु विनिमय प्रणाली में मुद्रा के अभाव में धन संचय करने में कठिनाई होती थी। मुद्रा के आविष्कार ने इस कठिनाई को दूर कर दिया है।
3. **क्रयशक्ति का हस्तांतरण**–मुद्रा का तीसरा महत्वपूर्ण कार्य क्रयशक्ति का हस्तांतरण है। मुद्रा की क्रयशक्ति को एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य तथा एक स्थान से दूसरे स्थान को हस्तांतरित किया जा सकता है। क्रयशक्ति का हस्तांतरण करके मुद्रा ने विनिमय को व्यापक बनाने में सहायता की है।

आकस्मिक कार्य–

मुद्रा के प्राथमिक तथा गौण कार्यों के साथ ही प्रो. किनले के अनुसार, मुद्रा के निम्नांकित चार आकस्मिक कार्य भी होते हैं–

1. **साख का आधार**–मुद्रा के आकस्मिक कार्यों में सर्वप्रथम साख के आधार पर कार्य करना है। आज के युग में साख मुद्रा का महत्व, मुद्रा के महत्व से भी अधिक हो गया है। आजकल समस्त औद्योगिक तथा व्यापारिक गतिविधियाँ साख मुद्रा की आधारशिला पर टिकी हैं। बैंकों द्वारा उत्पन्न साख मुद्रा की सहायता से अर्थव्यवस्था की उन्नति सभंव हो पायी है।
2. **आय के वितरण में सहायक**–मुद्रा का दूसरा आकस्मिक कार्य आय के वितरण में सहायक का कार्य करना है। मुद्रा समाज में राष्ट्रीय आय को उत्पादन के विभिन्न साधनों के बीच वितरण करने में सुविधा प्रदान करती है। यह ज्ञातव्य है कि किसी देश में जितना उत्पादन होता है उसमें उत्पत्ति के विभिन्न साधनों का सहयोग होता है।
3. **पूँजी के सामान्य रूप का आधार**–मुद्रा सभी प्रकार की पूँजी के सामान्य रूप का आधार होती है। मुद्रा के रूप में बचत करके विभिन्न वस्तुओं को प्राप्त किया जा सकता है। आजकल धन या पूँजी को मुद्रा के रूप में ही रखा जाता है। इससे पूँजी की तरलता एवं गतिशीलता में वृद्धि होती है। आधुनिक युग में मुद्रा के इस कार्य का विशेष महत्व है।
4. **उपभोक्ता को सम-सीमान्त उपयोगिता प्राप्त करने में सहायक**–मुद्रा के माध्यम से ही उपभोक्ता अपनी आय को विभिन्न प्रयोगों में इस प्रकार से व्यय करता है कि सभी प्रयोग से एक समान उपयोगिता प्राप्त हो। इस प्रकार वह अपनी आय से अधिकतम संतुष्टि प्राप्त कर सकता है। उत्पादन के क्षेत्र में भी मुद्रा के प्रयोग से सभी साधनों की सीमान्त उत्पादकता को बराबर करने में सुविधा प्राप्त होती है जिससे उत्पादन अधिकतम होता है।

मुद्रा के अन्य कार्य–

मुद्रा के उपर्युक्त कार्यों के अलावा कुछ अर्थशास्त्रियों ने मुद्रा के कुछ अन्य कार्य भी बताये हैं जो निम्न प्रकार हैं–

1. **इच्छा की वाहक–फ्रेंक डी. ग्राह्य** के अनुसार, मुद्रा मनुष्य को समाज में ऐसी क्षमता प्रदान करती है जिसके द्वारा वह भावी बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार संचित क्रयशक्ति का प्रयोग कर सकता है। यदि मुद्रा के स्थान पर अन्य वस्तु का संचय किया जाये तो यह सुविधा उपलब्ध नहीं हो सकती है क्योंकि मुद्रा में वह गुण है जिसे किसी भी वस्तु में किसी भी समय विनिमय किया जा सकता है। मुद्रा मनुष्य को भावी निर्णय लेने में सहायता करती है।
2. **तरल सम्पत्ति का रूप–प्रो. कीन्स** के अनुसार, मुद्रा तरल सम्पत्ति के रूप में बहुत महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित करती है। तरलता के कारण मुद्रा स्वयं मूल्य संचय का कार्य करती है। मनुष्य की सम्पत्ति में मुद्रा सबसे उत्तम सम्पत्ति है। इसीलिए प्रत्येक मनुष्य अपनी सम्पत्ति को अन्य सम्पत्ति में संचित

रखने की बजाय मुद्रा के रूप में संचित रखते हैं। मनुष्य इन कारणों से मुद्रा को तरल या नकद रूप में रखता है। आकस्मिक संकटों का सामना करने, प्रतिदिन के लेन -देन अथवा सटटे या निवेश के उद्देश्य से मुद्रा को तरल सम्पत्ति के रूप में रखता है।

3. **भुगतान-क्षमता का सूचक—प्रो. आर. पी. केण्ट** के अनुसार, ''मुद्रा मनुष्यों को ऋण भुगतान करने की क्षमता प्रदान करती है।'' किसी व्यक्ति या फर्म के पास मुद्रा-रूपी तरल सम्पत्ति उसी भुगतान-क्षमता की सूचक होती है। मुद्रा की अनुपस्थिति व्यक्ति या फर्म को दिवालिया घोषित कर देती है। इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति या फर्म को अपने ऋण का भुगतान करने हेतु अपनी आय अथवा साधनों का कुछ भाग नकद में संचित रखना आवश्यक होता है।

80. दो लगातार सामान्य सभाओं के बीच अधिकतम समय अंतराल कितना हो सकता है ?

(A) 15 महीने (B) 12 महीने

(C) 09 महीने (D) 18 महीने

80. (A) दो लगातार सामान्य सभाओं के बीच अधिकतम समय अंतराल 15 महीने हो सकता है। विशेष परिस्थितियों में इसे तीन महीना और बढ़ाया जा सकता है।

81. कम्पनी के जीवन काल में वैधानिक सभा होती है केवल—

(A) एक बार (B) दो बार

(C) तीन बार (D) प्रत्येक वर्ष

81. (A) कम्पनी के जीवन काल में केवल एक बार वैधानिक सभा होती है और यह सभा कम्पनी समामेलन के 6 माह के अन्दर हो जानी चाहिए।

82. नित्यक जाँच की जाती है—

(A) संस्था के प्रबन्धों द्वारा

(B) संस्था के कर्मचारियों द्वारा

(C) अंकेक्षकों द्वारा

(D) अंशधारियों द्वारा

82. (B) नैत्यिक जाँच के अन्तर्गत बहियों का जोड़ निकालना, अगले पृष्ठ पर ले जाना, खतौनी, करना, खातों का शेष निकालना तथा इन बाकियों को तलपट में ले जाना इत्यादि कार्यों की जाँच नित्यक जाँच कहलाती है। यह जाँच संस्था के कर्मचारियों द्वारा की जाती है।

83. रेखा एवं कर्मचारी संगठन सबसे अधिक उपयुक्त है—

(A) छोटे उपक्रम

(B) बड़े आकार के उपक्रम

(C) मध्यम श्रेणी के उपक्रम

(D) कुटीर उपक्रम

83. (B) रेखा एवं कर्मचारी संगठन का प्रारूप बड़े आकार के उपक्रम में अपनाया जाता है। साथ ही जहाँ पर कार्य अधिक जटिल किस्म का होता है एवं विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है, वहाँ पर इस संगठन का प्रारूप अधिक उपयोगी होता है।

84. लेखा पुस्तकों की जाँच करना अंकेक्षण का उद्देश्य होता है—

(A) सामाजिक उद्देश्य (B) मुख्य उद्देश्य

(C) सहायक उद्देश्य (D) इनमें से कोई नहीं

84. (B) अंकेक्षण के निम्न उद्देश्य हैं—

(1) मुख्य उद्देश्य एवं

(2) सहायक उद्देश्य

मुख्य उद्देश्य—अंकेक्षण का मुख्य उद्देश्य यह ज्ञात करता है कि व्यापारिक संस्था का लाभ-हानि खाता सही एवं उचित लाभ-हानि तथा स्थिति विवरण सही एवं उचित आर्थिक स्थिति प्रदर्शित करता है कि नहीं।

सहायक उद्देश्य—लेखा परीक्षण के सहायक उद्देश्य में निम्नलिखित हैं—

1. त्रुटियों का पता लगाना एवं उन पर रोक,
2. कपट का पता लगाना तथा उस पर रोक,
3. खातों में कपटपूर्ण ढंग से गड़बड़ी का पता लगाना एवं उन पर रोक।

85. एकाकी व्यापार पर व्यवसायों हेतु उपयुक्त नहीं होता है—

(A) जोकि आकार में बहुत बड़े हों

(B) जहाँ कम पूँजी की आवश्यकता होती है

(C) जहाँ जोखिम की मात्रा अधिक न हो

(D) जिसमें ग्राहकों पर व्यक्तिगत ध्यान देना आवश्यक हो

85. (A) एकाकी व्यापार निम्न व्यवसायों हेतु उपयुक्त है—

(1) जहाँ कम पूँजी की आवश्यकता होती है।

(2) जहाँ विशेषज्ञता की आवश्यकता नहीं होती।

(3) जहाँ जोखिम की मात्रा कम हो।

(4) जिसमें ग्राहकों पर व्यक्तिगत ध्यान देना आवश्यक है।

आकार में बहुत बड़े व्यवसाय हेतु संयुक्त पूँजी वाली कम्पनी ज्यादा उपयुक्त होती है।

86. निम्नलिखित में से कौन-सा मुद्रा के मूल्य निर्धारण का सिद्धांत है?

(A) मुद्रा का वस्तु सिद्धांत

(B) मुद्रा का राजकीय सिद्धांत

(C) मुद्रा का परिमाण सिद्धांत

(D) उपर्युक्त सभी

86. (C) मुद्रा के मूल्य का निर्धारण मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त द्वारा ज्ञात किया जाता है। यह सिद्धान्त सर्वप्रथम फिशर द्वारा दिया गया था। उनके अनुसार निम्न समीकरण दिया गया-

$$MV = PT$$

87. मुद्रा प्रसार के दौरान मुद्रा का मूल्य —

(A) बढ़ता है (B) घटता है

(C) स्थिर रहता है (D) इनमें से कोई नहीं

87. (B) मुद्रा के प्रसार के दौरान देश में मुद्रा की पूर्ति ज्यादा होती है और इससे लोगों की क्रय शक्ति बढ़ती है जिससे देश में मुद्रा स्फीति की अवस्था आ जाती है। जिसके अन्तर्गत उत्पाद एवं सेवाओं का मूल्य बढ़ता है और मुद्रा का मूल्य घटता है।

जब माँग और आपूर्ति में असंतुलन पैदा होता है तो वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें बढ़ जाती हैं। कीमतों में इस वृद्धि को मुद्रा-स्फीति कहते हैं। भारत अपनी मुद्रा-स्फीति की गणना दो मूल्य सूचियों के आधार पर करता है—थोक मूल्य सूचकांक (Wholesale Price Index–WPI) एवं उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (Consumer Price Index–CPI)।

- अत्यधिक मुद्रा-स्फीति अर्थव्यवस्था के लिये हानिकारक होती है, जबकि 2-3: की मुद्रा-स्फीति दर अर्थव्यवस्था के लिये ठीक होती है।
- मुद्रा-स्फीति मुख्यत: दो कारणों से होती है, माँगजनित कारक एवं लागतजनित कारक।
- अगर माँग के बढ़ने से वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि होती है तो वह माँगजनित मुद्रा-स्फीति (Demand-Pull Inflation) कहलाती है।
- अगर उत्पादन के कारकों (भूमि, पूँजी, श्रम, कच्चा माल आदि) की लागत में वृद्धि से वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि होती है तो वह लागतजनित मुद्रा-स्फीति (Cost-Push Inflation) कहलाती है।

मुद्रास्फीति के प्रभाव (Effects of Inflation)

- **निवेशकों पर**—निवेशकर्त्ता दो प्रकार के होते हैं। पहले प्रकार के निवेशकर्त्ता वे होते हैं जो सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश करते हैं। सरकारी प्रतिभूतियों से निश्चित आय प्राप्त होती है तथा दूसरे निवेशकर्ता वे होते हैं जो संयुक्त पूँजी कंपनियों के हिस्से खरीदते हैं। मुद्रा-स्फीति से निवेशकर्ता के पहले वर्ग को नुकसान तथा दूसरे वर्ग को फायदा होगा।
- **निश्चित आय वर्ग पर**—निश्चित आय वर्ग में वे सब लोग आते हैं जिनकी आय निश्चित होती है जैसे- श्रमिक, अध्यापक, बैंक कर्मचारी आदि। मुद्रा-स्फीति के कारण वस्तुओं तथा सेवाओं की कीमतें बढ़ती हैं जिसका निश्चित आय वर्ग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- **ऋणी एवं ऋणदाता पर**—जब ऋणदाता रुपए किसी को उधार देता है तो मुद्रा-स्फीति के कारण उसके रुपए का मूल्य कम हो जाएगा। इस प्रकार ऋणदाता को मुद्रा-स्फीति से हानि तथा ऋणी को लाभ होता है।
- **कृषकों पर**—मुद्रा-स्फीति का कृषक वर्ग पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है क्योंकि कृषक वर्ग उत्पादन करता है तथा मुद्रा-स्फीति के दौरान उत्पाद की कीमतें बढ़ती हैं। इस प्रकार मुद्रा-स्फीति के दौरान कृषक वर्ग को लाभ मिलता है।
- **बचत पर**—मुद्रा-स्फीति का बचत पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है क्योंकि मुद्रा-स्फीति के कारण वस्तुओं पर किये जाने वाले व्यय में वृद्धि होती है। इससे बचत की संभावना कम हो जाएगी। दूसरी ओर मुद्रा-स्फीति से मुद्रा के मूल्य में कमी होगी और लोग बचत करना नहीं चाहेंगे।
- **भुगतान संतुलन**—मुद्रा-स्फीति के समय वस्तुओं तथा सेवाओं के मूल्यों में वृद्धि होती है। इसके कारण हमारे निर्यात महँगे हो जाएंगे तथा आयात सस्ते हो जाएंगे। निर्यात में कमी होगी तथा आयत में वृद्धि होगी जिसके कारण भुगतान संतुलन प्रतिकूल हो जाएगा।
- **करों पर**—मुद्रा-स्फीति के कारण सरकार के सार्वजनिक व्यय में बहुत अधिक वृद्धि होती है। सरकार अपने व्यय की पूर्ति के लिये नए-नए कर लगाती है तथा पुराने करों में वृद्धि करती है। इस प्रकार मुद्रा-स्फीति के कारण करों के भार में वृद्धि होती है।
- **उत्पादकों पर**—मुद्रा-स्फीति के कारण उत्पादक तथा उद्यमी वर्ग को लाभ होता है क्योंकि उत्पादक जिन वस्तुओं का उत्पादन करते हैं उनकी कीमतें बढ़ रही होती हैं तथा मजदूरी में भी वृद्धि कीमतों की तुलना में कम होती है। इस प्रकार मुद्रा-स्फीति से उद्यमी तथा उत्पादकों का फायदा होता है।

मुद्रा-स्फीति नियंत्रण के उपाय

- सरकार ने मुद्रा-स्फीति के नियंत्रण हेतु कई उपाय किये हैं।
- अनिवार्य वस्तुओं, खासकर दालों के मूल्य में अस्थिरता को नियंत्रित करने हेतु बजट में मूल्य स्थिरता कोष में बढ़ा हुआ आवंटन।
- बाजार में समुचित दखल हेतु 20 लाख टन दालों का बफर स्टॉक रखने का अनुमोदन।
- अनिवार्य वस्तु अधिनियम के अंतर्गत दालों, प्याज, खाद्य तेलों और खाद्य तेल के बीजों हेतु स्टॉक सीमा लागू करने के लिये राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों को अधिकृत करना।
- उत्पादन को प्रोत्साहित कर खाद्य पदार्थों की उपलब्धता बढ़ाने हेतु ताकि मूल्यों में सुधार हो।
- उच्चतर मूल्य की घोषणा।

88. शुरू में विवेकीकरण के कारण—
(A) बेरोजगारी बढ़ती है
(B) रोजगार में वृद्धि होती है
(C) श्रमिकों की छँटनी होती है
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

88. (A) विवेकीकरण के अन्तर्गत संगठन के समस्त क्रियाकलाप का आधुनिकीकरण हो जाता है। शुरूआत में विवेकीकरण की वजह से बेरोजगारी में वृद्धि हुई क्योंकि व्यवसाय एवं उद्योगों में मशीनों के प्रयोग से श्रमिकों की कम आवश्यकता हुई।

89. एक साझेदारी समझौता समाप्त हो जाता है—
(A) एक साझेदार के अवकाश ग्रहण पर
(B) एक साझेदार की मृत्यु पर
(C) एक साझेदार के दिवालिया होने पर
(D) उपर्युक्त सभी

89. (D) वर्णित समस्त कारणों की वजह से साझेदारी समझौता समाप्त हो जाता है।

90. निम्नलिखित में से किस लेखांकन अवधारणा के अनुसार व्यवसाय के स्वामी को उसके द्वारा लगायी गयी पूँजी तक लेनदार माना जाता है ?
(A) लागत अवधारणा
(B) पृथक अस्तित्व अवधारणा
(C) मुद्रा मापन अवधारणा
(D) द्विपक्षीय अवधारणा

90. (B) पृथक अस्तित्व अवधारणा के अन्तर्गत व्यापार का उसके स्वामी से पृथक अस्तित्व होता है। व्यवसाय, व्यवसाय के स्वामी को उसके द्वारा लगायी गयी पूँजी तक लेनदार मानता है।

91. किसको वैधानिक सभा करने की आवश्यकता नहीं होती है ?
(A) एक एकाकी व्यापारी को
(B) एक साझेदारी फर्म को
(C) एक सहकारी समिति को
(D) उपर्युक्त सभी

91. (D) वैधानिक सभा केवल सार्वजनिक कम्पनी हेतु अनिवार्य है। यह सभा कम्पनी के जीवन काल में केवल एक बार होती है। बाकी अन्य व्यवसाय के विभिन्न स्वरूपों हेतु अनिवार्य नहीं है।

92. एक एकाकी व्यवसायी का दायित्व होता है—
(A) असीमित
(B) व्यवसाय की सम्पत्तियों तक सीमित
(C) उसके द्वारा लगायी गयी पूँजी तक सीमित
(D) इनमें से कोई नहीं

92. (A) एकाकी व्यवसाय तथा फर्म में साझेदारों का दायित्व असीमित होता है।

93. व्यावसायिक संगठन का सबसे प्राचीनतम स्वरूप है—
(A) सहकारी उपक्रम
(B) साझेदारी
(C) एकाकी व्यापार
(D) संयुक्त पूँजी कम्पनी

93. (C) व्यापारिक संगठन के निम्न स्वरूप होते हैं—
- एकाकी व्यापार
- फर्म
- हिन्दू अविभाजित परिवार
- संयुक्त पूँजी कम्पनी तथा
- सरकारी उपक्रम

एकाकी व्यापार, व्यावसायिक संगठन का सबसे प्राचीनतम रूप है।

94. मुद्रा प्रसार किसके कारण होता है ?
(A) अत्यधिक मुद्रा निर्गमन
(B) उत्पादन में कमी
(C) घाटे का बजट
(D) उपर्युक्त सभी

94. (D) मुद्रा प्रसार (Inflation) निम्न कारणों से होता है–

- अत्यधिक मुद्रा निर्गमन
- उत्पादन में कमी
- घाटे का बजट
- साख का सृजन आदि।

मुद्रा-स्फीति का अर्थ–'मुद्रा प्रसार' दो शब्दों से मिलकर बना है–'मुद्रा' तथा 'प्रसार'। 'प्रसार' का अर्थ है 'फैलाव' अथवा 'वृद्धि', अत: मुद्रा प्रसार का शाब्दिक अर्थ हुआ 'मुद्रा की मात्रा में वृद्धि'। लेकिन मुद्रा की मात्रा में प्रत्येक वृद्धि को 'मुद्रा प्रसार' अथवा मुद्रा-स्फीति की संज्ञा नहीं दी जा सकती है। मुद्रा की मात्रा में केवल वही 'वृद्धि प्रसार' कहलाती है, जिसके कारण मूल्यों में वृद्धि होती है। यदि मुद्रा की मात्रा में वृद्धि के कारण मूल्य-स्तर में वृद्धि होती है, तो उस स्थिति को मुद्रा प्रसार अथवा मुद्रा-स्फीति कहा जा सकता है।

मुद्रा प्रसार को रोकने या नियन्त्रित करने के प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं–

1. **सार्वजनिक व्यय में कमी**–मुद्रा प्रसार के समय सरकार को अपने व्ययों की मात्रा को जहाँ तक हो सके कम करने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा करने से मुद्रा की पूर्ति में होने वाली वृद्धि को कम किया जा सकता है।
2. **सार्वजनिक ऋण में वृद्धि**–ऐसी दशा में सरकार को चाहिए कि वह सार्वजनिक ऋण सम्बन्धी नीति में भी परिवर्तन करके मुद्रा-स्फीति को बढ़ने से रोके। जब जनता के पास व्यय करने हेतु मुद्रा की मात्रा कम होती है तो वस्तु के मूल्यों में होने वाली वृद्धि रुक जाती है।
3. **करों में वृद्धि**–मुद्रा प्रसार की दशा में सरकार नये कर लगाकर तथा पुराने करों की दरों में वृद्धि करके अर्थव्यवस्था में प्रचलित अतिरिक्त मुद्रा को इकट्ठा कर सकती है, जिससे मुद्रा प्रसार को रोकने में मदद मिलती है।
4. **बचतों को प्रोत्साहन**–मुद्रा प्रसार की दशा में इसे रोकने हेतु जनता द्वारा की जाने वाली बचतों को प्रोत्साहन देना है। यदि व्यक्ति अपनी आय का अधिक भाग बचाने लगे तो वह व्यय कम मात्रा में करेगा जिससे मुद्रा-स्फीति की दर को बढ़ने से रोकने में मदद मिलेगी। बचतों को प्रोत्साहित करने हेतु दिए जाने वाले ब्याज की दर में वृद्धि करना चाहिए तथा उस ब्याज को कर मुक्त करके जनता को बचत हेतु प्रेरित करना चाहिए।

95. अभिगोपन कमीशन निम्नलिखित में से किस आधार पर देय होता है ?

(A) अंशों के निर्गमन मूल्य पर
(B) अंशों के अंकित मूल्य पर
(C) अंशों के बाजार मूल्य पर
(D) अंशों पर प्राप्त याचना राशि पर

95. (B) अभिगोपन कमीशन अंशों तथा ऋणपत्रों के अंकित मूल्य पर दिया जाता है। इस कमीशन की अधिकतम सीमा निम्न है–

- पूँजी अंश पर = 5%
- ऋणपत्रों पर = $2\frac{1}{2}\%$

96. विषय जो सरकार के आय-व्यय से सम्बन्धित होता है, कहलाता है–

(A) राष्ट्रीय आय
(B) सकल घरेलू उत्पादन (जी.डी.पी.)
(C) राजस्व
(D) आर्थिक तंत्र

96. (C) राजस्व के अन्तर्गत सरकार के आय-व्यय का अध्ययन किया जाता है।

97. एक फर्म में साझेदारों की अधिकतम संख्या निर्धारित की गयी –

(A) अनुबन्ध अधिनियम के द्वारा
(B) साझेदारी अधिनियम के द्वारा
(C) आयकर अधिनियम के द्वारा
(D) इनमें से कोई नहीं

97. (D) फर्म में साझेदारों की अधिकतम संख्या कम्पनी अधिनियम 1956 के अन्तर्गत है। इस अधिनियम के अनुसार, सामान्य व्यावसायिक फर्म में साझेदारों की अधिकतम संख्या 20 होती है तथा बैंकिंग क्षेत्र में अधिकतम संख्या 10 होती है।

98. वस्तु विनिमय का मतलब है–

(A) माल को नगद बेचना
(B) माल को उधार बेचना
(C) माल को माल से बदलना
(D) माल को किश्तों में बेचना

98. (C) वस्तु विनिमय के अन्तर्गत माल को माल से बदलना होता है।

99. गार्नर **बनाम** मर्रे नियम लागू होता है, जब

(A) सब साझेदार दिवालिया हो जाएँ
(B) सब साझेदार सक्षम हों
(C) कुछ साझेदार दिवालिया हों
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

99. (A) गार्नर **बनाम** मर्रे के केस में कुछ साझेदार दिवालिया होते हैं तथा इन साझेदारों के घाटे को बाकी साझेदार अपनी पूँजी के अनुपात में वहन करेंगे।

100. एक साझेदारी फर्म योग्य (धन) नहीं प्राप्त कर सकती –

(A) बैंक ऋण
(B) सरकारी ऋण
(C) ऋणपत्र जारी करके
(D) साझेदार से ऋण

100. (C) साझेदारी फर्म, ऋणपत्र जारी करके धन इकट्ठा नहीं करते। ऋणपत्र के माध्यम से केवल कम्पनी ही धन की प्राप्ति करती है।

101. तलपट बनाकर जाँच की जाती है–

(A) व्यापार की तरलता की स्थिति
(B) व्यापार का वित्तीय परिणाम
(C) व्यापार में क्रय एवं विक्रय की राशि
(D) लेखांकन प्रविष्टियों की गणितीय शुद्धता

101. (D) तलपट बनाकर लेखांकन प्रविष्टियों की गणितीय शुद्धता की जाँच की जाती है। तलपट के अन्तर्गत डेबिट तथा क्रेडिट दोनों का योग बराबर होता है।

102. लागत जोकि उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन से प्रभावित नहीं होती है–

(A) कुल लागत
(B) स्थायी लागत
(C) परिवर्तनशील लागत
(D) अवसर लागत

102. (B) स्थायी लागत के अन्तर्गत उत्पादन की मात्रा जो भी हो, स्थायी लागत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। जैसे कारखाने का लगान, प्रबन्धन का वेतन आदि।

103. राबिन्स के अनुसार अर्थशास्त्र है–

(A) एक सामाजिक विज्ञान
(B) एक व्यक्तिगत विज्ञान
(C) दोनों (A) और (B)
(D) इनमें से कोई नहीं

103. (C) रॉबिन्स के अनुसार, अर्थशास्त्र एक सामाजिक तथा व्यक्तिगत विज्ञान दोनों है। उनके अनुसार अर्थशास्त्र के अन्तर्गत सीमित साधनों के माध्यम से समाज तथा व्यक्ति को अधिकतम संतुष्टि की प्राप्ति कैसे हो का अध्ययन किया जाता है।

104. 'X' तथा 'Y' के अभिप्रेरण सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है–

(A) मैस्लो ने (B) मैकग्रेगर ने
(C) हर्जबर्ग ने (D) आऊची ने

104. (B) X तथा Y सिद्धान्त, अभिप्रेरण का सिद्धान्त है। यह सिद्धान्त मैकग्रेगर ने दिया था।

X सिद्धान्त एक नकारात्मक सिद्धान्त है तथा Y सिद्धान्त एक तरह का सकारात्मक सिद्धान्त होता है।

105. निम्नलिखित में से किस संस्था को अनिवार्य अंकेक्षण कराना होता है ?
(A) सहकारी संस्थाओं
(B) जीवन बीमा कम्पनी
(C) ट्रस्ट
(D) उपर्युक्त सभी

105. (D) प्रश्न में वर्णित सभी संस्थाओं हेतु अंकेक्षण अनिवार्य है।

106. जब किसी सार्वजनिक उद्योगों के शेयर को बाजार में बेचा जाता है तब इसे कहा जाता है—
(A) वैश्वीकरण (B) निजीकरण
(C) विनिवेश (D) उदारीकरण

106. (C) सार्वजनिक उद्योगों के शेयर को जब खुले बाजार में बेचा जाता है तो इसे विनिवेश (Dis-investment) कहा जाता है।
उदारीकरण एक नई आर्थिक नीति है जिसके द्वारा देश में ऐसा आर्थिक वातावरण स्थापित करने के प्रयास किये जाते हैं जिससे देश के व्यवसाय व उद्योग स्वतंत्र रूप से विकसित हो सकें।
उदारीकरण का मतलब होता है व्यवसाय तथा उद्योग पर लगे प्रतिबन्धों को कम करना जिससे व्यवसायी तथा उद्यमियों को कार्य करने में किसी प्रकार की बाधाओं का सामना न करना पड़े।
उदारीकरण ने व्यापारिक दुनिया में क्रांतिकारी बदलाव किया है और सभी देशों हेतु अत्यधिक अवसर प्रदान किए हैं।
उदारीकरण नई औद्योगिक नीति का परिणाम है जो ''लाइसेंस प्रणाली'' को समाप्त कर देता है।
सरकार द्वारा व्यापार नीति को उदार बनाना जो देशों के बीच वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह पर टैरिफ, सब्सिडी और अन्य प्रतिबंधों को हटा रहा है, उदारीकरण के नाम से जाना जाता है।
निजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमे क्षेत्र या उद्योग को सार्वजनिक क्षेत्र से निजी क्षेत्र में स्थानांतरित किया जाता है। दूसरे शब्दों में हम इसे ऐसे भी कह सकते हैं कि निजीकरण से आशय ऐसी औद्योगिक इकाइयों को निजी क्षेत्र में हस्तांतरित किए जाने से है जो अभी तक सरकारी स्वामित्व एवं नियंत्रण में थी।
सार्वजनिक क्षेत्र सरकारी एजेंसियों द्वारा संचालित आर्थिक प्रणाली का हिस्सा है। निजीकरण में सरकारी सम्पत्तियों की बिक्री या निजी व्यक्तियों और व्यवसायों को किसी दिए गए उद्योग में भाग लेने से रोकने वाले प्रतिबंधों को हटाना भी शामिल हो सकता है।
निजीकरण के समर्थकों का कहना है कि निजी क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा अधिक कुशल प्रथाओं को बढ़ावा देती है, जो अंतत: बेहतर सेवा और उत्पाद, कम कीमत और कम भ्रष्टाचार उत्पन्न करती है।
दूसरी तरफ, निजीकरण के आलोचकों का तर्क है कि कुछ सेवाएँ - जैसे कि स्वास्थ्य देखभाल, उपयोगिताओं, शिक्षा और कानून प्रवर्तन-सार्वजनिक क्षेत्र में अधिक नियंत्रण सक्षम करने और अधिक न्यायसंगत पहुँच सुनिश्चित करने हेतु होना चाहिए।
वैश्वीकरण विभिन्न देशों के लोगों, कंपनियों और सरकारों के बीच बातचीत और एकीकरण की प्रक्रिया है। वैश्वीकरण में सम्पूर्ण विश्व को एक बाजार का रूप प्रदान किया जाता है। वैश्वीकरण से आशय विश्व अर्थव्यवस्था में आये खुलेपन, बढ़ती हुई अन्तर्निर्भरता तथा आर्थिक एकीकरण के फैलाव से है।
इसके अंतर्गत विश्व बाजारों के मध्य पारस्परिक निर्भरता उत्पन्न होती है तथा व्यवसाय देश की सीमाओं को पार करके विश्वव्यापी रूप धारण कर लेता है । वैश्वीकरण के द्वारा ऐसे प्रयास किये जाते हैं कि विश्व के सभी देश व्यवसाय एवं उद्योग के क्षेत्र में एक-दूसरे के साथ सहयोग एवं समन्वय स्थापित करें।
वैश्वीकरण में सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव दोनों हैं। एक व्यक्तिगत स्तर पर, वैश्वीकरण जीवन के मानक और जीवन की गुणवत्ता दोनों को प्रभावित करता है। व्यवसाय स्तर पर, वैश्वीकरण संगठन के उत्पाद जीवन चक्र और संगठन की बैलेंस शीट को प्रभावित करता है।

107. चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट होते हैं—
(A) अनिपुण अंकेक्षक
(B) सरकारी अंकेक्षक
(C) पेशेवर अंकेक्षक
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

107. (C) चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट एक तरह के पेशेवर अंकेक्षक होते हैं। इनके पास चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट की उपाधि होती है।

108. निम्नलिखित में से कौन-सा/कौन-से कार्य केन्द्रीय बैंक के होते हैं ?
(A) पत्र (नोट) मुद्रा जारी करना
(B) साख नियंत्रण करना
(C) व्यापारिक बैंकों पर नियंत्रण करना
(D) उपर्युक्त सभी

108. (D) डॉ. डी. कॉक के अनुसार केन्द्रीय बैंक के प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं—
1. पत्र (नोट) मुद्रा जारी करना।
2. साख नियन्त्रण करना।
3. व्यापारिक बैंकों पर नियन्त्रण करना।
4. देश के विदेशी विनिमय कोषों का संरक्षण।
5. खातों का समाशोधन, निपटारा तथा स्थानान्तरण।
6. व्यापारिक बैंकों के नकद कोषों का संरक्षण।
7. सरकार के लिए बैंकर, एजेण्ट तथा सलाहकार की हैसियत से काम करना।

109. एक गैर व्यापारिक संस्था के अंतिम खातों में क्या नहीं बनाया जाता है ?
(A) प्राप्ति एवं भुगतान खाता
(B) आय-व्यय खाता
(C) व्यापार खाता
(D) आर्थिक चिट्ठा

109. (C) एक गैर व्यापारिक संस्था का उद्देश्य लाभ कमाना नहीं होता है। इसलिए वह व्यापार एवं लाभ-हानि खाता नहीं बनाती, बल्कि इसके स्थान पर वह निम्नलिखित खाते तैयार करती है—
प्राप्ति एवं भुगतान A/c
आय एवं व्यय A/c
तत्पश्चात् वह बैलेंसशीट बनाती है। अत: विकल्प (C) सही है।

110. सेबी की स्थापना हुई और इसका प्रधान कार्यालय है—
(A) 1992, दिल्ली में (B) 1988, लखनऊ में
(C) 1988, मुम्बई में (D) 1988, कोलकाता में

110. (C) सेबी (SEBI) (Security Exchange Board of India) की स्थापना 1988 में हुई थी तथा इसका प्रधान कार्यालय मुम्बई में है।
सेबी का प्रबंधन छह सदस्यों द्वारा किया जाता है—एक अध्यक्ष (केन्द्र सरकार द्वारा नामित), दो सदस्य, (केंद्रीय मंत्रालयों के अधिकारी), एक सदस्य (आरबीआई से) और बाकी के दो सदस्यों को केन्द्र सरकार नामित करती है। सेबी का कार्यालय मुंबई में है। इसके क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता, दिल्ली और चेन्नई में स्थित हैं। वर्ष 1988 में सेबी की आरंभिक पूँजी लगभग 7.5 करोड़ रुपये थी जिसे इसके प्रवर्तकों

(आईडीबीआई, आईसीआईसीआई, आईएफसीआई) ने दिया था। इस धनराशि का निवेश किया गया था और इससे मिलने वाले ब्याज से सेबी के दैनिक खर्च की पूर्ति की जाती है। भारतीय पूँजी बाजार हेतु सभी वैधानिक शक्तियाँ सेबी को दी गई हैं।

सेबी के कार्य

1. निवेशकों के हितों की रक्षा करना और उपयुक्त उपायों से पूँजी बाजार को विनियमित करना।
2. शेयर बाजारों और अन्य प्रतिभूति बाजार के व्यापार को विनियमित करना।
3. शेयर ब्रोकरों, उप ब्रोकर, शेयर ट्रांस्फर एजेंट्स, न्यासियों, मर्चेंट बैंकरों, बीमा कंपनियों, पोर्टफोलियो मैनेजर आदि के कामकाज को विनियमित करना और उनका पंजीकरण करना।
4. म्यूचुअल फंडों के सामूहिक निवेश योजनाओं का पंजीकरण और विनियमन।
5. स्व-नियामक संगठनों को प्रोत्साहन प्रदान करना।
6. प्रतिभूति बाजारों के कदाचारों को समाप्त करना।
7. प्रतिभूति बाजारों से जुड़े लोगों को प्रशिक्षित करना और निवेशकों की शिक्षा को प्रोत्साहित करना।
8. प्रतिभूतियों के इनसाइडर ट्रेनिंग की जाँच करना।
9. प्रतिभूति बाजार में व्यापार करने वाले विभिन्न संगठनों के कामकाज की निगरानी करना और व्यवस्थित सौदे सुनिश्चित करना।

उपर्युक्त उद्देश्यों की प्राप्ति को सुनिश्चित करने हेतु अनुसंधान और जाँच को बढ़ावा देना।

111. एक सार्वजनिक कम्पनी के संचालक मण्डल का चुनाव कौन करता है ?
(A) सरकार (B) समता अंशधारी
(C) ऋण पत्रधारी (D) ग्राहक

111. (B) सार्वजनिक कम्पनी के संचालक मण्डल का चुनाव समता अंशधारियों द्वारा कम्पनी की साधारण सभा में किया जाता है।

112. व्यक्तियों का आपसी सम्बन्ध से बना संघ साझेदारी होता है—
(A) जब इसका उद्देश्य मानवता के कल्याण हेतु सेवाएँ प्रदान करना हो
(B) जब इसका उद्देश्य किसी पुण्यार्थ कार्य करना हो
(C) जब इसका उद्देश्य लाभार्जन के उद्देश्य से व्यापार करना हो
(D) उपर्युक्त सभी

112. (C) व्यक्तियों का आपसी सम्बन्ध से बना संघ साझेदारी होता है जब इसका उद्देश्य लाभार्जन के उद्देश्य से व्यापार करना हो।

113. श्रमिकों की कुशलता में वृद्धि होती है—
(A) समयानुसार मजदूरी पद्धति में
(B) कार्य-कुशलता मजदूरी पद्धति में
(C) कार्यानुसार मजदूरी पद्धति में
(D) उपर्युक्त सभी में

113. (B) श्रमिकों की कुशलता में वृद्धि, कार्य-कुशलता मजदूरी पद्धति में है। इस पद्धति के निम्न प्रमुख प्लान हैं—
- हाल्से प्रीमियम प्लान
- रोवन प्रीमियम प्लान

114. एक अंकेक्षक होता है—
(A) शिकारी कुत्ते के समान
(B) रखवाली करने वाले कुत्ते के समान
(C) एक बिल्ली के समान
(D) एक लावारिस कुत्ते के समान

114. (B) एक अंकेक्षक रखवाली करने वाले कुत्ते के समान होता है।

115. नयी मशीन लगाने हेतु दी गयी मजदूरी, मजदूरी खाते में डेबिट की गई, यह अशुद्धि है—
(A) भूल की (B) सिद्धांत की
(C) जोड़ने की (D) गलत खतियाने की

115. (B) नयी मशीन के स्थापना पर दी गयी मजदूरी से मशीन खाते को डेबिट किया जाता है न कि मजदूरी खाते को। यदि मजदूरी खाते को डेबिट किया गया है तो यह एक तरह का सैद्धान्तिक अशुद्धि है।

116. ह्रास की किस विधि के अंतर्गत स्थायी सम्पत्ति की राशि कभी भी घट कर शून्य नहीं होती ?
(A) सीधी रेखा विधि
(B) वार्षिकी विधि
(C) ह्रासित शेष विधि
(D) वर्षों के अंकों की योग विधि

116. (C) ह्रासित शेष विधि के अन्तर्गत स्थायी सम्पत्ति की राशि कभी भी शून्य नहीं होती है, क्योंकि इसके अन्तर्गत ह्रास सदैव स्थायी सम्पत्ति के ह्रासित मूल्य पर लगायी जाती है।

117. अवलोकन एवं सर्वेक्षण अनुसंधान विधियों से संग्रहीत आँकड़े हैं—
(A) प्राथमिक आँकड़े
(B) द्वितीयक आँकड़े
(C) दोनों प्राथमिक एवं द्वितीयक
(D) इनमें से कोई नहीं

117. (A) प्राथमिक आँकड़ों से आशय उन आँकड़ो से है, जो किसी सांख्यिकी अनुसंधानकर्ता द्वारा पहली बार आरम्भ से अंत तक नये सिरे से एकत्रित किए जाते हैं। प्राथमिक समंकों को एकत्र करने का प्रमुख विधियाँ निम्न हैं—
- अवलोकन एवं सर्वेक्षण अनुसंधान
- प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अनुसंधान
- सूचकों द्वारा प्रश्नावली भरवाकर सूचना प्राप्ति
- अप्रत्यक्ष मौखिक अनुसंधान आदि।

118. बैंक दर वह होती है जिस पर—
(A) व्यापारिक बैंक जनता को ऋण प्रदान करते हैं
(B) स्टेट बैंक व्यापारिक बैंकों को ऋण प्रदान करते हैं
(C) केन्द्रीय सरकार राज्य सरकारों को ऋण प्रदान करती है
(D) रिजर्व बैंक व्यापारिक बैंकों को ऋण प्रदान करते हैं

118. (D) बैंक दर वह दर होती है जिस पर रिजर्व बैंक व्यापारिक बैंकों को ऋण प्रदान करते हैं।

119. माल्थस के अनुसार भोजन की पूर्ति बढ़ती है—
(A) अंकगणितीय वृद्धि से
(B) औसत वृद्धि से
(C) ज्यामितिक वृद्धि से
(D) इनमें से कोई नहीं

119. (A) माल्थस के अनुसार भोजन की पूर्ति अंकगणितीय वृद्धि से बढ़ती है, जबकि जनसंख्या वृद्धि ज्यामितिक वृद्धि दर से बढ़ती है।

120. उस भारतीय का नाम बताइए जिसने अर्थशास्त्र में नोबल पुरस्कार प्राप्त किया है —
(A) प्रो.जे.के. मेहता
(B) डॉ. मनमोहन सिंह
(C) प्रो. अमर्त्य सेन
(D) डॉ. प्रणब मुखर्जी

120. (C) प्रो. अमर्त्य सेन को नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया है।

121. तलपट के भीतर दिया गया अदत्त वेतन दिखाया जाएगा—
(A) व्यापार खाते एवं आर्थिक चिट्ठे में
(B) लाभ और हानि खाते एवं आर्थिक चिट्ठे में
(C) आर्थिक चिट्ठे के दायित्व पक्ष में
(D) आर्थिक चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में

121. (C) तलपट के भीतर दिया गया अदत्त वेतन आर्थिक चिट्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाया जाता है। यदि अदत्त वेतन समायोजन में यानि तलपट के नीचे अतिरिक्त सूचना में दिया हो तो इसे लाभ-हानि खाते और आर्थिक चिट्ठे दोनों में दिखाते हैं।

122. व्यवसाय का सामाजिक उत्तरदायित्व है–

(A) ग्राहकों के प्रति

(B) सरकार के प्रति

(C) स्वयं के प्रति

(D) सभी के प्रति

122. (D) व्यवसाय का सामाजिक उत्तरदायित्व प्रश्न में वर्णित समस्त समुदायों के प्रति होता है।

123. आधुनिक अर्थशास्त्र का पिता किसे कहा जाता है?

(A) माल्थस (B) एडम स्मिथ

(C) रॉबिन्स (D) मार्शल

123. (B) आधुनिक अर्थशास्त्र के पिता एडम स्मिथ हैं, इन्होंने अर्थशास्त्र को धन का विज्ञान कहा है।

124. सभी समता अंशधारी होते हैं–

(A) कम्पनी के प्रतिनिधि

(B) कम्पनी के मालिक

(C) कम्पनी के ऋण द्वारा

(D) कम्पनी के ग्राहक

124. (B) समता अंशधारी कम्पनी के वास्तविक मालिक होते हैं।

125. कार्यालय के लैपटॉप को घरेलू उपयोग करना है–

(A) श्रम का गबन

(B) माल का गबन

(C) सम्पत्ति का गबन

(D) रोकड़ का गबन

125. (C) कार्यालय के लैपटॉप का घरेलू उपयोग करना, सम्पत्ति के गबन के अन्तर्गत आता है।

●●

प्रैक्टिस सेट-3

1. भारत में ''चिट्ठे के लेखा परीक्षण'' का तात्पर्य निम्नलिखित का लेखा परीक्षण है–
   (A) चिट्ठे तथा लाभ-हानि खाते की मदें
   (B) चिट्ठे की मदें
   (C) चिट्ठे की सम्पत्ति सम्बन्धी मदें
   (D) चिट्ठे की दायित्व सम्बन्धी मदें

2. एक अधिकारी अपने अधीनस्थ को प्रतिनिधायन कर सकता है–
   (A) केवल अधिकार
   (B) केवल दायित्व
   (C) दोनों अधिकार एवं दायित्व
   (D) न ही अधिकार और न ही दायित्व

3. अपूर्ण ठेके पर हानि को अन्तरित किया जाता है–
   (A) लाभ-हानि खाता को
   (B) क्रियामाण कार्य को
   (C) अंशत: (A) एवं (B) को
   (D) प्रमाणित कार्य को

4. स्थाई लागत = ₹ 4,00,000 लाभ = ₹ 2,00,000 तथा लाभ-मात्रा अनुपात = 40% हो, तो बिक्री की राशि होगी–
   (A) ₹ 1,00,000 (B) ₹ 12,00,000
   (C) ₹ 15,00,000 (D) ₹ 8,00,000

5. फर्म का विघटन हो जाता है–
   (A) किसी एक साझेदार की मृत्यु अथवा उसके दिवालिया हो जाने पर
   (B) किसी एक साझेदार के सेवानिवृत्त होने के द्वारा
   (C) एक साझेदार को छोड़ कर अन्य सभी साझेदारों के दिवालिया हो जाने पर
   (D) अवधि समाप्त हो जाने के द्वारा

6. कुल प्रयुक्त पूँजी बराबर होती है–
   (A) स्थाई सम्पत्तियों के
   (B) स्थाई सम्पत्तियों + शुद्ध कार्यशील पूँजी के
   (C) कुल सम्पत्तियों (संचित ह्रास को सम्मिलित करते हुए) के
   (D) शुद्ध मूल्य के

7. अभिप्रेरण के X सिद्धान्त के अनुसार–
   (A) श्रमिक स्व-मार्गदर्शन तथा स्व-नियंत्रण में विश्वास करते हैं।
   (B) श्रमिक रचनात्मक तथा मेहनती होते हैं।
   (C) श्रमिकों को मार्गदर्शन तथा कड़े नियंत्रण की आवश्यकता होती है।
   (D) श्रमिक स्वयं अभिप्रेरित होते हैं।

8. निम्न में से कौन क्षैतिज फाइलिंग पद्धति नहीं है?
   (A) पड़ी फाइल (B) पायलट फाइल
   (C) शैनन फाइल (D) पार्श्व फाइल

9. मितव्ययी आदेश मात्रा विश्लेषण का प्रयोग किया जाता है–
   (A) अनुपात विश्लेषण के लिए
   (B) बजटरी नियंत्रण के लिए
   (C) स्कन्ध नियंत्रण के लिए
   (D) विक्रय बजटिंग के लिए

10. एक कंपनी ने ₹ 60,000 मूल्य के ऋणपत्र ₹ 3,000 बट्टे पर 1 अप्रैल, 1996 को निर्गमित किये। वे 3 समान किस्तों में 31 मार्च को प्रत्येक वर्ष विमोचन किये जाते हैं। कंपनी का वित्त वर्ष 31 दिसम्बर को प्रत्येक वर्ष समाप्त होता है। दूसरे वर्ष में बट्टे की कितनी राशि अपलिखित होगी ?
    (A) ₹ 1,000 (B) ₹ 625
    (C) ₹ 1,500 (D) ₹ 1,125

11. पूर्ण प्रतियोगी बाजार में फर्म होगी–
    (A) एक मूल्य निर्धारक
    (B) एक मूल्य ग्रहण करने वाली
    (C) दूसरी फर्मों के प्रवेश पर बाधायें डालने वाली
    (D) प्रतियोगिता से भिन्न वस्तु का उत्पादन करने वाली

12. निम्नांकित में से कौन-सी त्रुटि तलपट द्वारा प्रदर्शित नहीं होती है ?
    (A) लिपिकीय त्रुटियाँ
    (B) सैद्धांतिक त्रुटियाँ
    (C) शेष निकालने की त्रुटि
    (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

13. दोहरा खाता प्रणाली प्रयुक्त होती है–
    (A) उपभोक्ता उद्योगों के लिए
    (B) रसायन उद्योगों के लिए
    (C) सार्वजनिक उपक्रमों के लिए
    (D) सार्वजनिक उपयोगिता वाली संस्था के लिए

14. एक वर्ष में देश के अन्दर उत्पादित कुल वस्तुओं एवं सेवाओं में से यदि ह्रास घटा दें तो हमें प्राप्त होगा–
    (A) सकल राष्ट्रीय उत्पाद
    (B) शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद
    (C) सकल घरेलू उत्पाद
    (D) शुद्ध घरेलू उत्पाद

15. निर्यात व्यापार प्रक्रिया में निम्नलिखित का सही क्रम क्या है ?
    (1) जहाजी बिल्टी
    (2) सीमा शुल्क औपचारिकतायें
    (3) बीजक तैयार करना
    (4) इन्डेन्ट की प्राप्ति
    अपना उत्तर निम्नलिखित उत्तर संकेत में से चुनिए :
    (A) 1, 2, 3, 4 (B) 2, 3, 1, 4
    (C) 4, 2, 1, 3 (D) 1, 4, 2, 3

16. पूर्ण प्रतियोगिता में–
    (A) AR = MR (B) AR > MR
    (C) AR < MR (D) इनमें से कोई नहीं

17. संचालकों का अवकाश ग्रहण करना आवश्यक नहीं है–
    (A) लोक उद्यान में
    (B) सहकारी उपक्रम में
    (C) सार्वजनिक कम्पनी में
    (D) निजी कम्पनी में

18. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए–
    कथन (A) : दोहरा खाता प्रणाली में कम्पनी के अंतिम लेखे उसकी परिसम्पत्तियों की सच्ची हालत बताने में असफल रहते हैं।
    तर्क (R) : क्योंकि कम्पनी की परिसम्पत्तियाँ पूर्णतया क्षीण हो जाने पर भी अपने लागत मूल्य पर दर्शाई जाती हैं।
    अब नीचे दी गई संकेत योजना के अनुसार अपना उत्तर चुनिये–
    (A) A और R दोनों सही हैं, और R, A की सही व्याख्या है
    (B) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है
    (C) A सत्य है, परन्तु R असत्य है
    (D) A असत्य है, परन्तु R सत्य है

19. एक व्यक्ति, एक समय में अधिक-से-अधिक कितनी कम्पनियों का संचालक हो सकता है ?
    (A) 5 (B) 7
    (C) 10 (D) 20

20. एक अवयस्क–

(A) अन्य साझेदारों की तरह साझेदार हो सकता है।

(B) केवल लाभों के विभाजन हेतु साझेदार हो सकता है।

(C) साझेदार नहीं हो सकता।

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

21. स्वामियों के स्वत्व में कमी होती है–

(A) बोनस अंशों के निर्गमन से

(B) ऋणपत्रों के विमोचन से

(C) पूर्वाधिकारी अंशों के विमोचन से

(D) भवन को खरीदने से

22. सम्पत्तियाँ, जिन्हें बहुत आसानी से रोकड़ में परिवर्तित किया जा सकता हैं–

(A) चालू सम्पत्तियाँ

(B) स्थायी सम्पत्तियाँ

(C) काल्पनिक (अवास्तविक) सम्पत्तियाँ

(D) तरल सम्पत्तियाँ

23. प्रबन्धन के निम्नलिखित कार्य किस क्रम में सम्पन्न होते हैं ?

(i) संगठन (ii) नियन्त्रण

(iii) नियोजन (iv) निदेशन

(A) (iii), (i), (ii), (iv)

(B) (i), (ii), (iii), (iv)

(C) (iii), (i), (iv), (ii)

(D) (iii), (iv), (i), (ii)

24. अंकेक्षण, जिसे अंतिम लेखा तैयार होने के पश्चात् किया जाता है, कहलाता है–

(A) सामयिक अंकेक्षण

(B) सतत् अंकेक्षण

(C) अंतरिम अंकेक्षण

(D) अनियमित अंकेक्षण

25. साझेदारों के मध्य समझौते के अभाव में किसी साझेदार के ऋण पर ब्याज दिया जाता है, निम्न दर से–

(A) 4% (B) 5%

(C) 6% (D) 10%

26. उपभोक्ता की तटस्थता वक्र का ढाल होता है–

(A) धनात्मक (B) ऋणात्मक

(C) लम्बवत् (D) समानान्तर

27. प्रदत्त चालू अनुपात = 2.8

अम्ल परीक्षण अनुपात = 1.5

कार्यशील पूँजी = ₹ 1,62,000

तरल सम्पत्ति क्या होगी ?

(A) ₹ 2,52,000 (B) ₹ 1,35,000

(C) ₹ 90,000 (D) ₹ 2,43,000

28. निवेश पर प्रत्यय अनुपात है–

(A) शुद्ध लाभ तथा प्रयुक्त पूँजी के बीच

(B) निवेश तथा लाभ के बीच

(C) विक्रय तथा निवेशित पूँजी के बीच

(D) शुद्ध लाभ तथा लाभांश के बीच

29. वैधानिक अंकेक्षण अनिवार्य है–

(A) सभी सार्वजनिक सीमित कम्पनियों के लिए

(B) सभी निजी सीमित कम्पनियों के लिए

(C) सभी संयुक्त पूँजी वाली सीमित कम्पनियों के लिए

(D) सभी व्यापारिक प्रतिष्ठानों के लिए

30. जब अंशों का हरण किया जाता है तो पूँजी खाते को डेबिट किया जाता है–

(A) जब्त की गयी राशि से

(B) अंशों पर माँगी गयी राशि से

(C) अंशों की चुकता राशि से

(D) पूँजी संचय की राशि से

31. नेतृत्व के आकस्मिकता सिद्धांत का प्रतिपादन किया था–

(A) क्राइस आर्गरिस ने

(B) फीडलर ने

(C) पीटर ड्रकर ने

(D) उपर्युक्त में से किसी ने नहीं

32. भारत में लेखांकन मानकों का निर्धारण होता है–

(A) भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) द्वारा

(B) कम्पनी लॉ बोर्ड द्वारा

(C) इन्स्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट एण्ड वर्क्स एकाउन्टेन्ट्स ऑफ इंडिया द्वारा

(D) इन्स्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट्स ऑफ इंडिया द्वारा

33. एक फर्म जब 400 इकाइयों का उत्पादन करती है तो उसकी कुल लागत ₹ 6,000 आती है तथा 410 इकाइयों का उत्पादन करने पर कुल लागत ₹ 7,500 आती, तो उसकी सीमान्त लागत होगी–

(A) ₹ 1500 (B) ₹ 3750

(C) ₹ 150 (D) इनमें से कोई नहीं

34. निम्न में से किसे अंकेक्षण की 'रीढ़ की हड्डी' कहा जाता है?

(A) सम्पत्तियों का समापन

(B) आन्तरिक जाँच

(C) प्रमाणन

(D) आन्तरिक अंकेक्षण

35. भारतीय रेलवे उदाहरण है एक–

(A) विभागीय उपक्रम का

(B) सार्वजनिक निगम का

(C) सरकारी कम्पनी का

(D) स्वायत्त उपक्रम का

36. निम्न में से किस वर्ष में औद्योगिक नीति प्रभाव नहीं घोषित हुआ था ?

(A) 1948 (B) 1956

(C) 1979 (D) 1985

37. माल के आयात हेतु विदेशी विनिमय स्वीकृत करता है–

(A) एक्जिम बैंक

(B) भारतीय रिजर्व बैंक

(C) स्टेट बैंक

(D) वाणिज्य मंत्रालय

38. 'अ' और 'ब' के फर्म की ख्याति का मूल्य ₹ 30,000 है। पुस्तकों में इसे ₹ 12,000 प्रदर्शित किया गया है। 'स' को 1/4 भाग हेतु प्रवेश किया गया। उसे ख्याति के लिए जो राशि लानी चाहिए, वह होगी–

(A) ₹ 4,500 (B) ₹ 3,000

(C) ₹ 7,500 (D) ₹ 10,500

39. निम्नांकित में से कौन-सी संस्था एस.डी.आर स्वीकृत करती है?

(A) आई.बी.आर.डी. (B) आई.डी.ए.

(C) यू.एन.डी.पी. (D) आई.एम.एफ.

40. यदि माँग पूर्ण बेलोचदार है, तो कीमत में 15% की वृद्धि होने पर वस्तु की माँग में–

(A) 15% की वृद्धि होगी

(B) 15% की कमी होगी

(C) 7.5% की कमी होगी

(D) कोई वृद्धि या कमी नहीं होगी

41. A, B और C साझेदारों के पूँजी खातों में क्रमशः ₹ 5,000, ₹ 10,000 और ₹ 20,000 का जमा शेष था, जबकि फार्म का समापन हुआ तथा सम्पत्तियों का टुकड़ों में विक्रय हुआ। यदि प्रथम किस्त से ₹ 10,000 प्राप्त हुआ तथा गार्नर **बनाम** मर्रे का नियम लागू हो तो साझेदारों में वितरण होगा–

(A) ₹ 3333, ₹ 3333, ₹ 3334

(B) ₹ 1667, ₹ 3333, ₹ 5000

(C) ₹ 1429, ₹ 2857, ₹ 5714

(D) ₹ 1500, ₹ 3000, ₹ 5500

42. चालू अनुपात है–

(A) चल सम्पत्ति एवं चल दायित्व के बीच अनुपात

(B) तरल सम्पत्ति एवं चल दायित्व के बीच अनुपात

(C) ऋण एवं समता पूँजी के बीच अनुपात

(D) स्थायी समिति एवं विक्रय के बीच अनुपात

43. फर्म की तरलता के आकलन में अधिक सही दिशा-निर्देशन प्रदान किया जाता है–

(A) चालू अनुपात द्वारा

(B) त्वरित अनुपात द्वारा
(C) प्राप्य बिल आवर्त अनुपात द्वारा
(D) रहतिया-आवर्त अनुपात द्वारा

44. यदि फर्म का माँग-वक्र उद्योग के माँग-वक्र के अनुरूप है तो फर्म होगी—
(A) पूर्ण प्रतियोगिता (B) एकाधिकारी
(C) अल्पाधिकारी (D) द्वियाधिकारी

45. समामेलन के पूर्व लाभों का प्रयोग किस कार्य के लिए नहीं किया जा सकता है ?
(A) पूँजीगत हानि को अपलिखित करने के लिए
(B) ख्याति को अपलिखित करने के लिए
(C) पूँजी संचय का निर्माण करने के लिए
(D) लाभांश वितरण के लिए

46. निम्न में कौन उद्योगों को ऋण प्रदान करने वाली प्रसिद्ध संस्था नहीं है ?
(A) IDBI (B) IMF
(C) IFCI (D) SFCs

47. भारत में विपणन सहकारिताओं का शीर्षस्थ निकाय है—
(A) इफको (IFFCO)
(B) कृभको (KRIBHCO)
(C) नाफेड (NAFED)
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

48. एक भारतीय नागरिक जो रोजगार हेतु विदेश जाता है, उसे निवासी होने के लिए भारत में कम-से-कम ठहरना होगा—
(A) 182 दिन (B) 90 दिन
(C) 60 दिन (D) 180 दिन

49. कोष प्रवाह विवरण के अन्तर्गत 'कोष' शब्द का अर्थ होता है—
(A) नकद
(B) चालू सम्पत्तियाँ
(C) चालू देनदारियों
(D) चालू सम्पत्ति-चालू देनदारियाँ

50. कम्पनी अधिनियम, 1956 के अन्तर्गत 'प्रावधान' का अर्थ निम्नलिखित के लिए लाभों को रोके रखना है—
(A) किसी ऐसे ज्ञात दायित्व के लिए, जिसकी राशि बहुत सही रूप में निर्धारित की जा सकती है
(B) किसी ऐसे ज्ञात दायित्व के लिए, जिसकी राशि बहुत सही रूप में निर्धारित नहीं की जा सकती
(C) किसी अज्ञात दायित्व के लिए
(D) किसी सामान्य या विशेष उद्देश्य के लिए

51. जबकि प्रारम्भिक स्टॉक ₹ 50,000 है तथा अन्तिम स्टॉक ₹ 60,000 है तथा विक्रय की लागत ₹ 2,20,000 है तो स्टॉक आवर्ती अनुपात होगा—
(A) 2 बार (B) 3 बार
(C) 4 बार (D) 5 बार

52. प्रमाणन रीढ़ की हड्डी है—
(A) लेखांकन की
(B) लागत की
(C) अंकेक्षण की
(D) उपर्युक्त में से किसी की नहीं

53. जब वार्षिक सामान्य सभा में लेखा परीक्षक की नियुक्ति नहीं की जाती तो उसकी नियुक्ति की जाती है—
(A) कम्पनी लॉ बोर्ड के द्वारा
(B) इन्स्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउण्टेण्टस ऑफ इण्डिया द्वारा
(C) एक विशेष सभा में अंशधारियों द्वारा
(D) केन्द्रीय सरकार द्वारा

54. व्यवसाय की सम्पत्ति ₹ 21,315 है तथा दायित्व ₹ 4,120 है। स्वामी पूँजी होगी—
(A) ₹ 21315 (B) ₹ 17195
(C) ₹ 25435 (D) ₹ 4120

55. निविदा मूल्य अभिव्यक्त करता है—
(A) कुल उत्पादन लागत को
(B) विक्रय लागत को
(C) अनुमानित विक्रय मूल्य को
(D) गत अवधि के लागत-पत्रक को

56. किसी सम्पत्ति की लागत, अवशिष्ट मूल्य तथा कार्यशील जीवन क्रमशः ₹ 10,000, ₹ 1,000 तथा 3 वर्ष है। प्रथम वर्ष में, सम्पत्ति पर वर्ष योग विधि के अनुसार ह्रास की राशि होगी—
(A) ₹ 5,000 (B) ₹ 4,500
(C) ₹ 3,333 (D) ₹ 3,000

57. कम्पनी के स्थिति-विवरण में निम्नलिखित मदें किस क्रम में दर्शाई जानी चाहिए?
(a) स्थायी परिसम्पत्ति
(b) स्थायी निवेश के रूप में रखे गये अंश
(c) चालू परिसम्पत्ति
(d) लाभ-हानि डेबिट
अपना उत्तर निम्नलिखित उत्तर-संकेत में से चुनिये—
(A) a b c d
(B) c b a d
(C) a c b d
(D) d c a b

58. मानव संसाधन से सम्बन्धित आँकड़ों का चिन्हीकरण एवं मापन कहलाता है—
(A) मूल्य सम्वर्द्धन लेखांकन
(B) सामाजिक लेखांकन
(C) मानव संसाधन लेखांकन
(D) मानव संसाधन प्रबन्धन

59. निम्नलिखित में से कौन-सा लेखांकन का कार्य नहीं है?
(A) व्यवस्थित अभिलेख रखना
(B) व्यवसाय की परिसम्पत्तियों को सुरक्षित रखना
(C) परिणामों को अधिकतम करना
(D) कानूनी आवश्यकताओं का पालन करना

60. कुल देनदार खाते में निम्नलिखित प्रविष्ट होगा—
(A) नकद विक्रय (B) उधार विक्रय
(C) कुल विक्रय (D) इनमें से कोई नहीं

61. निम्न में से कौन-सी अशुद्धि तलपट के मिलान में बाधक नहीं होगी?
(A) खाते के गलत पक्ष में लिखना
(B) खातों के गलत योग लगाना
(C) क्षतिपूरक अशुद्धि
(D) खातों के शेष निकालने में गलती

62. सम्प्रेषण के लिए निम्नलिखित कदम किस क्रम में उठाये जाते हैं ?
(a) समस्या के समाधान के विकास के लिए लोगों का सहयोग प्राप्त करना
(b) विचारों या निर्णयों का सम्प्रेषण
(c) विचार या समस्या को स्पष्ट करना
(d) सम्प्रेषण की प्रभावशीलता का मापन करना
अपना उत्तर निम्नलिखित कूट में से चुनिए—
(A) a, b, c और d (B) d, c, a और b
(C) d, b, a और c (D) c, a, b और d

63. तलपट से प्रदर्शित निम्नलिखित मदों में से कौन-सी मद व्यापार खाते में डेबिट होगी ?
(A) अदत्त मजदूरी
(B) मजदूरी तथा वेतन
(C) मजदूरी का अग्रिम भुगतान
(D) इनमें से कोई नहीं

64. जब मूल्यों में वृद्धि हो रही हो, स्टॉक का मूल्यांकन किया जाना चाहिए—
(A) पहले आना पहले जाना विधि से
(B) बाद में आना पहले जाना विधि से
(C) साधारण औसत विधि से
(D) भारांकित औसत विधि से

65. प्रबन्धकीय नियन्त्रण किया जाता है—
(A) निम्न स्तरीय प्रबन्धकों द्वारा
(B) मध्यम स्तरीय प्रबन्धकों द्वारा
(C) उच्च स्तरीय प्रबन्धकों द्वारा
(D) सभी स्तरीय प्रबन्धकों द्वारा

66. गौतम तथा महावीर एक फर्म में 5 : 3 के अनुपात में साझेदार थे। उन्होंने नवीन को 1/5 भाग के

लिए साझेदार बनाया। साझेदारों का नया लाभ-हानि अनुपात होगा–

(A) 5 : 3 : 1

(B) 5 : 3 : 2

(C) 5 : 3 : 3

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

67. यदि प्रारम्भिक रहतिया ₹ 5,000, क्रय ₹ 15,000, प्रत्यक्ष व्यय ₹ 2,000 एवं अन्तिम रहतिया ₹ 2,500 था, तो बेचे गए माल की लागत थी–

(A) ₹ 20,000 (B) ₹ 19,500

(C) ₹ 21,500 (D) ₹ 22,000

68. प्रबन्धन के कार्यों को अभिव्यक्त करने के लिए POSDCORB सूत्र दिया गया है–

(A) लूथर गुलिक द्वारा

(B) हेनरी फेयॉल द्वारा

(C) अर्नेस्ट डेल द्वारा

(D) इनमें से कोई नहीं

69. यदि मध्यका = 27 और माध्य = 30 तो भूयिष्ठक होगा–

(A) 20 (B) 21

(C) 22 (D) 23

70. दो अंकों 8 और 18 का गुणोत्तर माध्य होगा–

(A) 12 (B) 13

(C) 15 (D) 11.09

71. एक सामान्य व्यवसाय के लिए एक साझेदारी फर्म में साझेदारों की न्यूनतम और अधिकतम संख्या होती है–

(A) 2 एवं 7 (B) 2 एवं 10

(C) 7 एवं 50 (D) 2 एवं 20

72. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए तथा सूची के नीचे दिए गए कूटों का प्रयोग करते हुए सही उत्तर चुनिए–

	सूची-I		**सूची-II**
(a)	वैज्ञानिक प्रबंध	1.	पीटर एफ.ड्रकर
(b)	प्रबंध के चौदह सिद्धांत	2.	हेनरी फेयॉल
(c)	सेविवर्गीय प्रबंध	3.	रॉबर्ट ओवेन
(d)	एम.बी.ओ. (उद्देश्यों के लिये प्रबन्ध)	4.	एफ.डब्ल्यू. ट्रेलर

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	2	3	1
(B)	4	1	3	2
(C)	2	4	1	3
(D)	1	3	2	4

73. वैधानिक अंकेक्षक कर्त्तव्य बाध्य है–

(A) प्रबन्धकीय प्रक्रियाओं तथा कार्य-विधियों के पुनरीक्षण हेतु

(B) कम्पनी विधि के प्रावधानों के अनुरूप कम्पनी के अंतिम लेखों को बनाने के लिए

(C) कम्पनी के सदस्यों के समक्ष रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए

(D) कम्पनी को सम्पत्तियों के भौतिक सत्यापन के लिए

74. एक व्यवसाय का शुद्ध उधार विक्रय ₹ 1,75,000 था। देनदार आवर्त अनुपात 8 गुना है। वर्ष के अन्त के देनदार प्रारम्भ के देनदारों से ₹ 7,000 अधिक थे। प्रारम्भ के देनदार होंगे–

(A) ₹ 18,375 (B) ₹ 21,875

(C) ₹ 25,375 (D) इनमें से कोई नहीं

75. निम्नांकित में से कौन-सा सही नहीं है ?

(A) क्रय + प्रारम्भिक स्टॉक – बिक्रीत माल की लागत = अन्तिम स्टॉक

(B) प्रारम्भिक स्टॉक + क्रय – अन्तिम स्टॉक = बिक्रीत माल की लागत

(C) अन्तिम स्टॉक + बिक्रीत माल की लागत – क्रय = प्रारम्भिक स्टॉक

(D) बिक्रीत माल की लागत – अन्तिम स्टॉक – क्रय = प्रारम्भिक स्टॉक

76. 31 दिसम्बर, 2007 को एक फर्म की सम्पत्तियाँ और दायित्व क्रमशः ₹ 40,000 और ₹ 30,000 थे। फर्म का समापन हो गया और लेनदारों को प्रति ₹ 60 पैसे का भुगतान किया गया। वसूली पर हानि थी–

(A) ₹ 10,000 (B) ₹ 12,000

(C) ₹ 18,000 (D) ₹ 22,000

77. सहकारी संगठन में सदस्यों को मतदान का अधिकार होता है–

(A) उनके द्वारा खरीदे गये अंशों की संख्या के अनुपात में

(B) उनके द्वारा लगाई गई पूँजी के अनुपात में

(C) समान मताधिकार

(D) उनके द्वारा कुल आपूर्ति की गई राशि के अनुपात में

78. चेम्बर ऑफ कॉमर्स स्वरूप है–

(A) संघ का

(B) एशोसिएशन का

(C) पूर्ण समेकन

(D) आंशिक समेकन का

79. टोबिन टैक्स है, इस पर लागू एक का–

(A) निर्यात

(B) आयात

(C) विदेशी मुद्रा से लेन-देन

(D) बिक्री

80. एक साझेदारी फर्म कोष (धन) नहीं प्राप्त कर सकती है–

(A) बैंक ऋण

(B) सरकारी ऋण

(C) ऋणपत्र जारी करके

(D) साझेदार से ऋण

81. निम्नलिखित में से कौन एक कम्पनी का सबसे महत्वपूर्ण प्रलेख होता है ?

(A) पार्षद् सीमानियम

(B) पार्षद् अंतर्नियम

(C) प्रविवरण

(D) अंकेक्षक रिपोर्ट

82. खनिज जमाओं की दशा में ह्रास की सर्वश्रेष्ठ नीति कौन-सी है ?

(A) शून्यीकरण

(B) पुनर्मूल्यांकन

(C) वार्षिकी

(D) उक्त में से कोई नहीं

83. रेखा और सहायक संगठन किस का विस्तार है ?

(A) क्रियात्मक संगठन का

(B) रेखा संगठन का

(C) अनौपचारिक संगठन का

(D) समिति संगठन का

84. A और B एक व्यवसाय के लाभ का विभाजन 3 : 2 के अनुपात में कर रहे थे। उन्होंने C का प्रवेश कराने का निर्णय लिया। C जो A से उसके लाभ का $\frac{1}{3}$ तथा B से उसके लाभ $\frac{1}{2}$ भाग प्राप्त करता है। नया लाभ विभाजन अनुपात होगा–

(A) 3 : 2 : 5 (B) 2 : 1 : 2

(C) 3 : 2 : 1 (D) 3 : 2 : 2

85. एक संगठन का तुलन पत्र दिखाता है उस संगठन की वित्तीय स्थिति–

(A) पूरे वर्ष के लिए

(B) उस दिन के लिए जब वह तैयार किया गया

(C) एक महीने के लिए

(D) एक सप्ताह के लिए

86. निम्न में से किस कार्य को करने के लिए फ्रैंकिंग मशीन प्रयोग की जाती है ?

(A) एक-पत्र की बहुत-सी प्रतियाँ निकालने के लिए

(B) टिकट लगाने के लिए

(C) लेखांकन कार्य के लिए

(D) पंचिंग कार्ड के लिए

87. 'थ्योरी' 'X' व 'थ्योरी' 'Y' किसके द्वारा प्रतिपादित की गई है ?
(A) मैस्लो (B) हर्जबर्ग
(C) मैकग्रेगर (D) पीटर एफ.ड्रकर

88. गार्नर **बनाम** मर्रे के निर्णय के अनुसार किसी विपरीत समझौते के अभाव में दिवालिया साझेदार की कमी अन्य ऋण-शोधन क्षम्य साझेदारों द्वारा पूरी की जानी चाहिए–
(A) लाभ-हानि विभाजन अनुपात में
(B) फर्म के विघटन के पश्चात् उत्पन्न पूँजी अनुपात में
(C) फर्म के विघटन के पूर्व विद्यमान पूँजी अनुपात में
(D) समान अनुपात में

89. एन्टीफोर्ट ट्रेड का अर्थ है–
(A) आयात व्यापार
(B) निर्यात व्यापार
(C) विदेशी व्यापार
(D) फिर से निर्यात के लिए आयात

90. अंशधारियों की निधि की राशि क्या होगी यदि समता अंश पूँजी ₹ 16,00,000, 8% पूर्वाधिकारी अंश पूँजी ₹ 2,00,000, सामान्य संचय ₹ 73,000, लाभ हानि खाता शेष (क्रेडिट) ₹ 41,000, प्रारम्भिक व्यय ₹ 20,000 तथा अल्पकालीन दायित्व ₹ 30,000 है?
(A) ₹ 15,00,000 (B) ₹ 18,94,000
(C) ₹ 19,14,000 (D) ₹ 19,34,000

91. यदि बिक्री ₹ 1,20,000, सकल लाभ लागत का $\frac{1}{3}$, क्रय ₹ 98000 और अन्तिम रहतिया ₹ 18000 का हो तो आरम्भिक रहतिया होगा–
(A) ₹ 10,000 (B) ₹ 8,000
(C) शून्य (D) ₹ 40,000

92. भारार्पण किया जा सकता है–
(A) अधिकार का (B) उत्तरदायित्व का
(C) जवाबदेही का (D) इनमें से कोई नहीं

93. एक फर्म में साझेदार–
(A) बाहरी व्यक्ति को अपना हित हस्तान्तरित नहीं कर सकता
(B) बाहरी व्यक्ति को अपना हित बहुमत साझेदारों की स्वीकृति से हस्तांतरित कर सकता है
(C) बाहरी व्यक्ति को अपना हित सभी साझेदारों की स्वीकृति के बिना हस्तांतरित कर सकता है
(D) बाहरी व्यक्ति को अपना हित सभी साझेदारों की स्वीकृति से हस्तांतरित कर सकता है।

94. कीमत सूचकांक निकालने में आधार वर्ष की कीमत का माना जाता है–
(A) 100 (B) 200
(C) 300 (D) 400

95. मिश्रित अर्थव्यवस्था का अर्थ है–
(A) कृषि एवं औद्योगिक क्षेत्र का संतुलित विकास
(B) ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र का सम्मिलित विकास
(C) ग्रामीण तथा शहरी गरीबों के मध्य सम्पत्ति का बराबर विभाजन
(D) निजी एवं सरकारी क्षेत्र का सह अस्तित्व

96. सामान्यतया देश का आम बजट संसद में प्रस्तुत किया जाता है इनके द्वारा–
(A) प्रधानमंत्री द्वारा (B) अध्यक्ष द्वारा
(C) वित्तमंत्री द्वारा (D) राष्ट्रपति द्वारा

97. वर्ष में नकदी बिक्री — ₹ 40,000
वर्ष में ग्राहकों से वसूल की गई रकम– ₹ 1,26,000
वर्ष के अन्त में ग्राहकों से वसूली योग्य रकम वर्ष के प्रारम्भ में वसूली-योग्य रकम की तुलना में ₹ 4,940 कम है।
वर्ष में ₹ 1,300 का एक खाता मूल्य-विहीन निश्चित किया गया। वर्ष में उधार बिक्री की राशि थी–
(A) ₹ 1,27,000 (B) ₹ 1,22,360
(C) ₹ 1,32,940 (D) ₹ 1,36,730

98. वित्तीय विश्लेषण में प्रयोग किया जाने वाला ''डयू पॉन्ट चार्ट'' संबंधित है–
(A) पूँजी संरचना के विश्लेषण से
(B) तरलता की स्थिति के विश्लेषण से
(C) संपूर्ण निष्पादन के विश्लेषण से
(D) अंश मूल्यों के उतार-चढ़ाव के विश्लेषण से

99. निम्नांकित में से किनको उत्कृष्ट प्रतिभूतियाँ कहा जाता है?
(A) औद्योगिक प्रतिभूतियाँ
(B) सरकारी और अर्द्ध सरकारी प्रतिभूतियाँ
(C) अंश और ऋणपत्र
(D) कम्पनी के ऋणपत्र

100. किसी फर्म के तरलता स्तर के सम्बन्ध में अधिक उपयुक्त मार्गदर्शन प्रदान करता है–
(A) चालू अनुपात
(B) प्राप्य-विक्रय अनुपात
(C) त्वरित अनुपात
(D) सामग्री-विक्रय अनुपात

101. एक लाभ अधिकतमीकारी भेदमूलक एकाधिकारी के लिए जो दो उप–बाजारों में अपने उत्पाद को बेचता है, विलोम माँग वक्र $p_1 = 200 = q_1$ तथा $p_1 = 300 = q_2$ हैं। कुल लागत फलन $c(q_1 + q_2) = (q_1 + q_2)^2$ है। इन दो उप-बाजारों में बेचे गए उत्पाद के स्तर क्या होंगे?
(A) $q_1 = 33.33$ और $q_2 = 66.67$
(B) $q_1 = 24.67$ और $q_2 = 16.33$
(C) $q_1 = 16.67$ और $q_2 = 66.67$
(D) $q_1 = 33.33$ और $q_2 = 50.67$

102. लाभ अधिकतमीकारी एकाधिकारी संतुलन में रहेगा, जब–
(A) माँग की लोच = 1
(B) माँग की लोच > 1
(C) माँग की लोच < 1
(D) माँग की लोच = ∞

103. स्थिर पैमाने के प्रतिफल के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक कथन सही है?
(A) दीर्घकालीन औसत लागत वक्र (LAC) अल्पकालीन औसत लागत (SAC) वक्रों के न्यूनतम बिंदुओं का बिन्दु पथ है।
(B) LAC U-आकृति का है।
(C) LAC दीर्घकालीन सीमांत लागत से अधिक है।
(D) LAC समानान्तर अक्ष का संपाती है।

104. परिवर्ती अनुपात नियम के अनुसार निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से है/हैं?
1. सीमांत उत्पाद वक्र, औसत उत्पाद वक्र को इसके उच्चतम बिन्दु पर काटता है।
2. औसत उत्पाद वक्र, सीमांत उत्पाद वक्र को इसके उच्चतम बिन्दु पर काटता है।
3. कुल उत्पाद वक्र के उच्चतम बिन्दु पर सीमांत उत्पाद शून्य हो जाता है।
4. कुल उत्पाद वक्र मूल बिन्दु से सर्वत्र अवतल रहता है।
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) 1, 2 और 3

105. चाय का प्रतिलोम माँग फलन दिया है $p_d = 18 - 3q_d$, जहाँ p_d, 500 ग्राम चाय के पैकेट की रुपयों में कीमत है तथा q_d, माँगी गई मात्रा है। प्रतिलोम पूर्ति वक्र दिया है $p_s = 6 + q_s$ । अब मान लीजिए, सरकार चाय के पूर्तिकर्ताओं को ₹ 2 प्रति पैकेट के अनुसार उत्पादन देने का निर्णय करती है, तो उत्पादन प्रारम्भ करने के बाद नई सन्तुलन कीमत (p)

और उपभोक्ताओं द्वारा माँगी गई मात्रा (q) क्या होगी?

(A) $p = 3$, $q = 9$
(B) $p = 7.5$, $q = 3.5$
(C) $p = 9$, $q = 3$
(D) $p = 9.5$, $q = 3.5$

106. 'अ' और 'ब' लाभ 7 : 3 के साझेदार हैं। 'स' कुल लाभ के 3/7 हिस्से के लिए साझेदार बनाया गया है। साझेदारों का नया लाभ-विभाजन अनुपात होगा—

(A) 14 : 6 : 15 (B) 7 : 6 : 7
(C) 7 : 3 : 3 (D) 5 : 3 : 3

107.

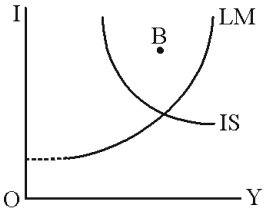

ऊपर दिए हुए आलेख में, बिन्दु B क्या इंगित करता है?

(A) माल बाजार में अधिक पूर्ति तथा मुद्रा बाजार में अधिक माँग
(B) माल बाजार में अधिक माँग तथा मुद्रा बाजार में अधिक पूर्ति
(C) माल तथा मुद्रा बाजार दोनों में अधिक पूर्ति
(D) माल तथा मुद्रा बाजार दोनों में अधिक माँग

108. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए—
परिवर्तनशील समानुपातों के नियमानुसार कुल उत्पाद अधिकतम होगा यदि—
1. सीमांत उत्पाद शून्य हो जाता है।
2. सीमांत उत्पाद वक्र, औसत उत्पाद वक्र को ऊपर से काटता है।
3. सीमांत उत्पाद वक्र की ढाल शून्य होती है।
4. कुल उत्पाद वक्र की स्पर्शी क्षैतिज अक्ष के समानान्तर होती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन से सही हैं?

(A) 1 और 4 (B) 3 और 4
(C) 1 और 3 (D) 2 और 3

109. एक बाजार में अनेक बैंक हैं। आरम्भ में कुल प्राथमिक जमा ₹ 1,000 है। प्रत्येक बैंक से वैधानिक तौर से 10% आरक्षित निधि बनाए रखना अपेक्षित है। लेनदेन पूर्णतया चैक के द्वारा किए जाते हैं तथा कोई भी लेनदेन रोकड़ में नहीं किया जाता। बाजार में कुल साख सृजन क्या होगा ?

(A) ₹ 1,000
(B) ₹ 5,000
(C) ₹ 10,000
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

110. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए—
1. औसत लागत वक्र (AC) में औसत परिवर्तनशील लागत वक्र (AVC) की ऊर्ध्वाधर दूरी औसत स्थिर लागत (AFC) है।
2. AVC वक्र, AC वक्र तथा सीमांत लागत (MC) वक्र 'U' आकार की है।
3. AFC वक्र 'X' अक्ष के क्षैतिज है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

111. दीर्घकालीन विनियोगों का विक्रय सूचक है—
(A) चालू सम्पत्तियों में परिवर्तन का
(B) कोषों के प्रयोग का
(C) कार्यशील पूँजी में वृद्धि का
(D) कोषों के स्रोत का

112. लागत लेखांकन है—
(A) प्रबन्धकीय लेखांकन का भाग
(B) वित्तीय लेखांकन का भाग
(C) उत्तरदायित्व लेखांकन का भाग
(D) इनमें से कोई नहीं

113. निम्न में से कौन निर्धारित करता है कि क्या करना है?

(A) नीतियां (B) व्यूह रचना
(C) कार्यविधि (D) उद्देश्य

114. निम्न में से कौन-सा खाता प्रारम्भिक शेष से आरम्भ नहीं होता है?

(A) आय-व्यय खाता
(B) प्राप्ति-भुगतान खाता
(C) लाभ-हानि खाता
(D) वसूली खाता

115. अगर संचित आय में वृद्धि = ₹ 6,00,000; प्रारम्भिक व्यय = ₹ 10,000;
कर हेतु प्रावधान = ₹ 60,000 तथा सामान्य आरक्षित कोष हस्तान्तरण = ₹ 10,000 है। करारोपण के पहले का शुद्ध लाभ है—

(A) ₹ 6,40,000 (B) ₹ 6,80,000
(C) ₹ 6,70,000 (D) ₹ 6,20,000

116. एक्स लि. ने 20 अंश प्रत्येक ₹ 10 का, जिन पर ₹ 6 प्रति अंश भुगतान हो चुका था, को जब्त कर लिया। इनमें से 8 अंश, प्रत्येक पर ₹ 5.50 चुकता होने पर, पूर्ण दत्त के रूप में पुनर्निर्गमित किए गए। पूँजी संचिति खाते में हस्तान्तरित की जाने वाली राशि होगी—

(A) ₹ 12 (B) ₹ 36
(C) ₹ 84 (D) ₹ 120

117. एक सार्वजनिक कम्पनी ने एक फर्म की निम्नलिखित सम्पत्तियों एवं दायित्वों को ग्रहण किया है—भवन ₹ 25,000, मशीन ₹ 15,000, देनदार ₹ 10,000, रहतिया ₹ 15,000 एवं लेनदार ₹ 8,000। यदि व्यवसाय का क्रय प्रतिफल ₹ 54,000 था तो ख्याति या पूँजी संचय की राशि क्या होगी?

(A) ₹ 3,000 ख्याति
(B) ₹ 3,000 पूँजी संचय
(C) ₹ 11,000 ख्याति
(D) ₹ 11,000 पूँजी संचय

118. निम्नलिखित में से कौन राष्ट्रीय ऋण नहीं है?

(A) भविष्य निधि
(B) जीवन बीमा पत्र
(C) राष्ट्रीय बचत पत्र
(D) दीर्घकालिक सरकारी बॉण्ड

119. व्यवसाय के शुद्ध मूल्य से आशय है—
(A) चालू सम्पत्ति—चालू दायित्व
(B) कुल अंश पूँजी
(C) कुल सम्पत्ति
(D) कुल सम्पत्ति—कुल दायित्व

120. द्वि-प्रविष्टि प्रणाली विवरण रखती है—

(A) व्यक्तिगत खाता (B) वास्तविक खाता
(C) नाममात्र खाता (D) ये सभी

121. नये साझेदार के प्रवेश पर, सम्पत्ति के मूल्य में वृद्धि को क्रेडिट किया जाता है—
(A) लाभ एवं हानि समायोजन खाता में
(B) पुराने साझेदारों का पूँजी खाता में
(C) सम्पत्ति खाता में
(D) लाभ एवं हानि खाता में

122. 'औपचारिक समूह के माध्यम से तथा उसके द्वारा कार्य सम्पादित करने की कला ही प्रबन्धन है।' यह परिभाषा दी है—
(A) पीटर ड्रकर ने
(B) हेनरी फेयॉल ने
(C) हेरोल्ड कूण्टज ने
(D) एफ.डब्ल्यू. टेलर ने

123. जब एक फर्म का उत्पादन वृद्धिमान होता है तो उसकी औसत स्थिर लागत—
(A) लगातार ह्रासमान होती है
(B) लगातार वृद्धिमान होती है

(C) स्थिर रहती है

(D) पहले घटती है और पुन: बढ़ती है

124. 31 दिसम्बर, 2002 को एक फर्म की सम्पत्तियाँ एवं देनदारियाँ क्रमश: ₹ 40,000 एवं ₹ 30,000 थीं। फर्म का विघटन हो गया और लेनदारों को एक रुपये में 60 पैसे का भुगतान किया गया। वसूली में कितनी हानि हुई?

(A) ₹ 10,000 (B) ₹ 12,000

(C) ₹ 18,000 (D) ₹ 22,000

125. निम्नांकित व्यवहारों में कौन-सा पूँजीगत है?

(A) पुराने टायर व ट्यूब का नये से प्रतिस्थापन

(B) कम्पनी द्वारा ट्रक क्रय किया जाना

(C) पुराने भवन की रंगाई की लागत

(D) उपर्युक्त सभी

व्याख्यात्मक हल

1. (A) **''चिट्ठे के लेखा परीक्षण''** अथवा **''स्थिति विवरण अंकेक्षण''**—जब अंकेक्षण वित्तीय वर्ष के अंत में लेखा-पुस्तकों को बन्द करने के पश्चात् आरम्भ किया जाता है तथा समाप्त होने तक चलता रहता है तो उसे अंतिम अंकेक्षण कहते हैं। इस प्रकार एक साथ ही चिट्ठे तथा लाभ-हानि की मदों की पूर्ण और विस्तृत जाँच हो जाती है।

2. (A) एक उच्च अधिकारी द्वारा अपने किसी कार्य को अपने अधीनस्थों को सौंपने और उस कार्य के निष्पादन हेतु निर्दिष्ट सीमाओं के अन्तर्गत अधिकार प्रदान करने का नाम प्राधिकार का प्रत्यायोजन कहलाता है, परन्तु अधिकार सौंपने वाला व्यक्ति अपने दायित्व से मुक्त नहीं होता है, अन्त में उसी का उत्तरदायित्व रहता है।

3. (A) अपूर्ण ठेके पर होने वाली हानि को लाभ-हानि खाता में अन्तरित (Transferred) किया जाता है।

4. (C) Given :

Fixed Cost = ₹ 4,00,000

Profit = ₹ 2,00,000

P/V Ratio = 40%

Sales = ?

P/V Ratio

$$= \frac{\text{Fixed Cost + Profit}}{\text{Sales}} \times 100$$

$$= \frac{40}{100} = \frac{4,00,000 + 2,00,000}{\text{Sales}}$$

$$\text{Sales} = \frac{6,00,000 \times 100}{40}$$

$$= ₹\ 15,00,000$$

5. (C) भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 की धारा 39 के अनुसार, किसी फर्म के सभी साझेदारों के बीमा साझेदारी का विघटन फर्म का विघटन कहलाता है। अर्थात् फर्म के विघटन से तात्पर्य उस स्थिति से है जब सभी साझेदारों के सम्बन्ध टूट जाते हैं जिससे फर्म का व्यवसाय समाप्त हो जाता है। फर्म का विघटन अनिवार्य रूप से होता है जब—

- सभी साझेदार पृथक् हो जाते हैं।
- सभी या एक साझेदार को छोड़कर शेष सभी साझेदार दिवालिया हो जाते हैं।
- सभी या एक को छोड़कर सभी की मृत्यु हो जाये।

6. (B) कुल प्रयुक्त पूँजी = स्थायी सम्पत्तियाँ + कार्यशील पूँजी = Fixed assets + (Current assets – Current liabilities)

7. (C) **मैक ग्रेगर का सहभागिता सिद्धांत**—डगलस मैक ग्रेगर ने मानवीय व्यवहार की दो परस्पर विरोधी विचारधाराओं का प्रतिपादन किया है जिसे उन्होंने X-सिद्धांत तथा Y-सिद्धांत कहा है।

X-सिद्धांत परम्परागत सिद्धांत है जो इस मान्यता पर आधारित है कि एक औसत व्यक्ति की कार्य के प्रति स्वाभाविक अरुचि होती है, उनमें कार्य से बचने की प्रवृत्ति होती है, वे उत्तरदायित्वों को टाल देना चाहते हैं अत: उसे कार्य के प्रति जागरूक बनाने के लिए डराना, धमकाना और दण्डित करना आवश्यक है।

8. (D) पार्श्व फाइल, क्षैतिज फाइलिंग पद्धति नहीं है।

9. (C) मितव्ययी आदेश मात्रा विश्लेषण (E.O.Q. Analysis Economic Order Quantity Analysis) का प्रयोग स्कन्ध नियंत्रण (Inventory Control) के लिए किया जाता है। मितव्ययी या आर्थिक आदेश मात्रा की गणना तीन प्रकार से की जा सकती है—

1. भूल एवं सुधार विधि
2. बिन्दुरेखीय (ग्राफीय) विधि
3. सूत्र विधि

सूत्र विधि के माध्यम से निम्नलिखित सूत्र द्वारा E.O.Q. की गणना की जाती है—

$$\text{E.O.Q.} = \sqrt{\frac{2UP}{S}}$$

where :

E.O.Q. = Economic Order Quantity

U = Annual Usage of Material

P = Order Placing cost of each order

S = carrying cost of One Unit of Material per year.

10. (D) प्रश्न से बट्टे की कुल राशि ₹ 3,000 बराबर तीन किस्तों में अपलिखित करना है, जिसकी प्रति वर्ष ₹ 1000 अपलिखित है।

पहले किस्त की धनराशि

(1 अप्रैल से 31 दिसम्बर तक अर्थात् 9 महीने)

$$\frac{1000 \times 9}{12} = ₹\ 750$$

शेष बट्टे की राशि = 3,000 – 750

= ₹ 2,250

₹ 2,250 को 2 वर्ष में समान किस्तों द्वारा अपलिखित करना है। अत: दूसरे वर्ष में बट्टे की अपलिखित धनराशि

$$= \frac{2250}{2} = ₹\ 1,125$$

11. (B) पूर्ण प्रतियोगी बाजार का आशय बाजार की उस स्थिति से है, जिसमें उद्योग वस्तु का मूल्य निर्धारक तथा फर्में मूल्य ग्रहणकर्ता होती हैं। फर्में, उद्योग द्वारा निर्धारित मूल्य, पर जितनी चाहे, उतनी इकाई का उत्पादन कर, विक्रय कर सकती हैं। अत: विकल्प (B) सही उत्तर है।

12. (B) सैद्धांतिक त्रुटि से तलपट प्रभावित नहीं होता, क्योंकि इस त्रुटि से डेबिट और क्रेडिट दोनों राशियाँ बराबर होती हैं। जैसे— मशीनरी के स्थापना पर मजदूरी व्यय की राशि से मजदूरी खाते को डेबिट करना। यह एक सैद्धांतिक त्रुटि है।

13. (D) दोहरा खाता प्रणाली सार्वजनिक उपयोगिता वाली संस्थाओं हेतु प्रयुक्त होती है, क्योंकि इसमें आम जनता या सरकार की पूँजी विनियोजित होती है, वह इस पूँजी का सदुपयोग हो रहा है या नहीं ये पता लगाया जाना होता है।

14. (D) एक वर्ष में देश के अन्दर उत्पादित कुल वस्तुओं एवं सेवाओं में से यदि ह्रास घटा दें तो हमें शुद्ध घरेलू उत्पाद (Net Domestic Product) प्राप्त होता है अर्थात्

NDP = Sum of all Goods and Services—Depreciation

15. (C) निर्यात व्यापार प्रक्रिया में सबसे पहले इन्डेन्ट की प्राप्ति की जाती है। तत्पश्चात् सीमा शुल्क चुकाकर एवं जहाज पर माल लदवाने के पश्चात् जहाजी बिल्टी लेकर तथा इसके बाद सब व्ययों एवं माल का बीजक बनाया जाता है।

16. (A) पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की स्थिति में औसत (AR) और सीमान्त आगम (MR) दोनों एक दूसरे के बराबर होते हैं। यदि औसत आय वक्र तथा सीमान्त आय वक्र X अक्ष के समान्तर हो, तो इस स्थिति में औसत आय तथा सीमान्त आय बराबर होते हैं।

अर्थात्

$$AR = MR$$

यह सम्बन्ध पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में पाया जाता है।

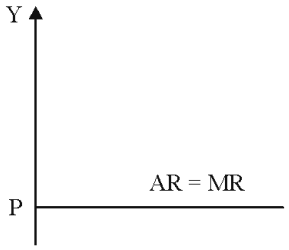

17. (D) एक निजी कम्पनी के संचालकों का अवकाश ग्रहण करना आवश्यक नहीं होता है।

18. (A) A और R दोनों सही हैं तथा तर्क (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

19. (D) एक व्यक्ति एक समय में अधिक-से-अधिक 20 कम्पनियों का संचालक हो सकता है।

20. (B) एक अवयस्क साझेदार नहीं हो सकता है, लेकिन सभी साझेदारों की सहमति से साझेदारी के लाभों में सम्मिलित किया जा सकता है।

21. (A) स्वामियों के स्वत्व में कमी उस समय आती है, जब समता अंशों की संख्या में वृद्धि होती है। इस प्रकार यदि किसी कम्पनी द्वारा बोनस अंशों का निर्गमन किया जाए तो अंशों की संख्या में वृद्धि के कारण विद्यमान स्वामियों के स्वत्व में कमी आती है।

22. (D) सम्पत्तियाँ, जिन्हें आसानी से रोकड़ में परिवर्तित किया जा सकता है, उन्हें तरल सम्पत्ति कहते हैं जैसे—रोकड़, देनदार, बैंक, रुपया, अर्जित आय आदि।

23. (C) सामान्यत: संस्था के अन्तर्गत प्रबन्ध द्वारा सम्पन्न किये जाने वाले कार्यों का एक व्यवस्थित क्रम होता है जो निम्नलिखित है—

नियोजन करना
↓
संगठन बनाना
↓
श्रम और पूँजी का समन्वय
↓
कार्य में प्रवृत्त करना
↓
निर्देश देना
↓
नियुक्तिकरण
↓
निर्णय लेना
↓
नियन्त्रण करना

24. (A) अंतिम लेखों के लिए तैयार होने के पश्चात् किया गया अंकेक्षण सामयिक अंकेक्षण है क्योंकि यह एक निर्धारित समय (एक वर्ष) के बाद किया जाता है।

25. (C) साझेदारों के मध्य अगर कोई समझौता नहीं है तो भारतीय समझौता अधिनियम 1932 के अनुसार साझेदारी पर निम्न बातें लागू होती हैं—

- लाभ हानि अनुपात समान होगा न कि पूँजी के अनुपात में
- साझेदारों की पूँजी पर कोई ब्याज देय नहीं होगा।
- साझेदारों के आहरण पर कोई ब्याज देय नहीं होगा।
- साझेदारों को कोई वेतन, कमीशन या पारिश्रमिक नहीं दिया जायेगा।
- यदि कोई साझेदार फर्म को लोन देता है, तो फर्म उसे 6% प्रति वर्ष की दर से ब्याज प्रदान करेगी।

26. (B) उपभोक्ता की तटस्थता वक्र ऋणात्मक ढाल वाला होता है जो ऊपर से नीचे की ओर ढालू तथा मूल बिन्दु की ओर उन्नतोदर होता है। इसे चित्र रूप में इस प्रकार प्रदर्शित करते हैं।

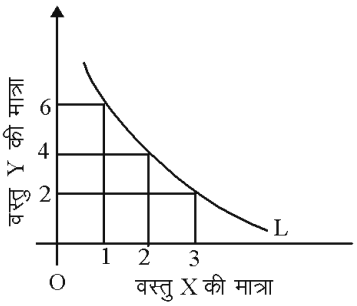

27. (B) Current Ratio = 2 : 8
Quick Test Ratio = 1.5
Working capital = ₹ 1,62,000
Working Capital = Current Assets – Current Liabilities

$$\text{Current Liabilities} = \frac{1,62,000}{1.8}$$

$$= ₹\ 90,000$$

$$\text{Quick Test Ratio} = \frac{\text{Liquid Asset}}{\text{Current Liabilities}}$$

$$\frac{1.5}{1} = \frac{\text{Liquid Assets}}{90,000}$$

$$\therefore \text{ Liquid Assets} = 1.5 \times 90,000$$

$$= 1,35,000$$

28. (A) निवेश पर प्रत्यय अनुपात का तात्पर्य शुद्ध लाभ तथा प्रयुक्त पूँजी के बीच अनुपात से होता है।

29. (C) भारत में सन् 1913 के कम्पनी अधिनियम के द्वारा पहली बार संयुक्त पूँजी वाली सीमित कम्पनियों के लिए वैधानिक अंकेक्षण अनिवार्य किया गया।

30. (B) जब याचना राशि का भुगतान अंशधारियों द्वारा निर्धारित समय पर नहीं किया जाता है तो उनके अंशों का हरण कर लिया जाता है और हरण किए गए अंशों पर माँगी गयी राशि (Calledup Value) से अंश पूँजी खाते को डेबिट किया जाता है अर्थात्

Share Capital A/c Dr. (Called-up-Value)
To Call in Arrears A/c
To Share forfeited A/c
(Being forfeiture of Share)

31. (B) **फीडलर का सांयोगिक या आकस्मिकता का सिद्धान्त**—यह सिद्धान्त इस बात पर बल देता है कि प्रभावी नेतृत्व की कोई एक शैली ऐसी नही हो सकती है, जो प्रत्येक परिस्थिति में उपयुक्त हो। परिस्थिति के अनुसार नेतृत्व की शैली में परिवर्तन करने से ही वह प्रभावी बन सकती है।

32. (D) संशोधित कम्पनी अधिनियम की धारा 211 के अन्तर्गत भारतीय चार्टर्ड लेखाकार संस्थान द्वारा लेखांकन मानकों का निर्धारण होता है।

33. (C) दिया है—

400 इकाई के उत्पादन की कुल लागत

$$= ₹\ 6,000$$

तथा 410 इकाइयों के उत्पादन की कुल लागत $= ₹\ 7500$

तो 10 इकाई के उत्पादन की लागत

$$= 7,500 - 6,000$$

$$= ₹\ 1,500$$

इस प्रकार

10 इकाइयों के उत्पादन की औसत लागत या सीमान्त लागत

$$= \frac{1500}{10}$$

$$= ₹\ 150$$

34. (C) प्रमाणन अंकेक्षण की 'रीढ़ की हड्डी' होती है क्योंकि प्रमाणन के बिना (मदों की तथ्यों से मिलान) मदों की सत्यता परखना असंभव है, जो कि अंकेक्षण का प्रमुख उद्देश्य है।

35. (A) भारतीय रेलवे सार्वजनिक या राजकीय उपक्रम है। राजकीय उपक्रम निम्न प्रारूप में व्यवसाय करती है–

- विभागीय प्रारूप
- सार्वजनिक निगम प्रारूप
- सरकारी कम्पनी
- भारतीय रेलवे, विभागीय प्रारूप के अन्तर्गत संचालित होता है।

36. (C) भारतीय अर्थव्यवस्था पर किसी चर्चा की शुरुआत देश की औद्योगिक नीतियों के सर्वेक्षण से होते हैं। सरकार द्वारा लागू एवं प्रस्तावित औद्योगिक नीतियाँ निम्नलिखित रही हैं–

1. 1948 की औद्योगिक नीति का प्रस्ताव
2. 1956 की औद्योगिक नीति का प्रस्ताव
3. 1969 की औद्योगिक नीति का प्रस्ताव
4. 1973 की औद्योगिक नीति का प्रस्ताव
5. 1977 की औद्योगिक नीति का प्रस्ताव
6. 1980 की औद्योगिक नीति का प्रस्ताव
7. 1985 व 1986 की औद्योगिक नीति का प्रस्ताव
8. नई औद्योगिक नीति, 1991

37. (B) माल के आयात हेतु विदेशी विनिमय की स्वीकृति केन्द्रीय बैंक के रूप में भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) प्रदान करता है।

38. (A) 'स' के द्वारा ख्याति की लायी जाने वाली राशि

$$= (30,000 - 12,000) \times \frac{1}{4}$$

$$= 18000 \times \frac{1}{4}$$

$$= ₹\ 4,500$$

39. (D) विशेषण आहरण अधिकार (SDR-Special Drawing Rights) की स्वीकृति केवल अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) द्वारा दी जाती है। यह केवल कागजी लेखे की मुद्रा के रूप में होती है।

40. (D) यदि किसी वस्तु की माँग पूर्णत: बेलोचदार है तो कीमत में 15% की वृद्धि होने पर भी वस्तु की माँग में कोई कमी अथवा वृद्धि नहीं होगी। अर्थात्

पूर्ण बेलोचदार माँग वक्र

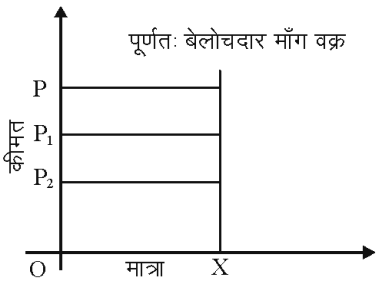

41. (C) गार्नर तथा मर्रे के नियम के अनुसार जिस साझेदार की जितनी पूँजी फर्म में लगी होती है उस पूँजी के अनुपात में उसका लाभ हानि का वितरण होता है।

42. (A) चालू अनुपात चालू सम्पत्ति एवं चालू दायित्व का अनुपात है।

$$\text{सूत्र : चालू अनुपात} = \frac{\text{चालू सम्पत्ति}}{\text{चालू दायित्व}}$$

2 : 1 का चालू अनुपात श्रेष्ठ तरलता की स्थिति बताता है।

43. (B) त्वरित अनुपात $\left(\frac{\text{तरल सम्पत्ति}}{\text{चालू दायित्व}}\right)$ अति अल्पकाल में किसी (प्राय 1 माह) फर्म की तरलता का परीक्षण करते हैं। यदि 1 साल की तरलता की जाँच करनी है तो चालू अनुपात $\left(\frac{\text{चालू सम्पत्ति}}{\text{चालू दायित्व}}\right)$ श्रेष्ठ है।

44. (A) बाजार की एक ऐसी स्थिति जिसमें यदि फर्म का माँग वक्र उद्योग के माँग-वक्र के अनुरूप हो तो फर्म की ऐसी स्थिति पूर्ण प्रतियोगी बाजार की दशा में होती है।

अत: विकल्प (A) सही उत्तर है।

45. (D) एक कम्पनी के समामेलन से पूर्व उसे जो लाभ प्राप्त होता है, उसका प्रयोग कम्पनी निम्नलिखित कार्यों के लिए कर सकती है–

(i) ख्याति के पुस्तक मूल्य को कम करने के लिए

(ii) पूँजी हानि की पूर्ति के लिए

(iii) पूँजी संचय खाते का निर्माण करने के लिए

स्पष्ट है कि कम्पनी समामेलन के पूर्व लाभों का प्रयोग लाभांश वितरण के लिए नहीं कर सकती है।

46. (B) भारत में उद्योगों को ऋण प्रदान करने की प्रमुख संस्था निम्न है–

- IDBI
- IFCI
- UTI
- SFCs आदि

आई.एम.एफ. एक अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्था है।

47. (C) भारत में सहकारी विपणन की शीर्ष संस्था (NAFED) राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ है। इसकी स्थापना 1958 में हुई थी।

48. (A) एक व्यक्ति भारत में किसी गत वर्ष में निवासी तभी माना जायेगा जब वह निम्नलिखित दो शर्तों में से कम-से-कम एक शर्त की पूर्ति करता हो। श्रेणी 'अ' की दो शर्तें निम्नलिखित हैं–

(1) वह व्यक्ति सम्बन्धित गत वर्ष में भारत में कुल मिलाकर कम से कम 182 दिन रहा हो, अथवा

(2) वह व्यक्ति सम्बन्धित गत वर्ष से पूर्व के चार वर्षों में कुल मिलाकर कम से कम 365 दिन भारत में रहा हो तथा उस गत वर्ष में कुल मिलाकर कम से कम 60 दिन (कुछ अपवादों की दशा में 182 दिन) भारत में रहा हो।

49. (D) कोष प्रवाह विवरण के अन्तर्गत 'कोष' से तात्पर्य कार्यशील पूँजी से है और कार्यशील पूँजी = चालू सम्पत्तियाँ-चालू देनदारियाँ।

50. (B) कम्पनी अधिनियम, 1956 के अन्तर्गत 'प्रावधान' किसी ऐसे ज्ञात दायित्व के लिए है जिसकी राशि बहुत सही रूप में निर्धारित नहीं की जा सकती है। जैसे–

- ह्रास के लिए प्रावधान
- डूबत ऋण के लिए प्रावधान आदि।

51. (C) स्टॉक आवर्त अनुपात (Stock Turnover Ratio) की गणना औसत स्टॉक से विक्रय की लागत में भाग देकर ज्ञात की जाती है। अर्थात्

$$\text{Stock Turnover Ratio} = \frac{\text{Cost of Goods Sold}}{\text{Average Stock}}$$

$$\text{Average Stock} = \frac{\text{Opening Stock} + \text{Closing Stock}}{2}$$

$$= \frac{50,000 + 60,000}{2}$$

$$= ₹\ 55,000$$

$$\text{COGS} = ₹\ 2,20,000$$

अत: Stock Turnover Ratio

$$= \frac{2,20,000}{55,000}$$

$$= 4 \text{ time}$$

52. (C) अंकेक्षण के अन्तर्गत, प्रमाणन रीढ़ की हड्डी है। प्रमाणन का अर्थ है कि प्रत्येक व्यापारिक सौदों का एक प्रमाणक होना चाहिए। प्रमाणक खाते की पुस्तकों में की गयी प्रविष्टि के समर्थन में दस्तावेज है। प्रमाणन का सम्बन्ध नगद प्राप्तियाँ, नगद भुगतान तथा उधार लेन-देन आदि से है।

53. (D) जब वार्षिक सामान्य सभा में लेखा परीक्षक की नियुक्ति नहीं की जाती तो उसकी नियुक्ति केन्द्रीय सरकार द्वारा की जाती है।

54. (B) लेखांकन की दोहरा लेखा प्रणाली की द्विपक्षीय सन्तुलन की अवधारणा के आधार पर एक व्यवसाय के दायित्व व स्वामी पूँजी का योग व्यवसाय की कुल सम्पत्ति के बराबर होता है, अर्थात्

Assets = Capital + Liabilities

दिया है,

Assets = ₹ 21,315
Liabilities = ₹ 4,120
Capital = ?
So,
Capital = Assets – Liabilities
= ₹ 21,315 – 4,120
= ₹ 17,195

55. (C) निविदा मूल्य आनुमानित विक्रय मूल्य को अभिव्यक्त करता है। अत: विकल्प (C) सही उत्तर है।

56. (B) वर्षों की संख्या = 3 + 2 + 1 = 6

प्रथम वर्ष का ह्रास = (सम्पत्ति की लागत – अवशिष्ट मूल्य) $\times \frac{3}{6}$

$= (10,000 - 1,000) \times \frac{3}{6}$

$= 9,000 \times \frac{3}{6}$

= ₹ 4,500

57. (A) कम्पनी के स्थिति-विवरण में निम्न क्रम दर्शाया जाना चाहिये–

(a) स्थायी परिसम्पत्ति
(b) स्थायी निवेश के रूप में रखे गए अंश
(c) चालू परिसम्पत्ति
(d) लाभ-हानि खाते का डेबिट शेष

चूँकि भारतीय कम्पनी अधिनियम में कम्पनी के स्थिति विवरण की स्थिति इसी क्रम में की गयी है।

58. (C) मानव संसाधन से सम्बन्धित आँकड़ों का चिन्हीकरण एवं मापन करना मानव संसाधन लेखांकन के अन्तर्गत सम्मिलित होता है। मानव संसाधन लेखांकन की प्रमुख विशेषताएँ हैं–

1. अन्य सम्पत्तियों की तरह मानव भी एक महत्वपूर्ण सम्पदा है।
2. मानव सम्पदा के सम्बन्ध में लेखांकन क्रियाएँ की जाती हैं।
3. मानव सम्पदा से सम्बन्धित समंकों को पहचानना चाहिए।
4. इसे भी अन्य सम्पत्तियों की तरह आर्थिक चिट्ठे में सम्मिलित किया जा सकता है।
5. पहचाने गये समंकों के आधार पर मानव संसाधनों का मापन किया जाना चाहिए।
6. मानव सम्पदा व संगठन में हित रखने वाले पक्षकारों को प्रतिवेदन प्रस्तुत करना चाहिए।

59. (C) परिणामों को अधिकतम करना लेखांकन का कार्य नहीं है।

60. (B) कुल देनदारों में केवल उधार विक्रय की राशि को शामिल किया जाता है।

कुल देनदारी के लिए निम्नलिखित सूत्र भी प्रयोग करते हैं–

Total Debtors = Debetor + B/R

61. (C) क्षतिपूरक अशुद्धि (Compensatory Error) तलपट के मिलान में बाधक नहीं होती, क्योंकि इस प्रकार की अशुद्धि का तलपट पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। यह एक ऐसी अशुद्धि है जिसके अन्तर्गत एक लेखे से उत्पन्न त्रुटि, दूसरे लेखे द्वारा स्वत: समाप्त हो जाती है। उदाहरणार्थ–यदि रामू के खाते में ₹ 1000 Dr. करना था, किन्तु ₹ 100 Dr. किया गया तथा श्यामू के खाते में ₹ 100 Dr. करना था, किन्तु ₹ 1000 Dr. कर दिया गया तो ऐसी दशा में तलपट के मिलान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि दोनों खातों को मिलाकर कुल 1100 होना था जो त्रुटिवश ही सही, हो गया, इसलिए तलपट का मिलान अप्रभावित रहता है।

62. (D) सामान्यत: सम्प्रेषण का तात्पर्य प्रेषक द्वारा उचित माध्यमों से प्राप्तकर्ता तक कोई संदेश या सूचना प्रेषित करने से है। एक कुशल सम्प्रेषण के अन्तर्गत निम्नलिखित कदम उठाये जाते हैं–

विचार या समस्या को स्पष्ट करना
↓
समस्या के समाधान के विकास के लिए लोगों का सहयोग प्राप्त करना
↓
विचारों या निर्णयों का सम्प्रेषण
↓
सम्प्रेषण की प्रभावशीलता का मापन करना

63. (B) तलपट को परीक्षा सूची कहते हैं। इसके डेबिट पक्ष में खातों के डेबिट शेष को तथा क्रेडिट पक्ष में खातों के क्रेडिट शेष को दर्शाया जाता है। तत्पश्चात् तलपट के डेबिट पक्ष की राशि को व्यापार एवं लाभ हानि खाते के डेबिट पक्ष में लिखा जाता है तथा क्रेडिट पक्ष की राशि को क्रेडिट पक्ष में। व्यापार खाते के डेबिट पक्ष में दर्शाया जाता है–

(i) Opening stock
(ii) Purchases
(iii) Direct expenses
(iv) Wages and Salary
(v) Profit

64. (B) जब मूल्यों में वृद्धि हो रही हो, निर्गमित सामग्री के स्टॉक मूल्यांकन को बाद में आना पहले जाना (LIFO—Last in First Out) विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए। इस विधि का प्रयोग मुद्रा प्रसार या मुद्रा-स्फीति के समय किया जाता है, जबकि मूल्यों में हो रही कमी की दशा में स्टॉक मूल्यांकन की पहले आना पहले जाना (FIFO—First in First Out) विधि का प्रयोग किया जाता है।

65. (D) एक प्रबन्ध के अन्तर्गत नियन्त्रण का कार्य प्रबन्ध के सभी स्तरों (अर्थात्—उच्च स्तरीय, मध्यम स्तरीय व निम्न स्तरीय) पर किया जाता है। चूँकि नियन्त्रण प्रबन्ध एक ऐसा महत्वपूर्ण कार्य है जो सभी कार्यों का समीक्षात्मक मूल्यांकन करता है। इसलिए नियन्त्रण की आवश्यकता प्रबन्ध के सभी स्तरों पर होती है।

66. (B) दिया है–

गौतम और महावीर का लाभानुपात = 5 : 3

प्रवेशित नये साझेदार नवीन का कुल लाभ में भाग = $\frac{1}{5}$

तो गौतम और महावीर हेतु शेष लाभ भाग

$= 1 - \frac{1}{5} = \frac{4}{5}$

शेष $\frac{4}{5}$ भाग लाभ में गौतम का हिस्सा

$= \frac{4}{5} \times \frac{5}{8}$

$= \frac{20}{40}$

$= \frac{1}{2}$

शेष $\frac{4}{5}$ भाग में महावीर का हिस्सा

$= \frac{4}{5} \times \frac{3}{8}$

$= \frac{12}{40}$

$= \frac{3}{10}$

गौतम, महावीर तथा नवीन का नया लाभानुपात

$= \frac{1}{2} : \frac{3}{10} : \frac{1}{5}$

$= \frac{5}{10} : \frac{3}{10} : \frac{2}{10}$

= 5 : 3 : 2

67. (B) दिया है–

Opening stock = ₹ 5,000
Purchase = ₹ 15,000
Direct Exp. = ₹ 2,000
Closing Stock = ₹ 2,500

COGS = ?

Cost of Goods Sold = Opening Stock + Purchase + Direct Expenses – Closing Stock

= 5,000 + 15,000 + 2,000 – 2,500

= ₹ 19,500

68. (A) प्रबन्ध के कार्यों को अभिव्यक्त करने के लिए लूथर गुलिक महोदय ने एक सूत्र POSDCORB को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जिसमें–

P = Planning (नियोजन)

O = Organisation (संगठन)

S = Staffing (नियुक्तिकरण)

D = Direction (निर्देशन)

C-O = Co-Ordination (समन्वय)

R = Reporting (प्रतिवेदन)

B = Budgeting (बजटिंग)

के रूप में परिभाषित किया।

69. (B) दिया है–

माध्य $(\bar{X})$ = 30

माध्यिका M = 27

भूयिष्ठक = ?

यदि एक ही श्रेणी के माध्य और माध्यिका का मूल्य ज्ञात हो, तो निम्नलिखित सूत्र द्वारा भूयिष्ठक ज्ञात कर सकते हैं–

भूयिष्ठक = 3 माध्यिका – 2 माध्य

या $Z = 3M - 2\bar{X}$

$= (3 \times 27) - (2 \times 30)$

$= 81 - 60$

$= 21$

70. (A) सामान्यत: 2 अंकों के गुणोत्तर माध्य की गणना के लिए संख्यायों का आपस में गुणा करके वर्गमूल निकाल लेते हैं। अर्थात् सूत्र

Geometric Mean (G.M.)

$= \sqrt{8 \times 18}$

$= \sqrt{144}$

$= 12$

71. (D) एक सामान्य व्यवसाय के लिए एक साझेदारी फर्म में साझेदारों की न्यूनतम संख्या 2 और अधिकतम संख्या 20 होती है, जबकि बैंकिंग व्यवसाय में साझेदारों की अधिकतम संख्या 10 होती है।

72. (A) सही सुमेलन निम्न है–

(a)	वैज्ञानिक प्रबंध	एफ.डब्ल्यू. टेलर
(b)	प्रबंध के चौदह सिद्धांत	हेनरी फेयॉल
(c)	सेविवर्गीय प्रबंध	रॉबर्ट ओवेन
(d)	एम.बी.ओ.	पीटर एफ.ड्रकर

(उद्देश्यों के लिये प्रबन्ध)

73. (C) वैधानिक अंकेक्षक का सबसे प्रमुख कर्तव्य यह होता है कि अंकेक्षण कार्य के पश्चात् वह अंकेक्षण से सम्बन्धित रिपोर्ट कम्पनी के वास्तविक स्वामी अंशधारी के कम्पनी की वार्षिक साधारण सभा में सौंप दे।

74. (A) देनदार आवर्त अनुपात = $\frac{\text{उधार बिक्री}}{\text{औसत देनदार}}$

औसत देनदार

$= \frac{\text{प्रारम्भिक देनदार + अंतिम देनदार}}{2}$

माना प्रारम्भिक देनदार = u

$$8 = \frac{1,75,000}{\frac{u + u + 7000}{2}}$$

$$8 = \frac{(1,75,000) \times 2}{2u + 7000}$$

$$2u + 7000 = \frac{1,75,000 \times 2}{8}$$

$2u + 7000 = 43750$

$2u = 43750 - 7000$

$2u = 36,750$

$u = \frac{36,750}{2}$ = ₹ 18,375

75. (D) बिक्रीत माल की लागत = आरम्भिक रहितया + क्रय – अन्तिम रहतिया

इस सूत्र से (A) (B) तथा (C) विकल्प सही हैं।

परन्तु विकल्प (D) गलत है।

76. (D) दिया है–

सम्पत्ति = 40,000

दायित्व = 30,000

वसूली की दर = @60 पैसे/₹

तो वसूली की हानि = ?

वसूली की राशि = 30,000 × 6 पैसे

= 18,000

वसूली की हानि = 40,000 – 18,000

= ₹ 22,000

77. (C) एक सहकारी संगठन में समस्त सदस्यों को मतदान का समान अधिकार होता है। सहकारिता का मूल सिद्धान्त 'एक सब के लिए और सब एक के लिए' है। इसमें सदस्यों की न्यूनतम संख्या 10 होती है। इसका नियमन भारतीय सहकारिता अधिनियम, 1912 द्वारा किया जाता है।

78. (B) चेम्बर ऑफ कॉमर्स (वाणिज्य मण्डल) एशोसिएशन का स्वरूप है। यह व्यावसायिक नेटवर्क का एक प्रारूप है। प्रथम चेम्बर ऑफ कॉमर्स की स्थापना 1599 में फ्रांस में हुई थी। तत्पश्चात् आधिकारिक चेम्बर ऑफ कॉमर्स का निर्माण ब्रुगेस में किया गया।

79. (C) टोबिन कर (Tobin Tax) विदेशी मुद्रा के लेन-देन पर लागू होता है। नोबेल पुरस्कार विजेता अमेरिकी अर्थशास्त्री जेम्स टोबिन महोदय ने विदेशी मुद्रा के लेन-देन पर कर लगाने का सुझाव दिया जिसमें कि सामाजिक विकास के लिए धन जुटाया जा सके। इनके नाम पर ही इस कर को टोबिन टैक्स नाम दिया गया।

80. (C) एक साझेदारी व्यवसाय अपने व्यवसाय का विस्तार करने व अन्य किसी उद्देश्य से धन/कोष की प्राप्ति हेतु बैंक से ऋण प्राप्त कर सकती है, सरकारी ऋण पत्र के माध्यम से धन प्राप्त कर सकती है तथा साझेदारों से ऋण प्राप्त कर सकती है, जबकि धन/कोष की प्राप्ति हेतु ऋण पत्र जारी नहीं कर सकती है।

81. (A) पार्षद् अधिनियम (Memorandum of Association) कम्पनी का सबसे महत्वपूर्ण प्रलेख होता है। इसके अन्तर्गत कम्पनी के संचालन बाह्य व्यक्तियों से सम्बन्ध आदि के बारे में व्यवस्थित लेखा होता है।

82. (A) खनिज जमाओं की दशा में ह्रास की सर्वश्रेष्ठ रीति रिक्तीकरण/शून्यीकरण/रिक्त इकाई विधि है। यह विधि खनिज खानों, तेल व गैस के कुओं तथा लकड़ी के जंगलों आदि के मूल्य-ह्रास के लिए प्राय: प्रयोग की जाती है। इन सम्पत्तियों की लागत इसकी प्राप्ति के लिए भुगतान राशि तथा विकास व्यय के योग के बराबर मानी जाती है। कुल लागत को अनुमानित उत्पादन इकाइयों के जीवन से भाग देकर प्रति इकाई रिक्तीकरण ज्ञात कर लिया जाता है। वर्ष में रिक्तीकरण इकाइयों को इस पद से गुणा करके ह्रास राशि ज्ञात की जाती है।

Depletion Per unit

$= \frac{\text{Acquisition cost – ResidualValue}}{\text{Estimated Life in terms of Production Unit}}$

अत: विकल्प (A) सही उत्तर है।

83. (B) रेखा एवं सहायक संगठन, रेखा संगठन का विस्तार है। प्रारम्भ में संगठन का रेखा संगठन स्वरूप प्रचलित था, जिससे अधिकारों व उत्तरदायित्वों का प्रवाह ऊपर से नीचे एक सीधी रेखा में होता था, किन्तु इसमें उत्पन्न होने वाली कुछ समस्याओं के समाधान के लिए सहायक संगठन को जोड़ दिया गया

जो रेखा संगठन के परामर्श प्रदान करता है, किन्तु इसे मानने के लिए रेखा संगठन बाध्य नहीं होता है।

84. (B) A, B का लाभ विभाजन अनुपात = 3 : 2

A द्वारा C को दिया जाने वाला भाग = $\frac{1}{3}$

B द्वारा C को दिया जाने वाला भाग = $\frac{1}{2}$

इस प्रकार,

A द्वारा C को दिया गया भाग = $\frac{3}{5} \times \frac{1}{3}$

$= \frac{3}{15}$ ...(C)

A का शेष भाग = $\frac{3}{5} - \frac{3}{15}$

$= \frac{6}{15}$

B द्वारा C को दिया गया भाग = $\frac{2}{5} \times \frac{1}{2}$

$= \frac{2}{10}$ ...(C)

B का शेष भाग = $\frac{2}{5} - \frac{2}{10}$

$= \frac{2}{10}$

C का कुल भाग (A तथा B द्वारा दिया हुआ) = $\frac{3}{15} + \frac{2}{10}$

$= \frac{6}{15}$

अब, A, B तथा C का लाभ अनुपात

$= \frac{6}{15} : \frac{2}{10} : \frac{6}{15}$

= 2 : 1 : 2

अब विकल्प (B) सही उत्तर है।

85. (B) एक व्यावसायिक संस्था द्वारा वित्तीय वर्ष के अन्त में वित्तीय विवरण अर्थात् लाभ-हानि खाता तथा आर्थिक चिट्ठा तैयार किया जाता है, जिसके अन्तर्गत तुलन-पत्र/आर्थिक चिट्ठा जिस तिथि को तैयार किया जाता है, उस तिथि को व्यापार की वित्तीय स्थिति अर्थात् उपलब्ध सम्पत्तियों एवं दायित्वों को प्रकट करता है।

दूसरे शब्दों में, तुलन पत्र उस दिन की व्यापार की आर्थिक स्थिति को स्पष्ट करता है जिस दिन वह तैयार किया जाता है।

86. (B) फ्रैंकिंग मशीन का उपयोग डाक टिकट लगाने के लिए किया जाता है। ये मशीनें डाक घर से लाइसेंस प्राप्त कर खरीदी जाती हैं। इसके अन्तर्गत जितनी राशि डाकघर में जमा करा दी जाती है, उतनी राशि की टिकट मशीन द्वारा मुद्रित कर दी जाती है। इसे आगामी भुगतान कर पुनः चालू करवाया जा सकता है।

87. (C) थ्योरी 'X' और थ्योरी 'Y' का सिद्धांत डगलस मैकग्रेगर महोदय ने प्रतिपादित किया था। यह सिद्धांत अभिप्रेरणा के सिद्धान्त से सम्बन्धित है। अभिप्रेरणा का 'X' सिद्धांत परम्परावादी दृष्टिकोण पर आधारित है जबकि 'Y' सिद्धांत आधुनिक या आशावादी दृष्टिकोण पर आधारित है।

88. (C) गार्नर **बनाम** मर्रे के निर्णय के अनुसार किसी विपरीत समझौते के अभाव में दिवालिया साझेदार की कमी अन्य ऋण-शोधन क्षम्य साझेदारों द्वारा फर्म के विघटन के पूर्व विद्यमान पूँजी अनुपात में पूरी की जानी चाहिए जबकि वसूली की हानि अन्य साझेदारों द्वारा नकद रूप से लाभालाभ अनुपात में पूरी की जायेगी।

89. (D) एन्टीफोर्ट ट्रेड का अर्थ फिर से निर्यात करने के लिए आयात से है। अर्थात् व्यापार के इस स्वरूप के अन्तर्गत वस्तुओं या सेवाओं का आयात, पुनः निर्यात करने के उद्देश्य से ही किया जाता है। इसमें वस्तुओं/सेवाओं का रूप परिवर्तन किए बिना ही निर्यात कर दिया जाता है।

90. (B) दिया है—

Equity share capital = ₹ 16,00,000

8% Preference share capital = ₹ 2,00,000

Reserve and Surplus = ₹ 73,000

Profit & Loss (Cr. Bal.) = ₹ 41,000

Preliminary Expenses = ₹ 20,000

Short term Creditors = ₹ 30,000

Shareholder & Funds = ?

Share holder & funds = Equity share Capital + Preference share Capital + Reserve and Surplus + Profit and Loss (Cr. Bal.) – Preliminary Exp.

= 16,00,000 + 2,00,000 + 73,000 + 41,000 – 20,000 = ₹ 18,94,000

91. (A) प्रश्नानुसार,

दिया है—

Sales = ₹ 1,20,000

Gross Profit = 1/3 of Cost

Purchase = ₹ 98,000

Closing Stock ₹ 18,000

Opening Stock = ?

इस प्रकार दी गई राशि को Trading A/c में रखने पर—

Particulars	Amount	Particulars	Amount
Opening Stock (Bal.)	10,000	Sales	1,20,000
Purchase	98,000	Closing Stock	18,000
Gross Profit	30,000		
	1,38,000		1,38,000

प्रारम्भिक रहतिया की राशि ₹ 10,000 होगी।

92. (A) सामान्यतः कार्य-विभाजन और उसके निष्पादन हेतु आवश्यक अधिकार सौंपने को ही अधिकार अन्तरण अथवा भारार्पण अथवा अधिकार सौपना अथवा अधिकारों का प्रत्यायोजन कहते हैं।

अधिकार अन्तरण उत्तरदायित्व एवं अधिकार सौंपने तथा जिस व्यक्ति को उत्तरदायित्व सौंपा गया है, उसकी उत्तरदेयता उत्पन्न करने की प्रक्रिया है।

स्पष्ट है कि भारार्पण केवल अधिकारों का किया जा सकता है, उत्तरदायित्व का नहीं।

अतः विकल्प (A) सही उत्तर है।

93. (D) एक फर्म का साझेदार यदि चाहे तो शेष सभी साझेदारों की सहमति/स्वीकृति से बाहरी व्यक्ति को अपना हित हस्तांतरित कर सकता है। अतः विकल्प (D) सही उत्तर है।

94. (A) कीमत सूचकांक (Price Index) की गणना के लिए आधार वर्ष की कीमत को 100 माना जाता है।

95. (D) एक ऐसी अर्थव्यवस्था जिसमें निजी अर्थव्यवस्था तथा समाजवादी/सरकारी अर्थव्यवस्था का समान रूप से व मिलता-जुलता योगदान होता है, मिश्रित अर्थव्यवस्था कहलाती है।

अतः विकल्प (D) सही उत्तर है।

96. (C) सामान्यतया देश का आम बजट संसद में वित्तमन्त्री द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

97. (B) उधार बिक्री = ग्राहकों से वसूली – प्रारम्भ में वसूली-योग्य रकम – अन्त में वसूली योग्य रकम + ऋण

= ₹ 1,26,000 – 4,940 + 1,300

= ₹ 1,22,360

98. (C) व्यवसाय के सम्पूर्ण निष्पादन के विश्लेषण के लिए वित्तीय विश्लेषण की एक तकनीक जिसे ''ड्यू पॉन्ट चार्ट'' कहते हैं, उसे अपनाया जाता है।

99. (B) सरकारी और अर्द्ध-सरकारी प्रतिभूतियों को उत्कृष्ट प्रतिभूतियों की श्रेणी में रखा जाता है।

100. (A) किसी फर्म की अल्पकालीन तरलता का सर्वश्रेष्ठ मापक चालू अनुपात है। $\frac{\text{चालू सम्पत्ति}}{\text{चालू दायित्व}}$ आदर्श चालू अनुपात 2 : 1 है।

101. (C) प्रथम बाजार में माँग वक्र $p_1 = 200 - q_1$

$TR_1 = p_1 q_1 = (200 - q_1) q$

$= 200 q_1 - q_1^2$

$$MR_1 = \frac{d(TR_1)}{dq} = 200 - 2q_1$$

द्वितीय बाजार में माँग वक्र $P_2 = 300 - q_2$

$TR_2 = p_2 q_2 = (300 - q_2) q_2$

$= 300 q_2 - q_2^2$

$$MR_2 = \frac{d(TR_2)}{dq_2} = 300 - 2q_2$$

लागत फलन $c(q_1 + q_2) = (q_1 + q_2)^2$

$$MC = \frac{\partial c}{\partial q} = \frac{\partial c}{\partial q_1} = \frac{\partial c}{\partial q_2}$$

$= 2(q_1 + q_2)$

सन्तुलन में, $MR_1 = MC$, $MR_2 = MC$

$200 - 2q_1 = 2(q_1 + q_2)$

$4q_1 + 2q_2 = 200$ ...(i)

$300 - 2q_2 = 2(q_1 + q_2)$

$2q_1 + 4q_2 = 300$ ...(ii)

समीकरण (i) & (ii) को हल करने पर

$4q_1 + 2q_2 = 200$

$2q_1 + 4q_2 = 300$

घटाने पर

$8q_1 + 4q_2 = 400$

$8q_1 + 16q_2 = 1200$

$-12q_2 = -800$

$$q_2 = \frac{800}{12} = 66{\cdot}67$$

समीकरण (ii) में q_2 का मान रखने पर

$$2q_1 = 300 - 4 \times \frac{800}{12}$$

$$= \frac{900-800}{3} = \frac{100}{3}$$

$$q_1 = \frac{100}{6} = 16.67$$

102. (B) एकाधिकारी के लिए लाभ अधिकतमीकारी माँग वक्र का वह भाग होगा जहाँ माँग की बिन्दु लोच इकाई से अधिक होगा जैसा रेखाचित्र में दिखाया गया है।

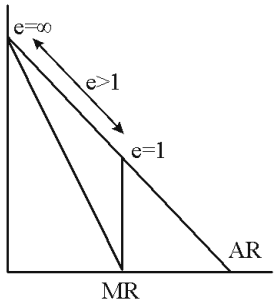

103. (A) स्थिर पैमाने के प्रतिफल के अन्तर्गत दीर्घकालीन औसत लागत वक्र (LAC) अल्पकालीन औसत लागत वक्रों के न्यूनतम बिन्दुओं का बिन्दु पथ होता है। जैसे—नीचे रेखाचित्र में दिखाया गया है—

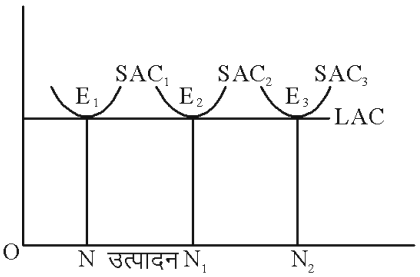

104. (B) सीमान्त उत्पाद वक्र, औसत उत्पाद वक्र को उच्चतम बिन्दु पर काटता है। कुल उत्पाद वक्र के उच्चतम बिन्दु पर सीमान्त उत्पाद शून्य रहता है।

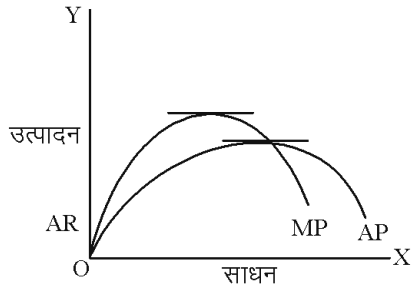

105. (B) माँगफलन $p_p = 18 - 38_d$

$$q_d = 6 - \frac{1}{3} p_d$$

पूर्तिफलन $= p_x = 6 + q_s$

प्रति 500 ग्राम पैकेट पर ₹ 2 सब्सिडी देने पर नई पूर्तिफलन सन्तुलन में

$$6 - \frac{1}{3} p_d = p's - 4$$

$$ps' = 4 + q_s$$

$$p_s^1 + \frac{1}{3} p_d = 6 + 4$$

सन्तुलन $p's = p_d$

$$\frac{4}{3} p_d = 10\, p_d = \frac{30}{4} = 7.5$$

$q = 7.5 - 4 = 3.5$

106. (A) 'अ' और 'ब' का पुराना अनुपात = 7 : 3

स का भाग = $\frac{3}{7}$

शेष भाग = $1 - \frac{3}{7} = \frac{4}{7}$

'अ' का भाग = $\frac{4}{7} \times \frac{7}{10} = \frac{28}{70}$

'ब' का भाग = $\frac{4}{7} \times \frac{3}{10} = \frac{12}{70}$

अतः नया अनुपात = $\frac{28}{70} : \frac{12}{70} = \frac{3}{7}$

$$= \frac{28:12:30}{70}$$

28 : 12 : 30 यानी 14 : 6 : 15

107. (C) रेखाचित्र के स्पेस 1 में वस्तु एवं मुद्रा बाजार में पूर्ति अधिक है, क्योंकि यह भाग IS वक्र के दाहिनी तरफ तथा LM वक्र के बायीं तरफ है जो सन्तुलन से ऊँची ब्याज दर को दिखाता है। ऊँची ब्याज दर पर निवेश माँग बचत की अपेक्षा कम होगी और मुद्रा की पूर्ति माँग की अपेक्षा अधिक होगी।

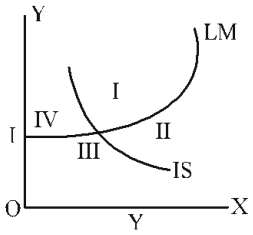

रेखाचित्र में	वस्तु बाजार	मुद्रा बाजार
स्पेस 1 में	$I < S, (C + I) < Y$	$M_d < MS$
II	$I < S, (C + I) < Y$	$M_d > MS$
III	$I > S, (C + I) > Y$	$M_d > MS$
IV	$I > S, (C + I) > Y$	$M_d < MS$

108. (A) परिवर्तनशील अनुपातों के नियमानुसार कुल उत्पादन वहाँ अधिकतम होगा, जहाँ की सीमान्त उत्पादकता शून्य हो जाती है। रेखाचित्र में OL श्रम लगाने पर श्रम की सीमान्त उत्पादकता शून्य हो जाती है और इस बिन्दु पर कुल उत्पादन (TP) वक्र अधिकतम होता है और इस पर कुल उत्पाद वक्र की स्पर्श रेखा क्षैतिज अक्ष के समानान्तर है।

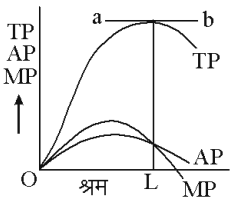

TP = कुल उत्पादन
AP = औसत उत्पादन
MP = सीमान्त उत्पादन

109. (C)

$$\text{कुल साख सृजन} = \frac{\text{प्राथमिक जमा}}{\text{नगद आरक्षी अनुपात}}$$

$$= \frac{1,000}{10/100} = 1000 \times \frac{100}{10}$$

= ₹ 10,000

110. (A) ATC = AVC + AFC
कुल लागत = कुल परिवर्तनशील लागत + कुल स्थिर लागत AC, AVC, MC वक्र U आकार के होते हैं।

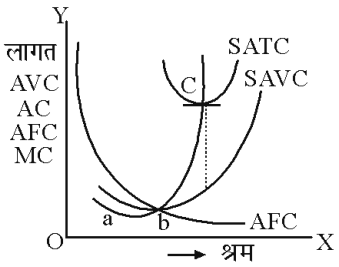

जबकि औसत स्थिर लागत वक्र अति परवलयाकार होता है।

111. (D) दीर्घकालीन विनियोगों का विक्रय कोषों का स्रोत माना जाता है, जबकि अल्पकालीन विनियोगों के विक्रय से कार्यशील पूँजी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, फलस्वरूप कोषों के स्रोत या प्रयोग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

112. (B) लागत लेखांकन, वित्तीय लेखांकन का सहायक है, वित्तीय लेखांकन की समस्याओं का समाधान करने के लिए ही लागत लेखांकन का उदय हुआ। स्पष्ट है कि यह वित्तीय लेखांकन के एक महत्वपूर्ण सहायक अंग के रूप में कार्य करता है।

113. (D) उद्देश्यों का निर्धारण किसी भी कार्य को सम्पन्न करने का एक महत्वपूर्ण चरण है। क्या करना है? इसका निर्धारण उद्देश्य के आधार पर ही किया जाता है। इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इसे प्राप्त करने के लिए नीतियाँ और तत्पश्चात् कार्यविधि तैयार की जाती है और यदि इसके सम्बन्ध में कोई समस्या उत्पन्न होती है तो उससे निपटने के लिए व्यूह रचना तैयार की जाती है।

114. (B) गैर व्यापारिक संस्था (NPO) द्वारा बनाया जाने वाला प्राप्ति एवं भुगतान खाता (Received and Payment A/c) प्रारम्भिक शेष (Opening Balance) से आरम्भ नहीं होता, जबकि व्यय खाता, लाभ-हानि खाता तथा वसूली खाता प्रारम्भिक शेष से प्रारम्भ होता है।

115. (D) करारोपण के पहले शुद्ध लाभ की गणना निम्न प्रकार से की जा सकती है—
Increase in retained earning
(संचित आय में वृद्धि) = ₹ 6,00,000
इस राशि में प्रारंभिक व्यय जोड़ने पर प्राप्त राशि = ₹ (6,00,000 + 10,000)
= ₹ 6,10,000
अब इस राशि में सामान्य आरक्षित कोष हस्तान्तरण जोड़ने पर राशि = ₹ (6,10,000 + 10,000) = ₹ 6,20,000

116. (A) पूँजी संचिति खाते में हस्तान्तरित की जाने वाली राशि
= (6 + 5.5 × 8) – (10 × 8)
= (11.5 × 8) – (10 × 8)
= 92 – 80 = ₹ 12

117. (B) पूँजी संचय = ₹ 3000
फर्म से प्राप्त कुल सम्पत्ति एवं दायित्व का अन्तर
= (25,000 + 15,000 + 10,000 + 15,000 – 8000) = (65,000 – 8,000) = ₹ 57,000
जबकि फर्म को देय प्रतिफल = ₹ 54,000
पूँजी संचय = प्राप्त सम्पत्ति का शुद्ध मूल्य – देय प्रतिफल = ₹ (57,000 – 54,000)
= ₹ 3000

118. (B) जब देश की सरकार अल्पकालिक व दीर्घकालिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विभिन्न माध्यमों से ऋण लेती है, तो उसे सरकारी ऋण कहते हैं। निम्नलिखित प्रपत्रों व माध्यमों से सरकार ऋण प्राप्त करती है—
1. भविष्य निधि
2. राष्ट्रीय बचत पत्र
3. दीर्घकालिक सरकारी बॉण्ड
जबकि जीवन बीमा पत्र राष्ट्रीय ऋण नहीं बल्कि एक प्रकार का निवेश है।

119. (D) लेखांकन की द्विपक्षीय स्वरूप की अवधारणा के कारण व्यावसाय में पूँजी व दायित्व का मूल्य सम्पत्तियों के मूल्य के बराबर होता है।
किसी व्यावसायिक संस्था का शुद्ध मूल्य ज्ञात करने के लिए कुल सम्पत्तियों में से कुल दायित्वों को घटा देते हैं। अर्थात्
शुद्ध मूल्य = कुल सम्पत्ति – कुल दायित्व
or Net Value = Total Assets – Total Liabilities

120. (D) दोहरा लेखा प्रणाली (Double Entry System) लेखे की ऐसी विधि है जिसमें सौदों के दोनों रूपों का लेखा किया जाता है। इसके अन्तर्गत लेखा करते समय सौदों को मुख्यत: दो प्रकार के खातों में वर्गीकृत किया जाता है—
A- व्यक्तिगत खाता (Personal A/c)
B-अव्यक्तिगत खाता (Impersonal A/c)
अव्यक्तिगत खातों की दो श्रेणी हैं—
(i) वास्तविक खाता (Real A/c)
(ii) नाममात्र खाता (Nominal A/c)

121. (A) नये साझेदार के प्रवेश पर, सम्पत्ति के मूल्य में वृद्धि को लाभ-हानि समायोजन खाता (P & L Adjustment A/c) में क्रेडिट किया जाता है, जबकि मूल्य में कमी को इस खाते में डेबिट किया जाता है।

122. (C) प्रबन्ध को परिभाषित करते हुए हैरोल्ड कुण्टज महोदय ने लिखा है कि "औपचारिक समूह के माध्यम से तथा उसके द्वारा कार्य सम्पादित करने की कला ही प्रबन्धन है।"

123. (A) जब एक फर्म का उत्पादन वृद्धिमान (बढ़ता है) होता है, तो उसकी औसत स्थिर लागत (AFC) लगातार ह्रासमान (गिरती) होती है।
कुल स्थिर लागत को उत्पादित इकाइयों द्वारा भाग देने पर जो भजनफल प्राप्त होगा वही प्रति इकाई औसत स्थिर लागत होगी।

$$AFC = \frac{TFC}{Q}$$

अल्पकाल में कुल स्थिर लागत अपरिवर्तनीय होती है। जैसे-जैसे उत्पादन की मात्रा बढ़ती जाएगी प्रति इकाई पर लगने वाली औसत स्थिर लागत (AFC) क्रमश: कम होती जाएगी। इस प्रकार AFC का वक्र अतिपरवलय (Rectangular hyperbola) होगा, जिसके प्रत्येक बिंदु पर कुल स्थिर लागत (TFC) स्थिर बनी रहेगी।

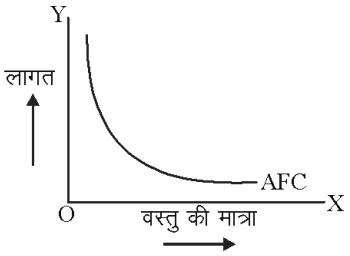

124. (D) कुल सम्पत्तियाँ = ₹ 40,000
देनदारियाँ = ₹ 30,000
तो लेनदारों को भुगतान की राशि = ₹ 30,000 × 0.60 = ₹ 18,000
अत: वसूली का लाभ/हानि
= ₹ 40,000 – ₹ 18,000 = ₹ 22,000
(लाभ)

125. (B) पूँजीगत व्यय से अभिप्राय ऐसे व्ययों से है जो स्थायी उद्देश्यों हेतु किये गये हैं और जिनसे एक से अधिक लेखा वर्षों तक ज्ञान सृजन में सहायता मिलती है। पूँजी व्यय में निम्न मदें शामिल हैं—
- फर्नीचर, मशीन का क्रय, ट्रक क्रय आदि
- स्थायी सम्पत्तियों की स्थापना व्यय
- पुरानी सम्पत्तियों को कार्य योग्य बनाने हेतु किये गये व्यय
- कॉपीराइट, ट्रेड मार्क, ख्याति आदि।

९९